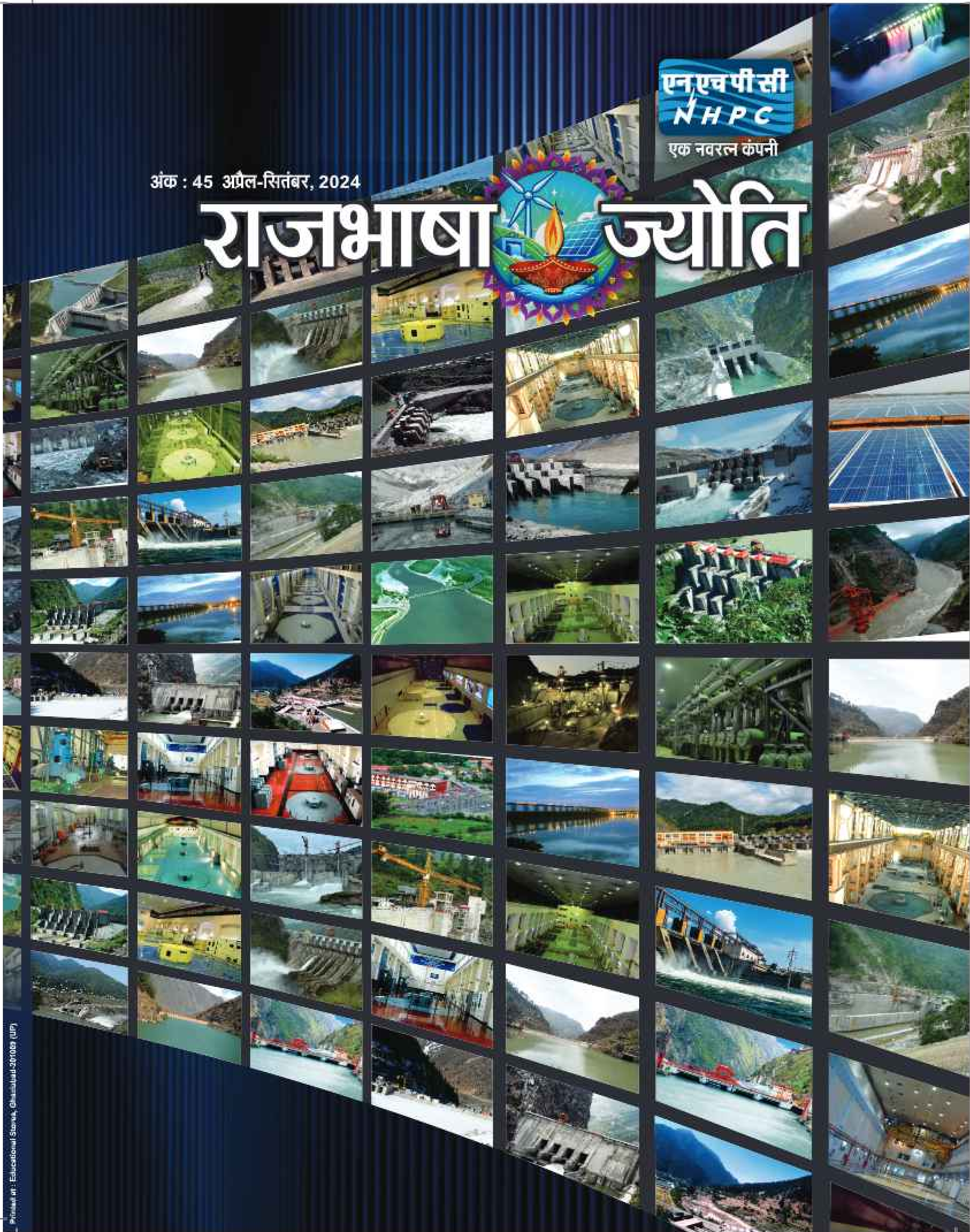

एन एच पी सी
NHPC
एक नवरत्न कंपनी

अंक : 45 अप्रैल-सितंबर, 2024

राजभाषा ज्योति

Printed at : Educational Stores, Ghaziabad-201003 (UP)

नवरत्न में
एक और रत्न
एनएचपीसी
NHPC
अब
नवरत्न
कंपनी है
एनएचपीसी
ने प्राप्त किया प्रतिष्ठित नवरत्न का दर्जा
भारत की सबसे बड़ी जलविद्युत कंपनी ने प्रतिष्ठित नवरत्न का दर्जा प्राप्त किया।
विश्व की शीर्ष दस जलविद्युत कंपनियों की श्रेणी में शामिल होने की दिशा में तेजी से अग्रसर हो रहे एनएचपीसी की विकास यात्रा वर्ष 1981-82 में 180 मेगावाट की परियोजना चालू करने से हुई और अब यह 100% हरित ऊर्जा उत्पादित करने वाली 7,144 मेगावाट की प्रभावशाली कंपनी बन गई है।
एनएचपीसी ने अपनी स्थापना के बाद से ही निरंतर वित्तीय मजबूती और निष्पादन का प्रदर्शन किया है।
नवरत्न का दर्जा प्राप्त करने से एनएचपीसी को और भी अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचने, भविष्य के लिए नवाचार और दीर्घकालिक ऊर्जा समाधान को आगे बढ़ाने की शक्ति मिली है।
एनएचपीसी लिमिटेड
(भारत सरकार का एक नवरत्न उद्यम)
https://www.nhpcindia.com
हमसे जुड़ें:
हरित ऊर्जा में निहित शक्ति

एक नवरत्न कंपनी

एक नवरत्न कंपनी

अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक
एनएचपीसी लिमिटेड

संदेश

निगम की गृह पत्रिका 'राजभाषा ज्योति' के माध्यम से आप सभी के साथ संवाद करना सुखद एवं मनभावन अनुभूति है। यह अनुभूति और अधिक गौरवान्वित इसीलिए भी है क्योंकि अब एनएचपीसी लिमिटेड एक नवरत्न कंपनी के रूप में सुशोभित है। देश की अग्रणी व प्रतिष्ठित जल विद्युत कंपनी को यह नवरत्न का सम्मान दिलाने में हमारे पूर्व एवं वर्तमान प्रबंधन, शीर्ष नेतृत्व और आप सभी कार्मिकों का विशेष योगदान है। इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं।

निगम द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों ने सार्वजनिक उपक्रमों और केंद्र सरकार के कार्यालयों की बीच हमारी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। मेरा मानना है कि हिंदी केवल कार्यालीन कार्य और भाषा मात्र तक सीमित नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का वृहत विषय है। हम सभी को जल विद्युत उत्पादन संबंधी अपने मूल कार्यों के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी उत्कृष्ठता बनाए रखनी है।

मुझे यह देखकर प्रसन्नता होती है कि निगम के सभी कार्मिक अपना कार्यालयीन कार्य हिंदी में कर रहे हैं और हिंदी में काम करने के लिए पूरे निगम में सकारात्मक वातावरण बना हुआ है। हमारे लिए हिंदी में शत-प्रतिशत कार्य करने का लक्ष्य है, जिसे हम अवश्य प्राप्त करेंगे। मुझे विश्वास है कि राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में हम अपना उत्कृष्टतम प्रदर्शन जारी रखेंगे।

मैं 'राजभाषा ज्योति' के नवीनतम अंक के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ और आशा करता हूँ कि विगत अंकों के भांति यह अंक भी निगम की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए सशक्त मंच प्रदान करेगा।

शुभकामनाओं सहित,

रा० कु० चौधरी

(राज कुमार चौधरी)

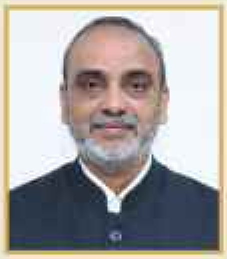

एक नवरत्न कंपनी

निदेशक (कार्मिक)
एनएचपीसी लिमिटेड

संदेश

पूरे विश्व में हमारा देश अनेकता में एकता की अनुपम मिसाल है। भारत न सिर्फ सांस्कृतिक विविधताओं अपितु भाषाई दृष्टि से भी विविधताओं का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश की भाषिक विविधताओं को एक सूत्र में पिरोने का कार्य केवल 'हिंदी' करती है। स्वतंत्रता आंदोलन के संघर्षशील समय में देश को ऐक्य की भावना में बांधने का महत्वपूर्ण कार्य हिंदी भाषा ने ही किया था। वर्तमान में भी, पूरे देश की संपर्क भाषा के रूप में हिंदी सशक्त हो रही है।

निगम की अधिकतर परियोजनाएं ऐसे सुदूर क्षेत्रों में स्थित हैं जहां स्थानीय निवासियों की मातृभाषा हिंदी से इतर है। ऐसे हिंदीतर भाषाई स्थानों पर किसी भी परियोजना को विकसित करना, वह भी विशेष रूप से जल विद्युत परियोजना, हमेशा से चुनौतीपूर्ण रहा है। परियोजना के शुरुआती समय से लेकर कमीशनिंग की समयावधि तक परियोजना क्षेत्र में निगम को जल विद्युत विकास के साथ-साथ अन्य विभिन्न लाभकारी कार्य स्थानीय प्राधिकरण व निवासियों के सहयोग से निष्पादित करने होते हैं। उस दौरान हम सभी के बीच संवाद स्थापित करने और एक दूसरे को जोड़ने का कार्य केवल हिंदी भाषा ही करती है। आज के वैज्ञानिक एवं प्रतिस्पर्धात्मक युग में भी, हिंदीतर भाषाई क्षेत्रों में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की उपस्थिति, इस भाषा की व्यापकता एवं सुग्राह्यता की पुष्टि करती है।

मेरा मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी सृजनात्मक क्रियाकलाप में भी उपयुक्त समय देना चाहिए। अपने दैनिक कार्यों के साथ-साथ रचनात्मक गतिविधियों में भाग लेने से हमें मानसिक शांति का अनुभव होता है। निगम के सभी कार्मिकों को 'राजभाषा ज्योति' ऐसा सजीव मंच प्रदान करती है जिसके माध्यम से वे अपने भीतर की सृजनात्मकता को उजागर कर सकें।

मुझे विश्वास है कि 'राजभाषा ज्योति' का यह अंक विविधतापूर्ण विषयों के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन में भी उपयोगी रहेगा। इस अंक के प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों और राजभाषा विभाग की पूरी टीम को हार्दिक शुभकामनाएं।

(उत्तम लाल)

एक नवरत्न कंपनी

कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन)

एनएचपीसी लिमिटेड

संदेश

भाषा किसी भी देश की समृद्धि एवं विकासशीलता का मूल आधार होती है। जिस देश ने अपनी भाषा का विज्ञान और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में जितना अधिक प्रयोग किया है, आज वही देश विकसित देशों की सूची में स्थान बनाए हुए हैं। किसी राष्ट्र की पहचान तभी मजबूत होती है जब उस देश की भाषा सुदृढ़, व्यापक और समृद्ध हो। प्रसिद्ध साहित्यकार व हिंदी भाषा के प्रणेता भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लिखा है- 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति का मूल।' यानि कि अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है।

हमारा निगम राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में निरंतर नई पहल कर नए आयामों को स्थापित कर रहा है। निगम के कार्मिकों द्वारा उत्साहपूर्वक सभी राजभाषा संबंधित गतिविधियों में भाग लेना दर्शाता है कि पूरे निगम में राजभाषा हिंदी के प्रति सकारात्मक वातावरण है। यद्यपि राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में हमें कई सम्मान व उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं किंतु अभी भी हमें उत्कृष्ठता की ओर निरंतर प्रयासशील रहना है। यह सत्य है कि किसी भी प्रकार के सम्मान एवं उपलब्धियां हमारे लिए और अधिक जिम्मेदारियां ले कर आते हैं। मुझे विश्वास है कि हम प्रत्येक उत्तरदायित्व का सफलतापूर्वक निर्वहन करते हुए हर क्षेत्र में अग्रणी रहेंगे।

मेरा मानना है कि मूल लेखन में जितनी सरल व सहज हिंदी का प्रयोग कर हम अपनी बात स्पष्टता से संप्रेषित कर सकते हैं वैसी संप्रेषणीयता अनुवाद के माध्यम से नहीं आ पाती। इसीलिए मेरा अनुरोध है कि सभी कार्मिक अनुवाद के स्थान पर मूल रूप से कार्यालयीन कार्य हिंदी में ही करें, क्लिष्ट हिंदी के प्रयोग से बचा जाए।

मैं 'राजभाषा ज्योति' के 45वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं देता हूँ और आशा करता हूँ कि आपकी रचनाओं एवं लेखों के माध्यम से पत्रिका का नवीनतम अंक और अधिक पठनीय व संग्रहणीय होगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(लूकस गुड़िया)

संपादकीय....

विश्व भर में फैले पेशेवर भारतीय न सिर्फ अपनी तकनीकी दक्षता को साबित कर रहें हैं बल्कि साथ ही अपने साथ भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा की भी संपूर्ण विश्व में सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। हालांकि विश्वभर में हिंदी के प्रचार-प्रसार का इतिहास पुराना है। ब्रितानी साम्राज्य के दौरान जिन देशों में भारतीयों को ले जाया गया था वहां हिंदी ने अपने पैर पहले ही मजबूत कर लिए थे। किन्तु आधुनिक समय में भारतीय पेशेवर विदेशों में आर्थिक रूप से सम्पन्न व तकनीकी रूप से सक्षम हो कर बस रहे हैं, इसीलिए भारतीय भाषाओं और संस्कृति के सच्चे संवाहक के रूप में वे भारतीय सभ्यता के राजदूत हैं। वर्तमान में, न सिर्फ प्रवासी भारतीयों ने बल्कि देश के शीर्ष नेतृत्व ने भी हिंदी भाषा को वैश्विक मंचों पर यथोचित सम्मान दिलवाया है। अब समय आ गया है कि भारत में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का साहित्य भी हिंदी भाषा में मूल रूप से लिखा जाए। इसी क्रम में, हिंदी दिवस 2024 के दिन गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा विभाग की परियोजना 'भारतीय भाषा अनुभाग' की शुरुआत की गई है। उत्तम तकनीकी व प्रौद्योगिकी साहित्य को भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराने की दिशा में ये महत्वपूर्ण कदम है।

निगम के कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करने वाली 'राजभाषा ज्योति' का नया अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसमें अग्रलेख के रूप में 'भारत के जल संसाधन नीति की नींव और बाबा साहब डा. भीम राव आंबेडकर' लेख प्रकाशित किया है जिसमें देश में जल विद्युत उत्पादन, नदियों पर बनने वाली बहुउद्देशीय परियोजनाओं की संकल्पना को साकार करने में डा. भीम राव आंबेडकर के योगदान का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। गत वर्ष तीस्ता नदी में आई प्रलयकारी बाढ़ के प्रभाव का उल्लेख 'तीस्ता नदी की बाढ़-प्राकृतिक आपदा एवं एनएचपीसी परियोजनाओं पर इसका प्रभाव' नामक लेख में दिया गया है। पत्रिका के इस अंक में विविध तकनीकी लेख प्रकाशित किए गए हैं जो तकनीकी क्षेत्र में मौलिक हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। इसके अतिरिक्त, पत्रिका के गत अंकों की भांति इस अंक में भी पर्यटन, पर्व आदि जैसे विभिन्न विषयों पर विविध प्रकार की ज्ञानवर्धक और रोचक सामग्री प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है।

हमारे निगम की गृह पत्रिका **'राजभाषा ज्योति'** के माध्यम से निगम में रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहन मिलने के साथ-साथ सभी के लिए उपयोगी जानकारी सुगमता से उपलब्ध होती है। मुझे विश्वास है कि यह अंक विविधतापूर्ण विषयों के साथ-साथ राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में सार्थक भूमिका अदा करेगा। आशा है कि सुधी पाठकों को इस अंक में प्रकाशित सामग्री पसंद आएगी। इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी, ज्ञानवर्धक और रोचक बनाने के लिए आपके सुझावों और प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

(प्रिय रंजन)

महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रभारी (राजभाषा)

एनएचपीसी NHPC
एक नवरत्न कंपनी

राजभाषा ज्योति

अंकः 45 अप्रैल – सितंबर, 2024

राजभाषा विभाग । एनएचपीसी लिमिटेड

मुख्य संरक्षक
श्री राज कुमार चौधरी
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री उत्तम लाल
निदेशक (कार्मिक)

परामर्शदाता
श्री लूकस गुड़िया
कार्यपालक निदेशक
(मानव संसाधन)

संपादक
श्री प्रिय रंजन
महाप्रबंधक (मानव संसाधन) एवं
प्रभारी (राजभाषा)

उप संपादक एवं साज–सज्जा
श्री जितेन्द्र प्रताप सिंह
प्रबंधक (राजभाषा)

पत्राचार का पता
राजभाषा विभाग
एनएचपीसी लिमिटेड
सेक्टर-33, फरीदाबाद, हरियाणा-121003
ई-मेलः rajbhasha-co@nhpc.nic.in

'राजभाषा ज्योति' पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार हैं।
एनएचपीसी प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

1 **इतिहास के झरोखे से**
- भारत के जल संसाधन नीति की नींव और बाबा साहब डा. भीम राव आंबेडकर 7

2 **विविध आलेख**
- भारत में सामाजिक परिवर्तन 10
- गौवंश और मानव अस्तित्व 43
- घनघोर घटा 44
- पीढियां... नई और पुरानी 48
- ओवर पेरेंटिंग 50
- मध्यस्थता: न्यायिक प्रणाली - न्यायशास्त्र के लिए सहायक संरचना 54
- ग्लोबल वार्मिंग 56
- गुलाबी परिधान वाली 'सबला' 35

3 **ऊर्जा समृद्धि**
- एनएचपीसी - ईएसजी रिपोर्टिंग, एक उपलब्धिपूर्ण सफर 13
- महीन सौर सेल - ऊर्जा का नया स्रोत 27

4 **सूचना प्रौद्योगिकी**
- चैट जीपीटी संक्षिप्त इतिहास एवं उसके साथ हमारा सफर 17

5 **स्थायी स्तंभ**
- राजभाषा नियम/प्रावधान 19
- पारिभाषिक शब्दावली 21
- हिंदी साहित्य 22
- अंक के साहित्यकार 60

6 **राजभाषा गतिविधियां**
- राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियां 32-33

7 **संस्मरण**
- तीस्ता नदी की बाढ़ - प्राकृतिक आपदा एवं एनएचपीसी परियोजनाओं पर इसका प्रभाव 23
- एक महिला सिविल इंजीनियर का 'साइट अनुभव' 46
- भाषा का महत्व 62

8 **तकनीकी आलेख**
- भूविज्ञान का अनुप्रयोग : सिक्किम हिमालय की भूवैज्ञानिक चुनौतियां और उनका शमन 37

9 **पर्यटन**
- बिजली महादेव 41
- इंदिरा सागर पंप भंडारण योजना एवं इसके निकटवर्ती दर्शनीय स्थल 51

10 **राज्य व पर्व**
- उत्तराखंड राज्य का लोक पर्व - हरेला 34

11 **काव्य धारा**
- भ्रष्टाचार उन्मूलन 16
- हे भ्रष्टाचार, तू हाहाकार 26
- यादों की अलमारी 45
- देखो... इंसानों की माया 49
- एक नया जीवन 58
- भ्रष्टाचार का काला सूरज 59
- ईमानदार का परिचय 59

12 **रिपोर्ट**
- निगम मुख्यालय में हिंदी पखवाडा का आयोजन 64

भारत के जल संसाधन नीति की नींव और बाबा साहब डा. भीम राव आंबेडकर

मनोज कुमार, समूह वरिष्ठ प्रबंधक (विद्युत)
सलाल पावर स्टेशन, रियासी (जम्मू व कश्मीर)
विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर 20 जुलाई, 1942 से लेकर, 29 जून 1946 तक वाइसराय की कार्यकारी परिषद् के श्रम सदस्य थे। चार वर्ष और ग्यारह माह की इस अवधि में इस दूरदर्शी नेता ने राष्ट्र निर्माण की दिशा में बहुत कुछ किया। उनकी 133 वीं जयंती (वर्ष 2024) पर, इस दौर में उनके कार्यों को याद किया जा सकता है, जिसके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं।

देश की जल नीति बनाने तथा जल संसाधन विकास के लिए बहुत सारे शास्त्रज्ञों तथा अभियंताओं ने अपना योगदान दिया है। इन विभूतियों में सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरया, बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव आंबेडकर; राय बहादुर डॉक्टर ए.एन. खोसला; डॉक्टर के.एल. राव; डॉक्टर मेघनाद साहा; मान सिंह, विशेष अभियंता (सिंचाई), बंगाल सरकार; ए करीम, उप मुख्य अभियंता (बिहार सिंचाई विभाग); एच.सी. प्रयिर, सचिव; बी एल सबरवाल; जे के रसेल; डब्ल्यू. एल. व्हर्दवीन, डी.एल. मजुमदार; सर इगलिस आदि का जल संसाधन विकास के लिए विशेष योगदान रहा है।

बाबा साहब ने 20 जुलाई 1942 को वाइसराय के मंत्रिमंडल में श्रम मंत्री के रूप में कार्य ग्रहण किया। श्रम विभाग के साथ-साथ उनको सिंचाई और विद्युत शक्ति विभाग का भी कार्यभार सौंपा गया था। तब डॉक्टर आंबेडकर ने युद्धोत्तर पुनर्निर्माण समिति द्वारा अपनी जल संसाधन तथा बहुउद्देशीय नदी घाटी विकास की नीति अपनाई। इस समिति में केंद्र सरकार प्रांतीय सरकार, रियासतों की सरकारें तथा व्यापार, उद्योग और वाणिज्य के प्रतिनिधि भी शामिल थे।

डॉक्टर आंबेडकर के जल संवर्धन के बारे में विचार उल्लेखनीय तथा सराहनीय थे। बाबा साहब कहते थे, 'यह सोचना गलत है कि पानी की बहुतायत कोई संकट है, मनुष्य को पानी की बहुतायत के बजाय पानी की कमी के कारण ज्यादा कष्ट भोगने पड़ते हैं। कठिनाई यह है कि प्रकृति जल प्रदान करने में केवल कंजूसी ही नहीं करती, कभी सूखे से सताती है तो कभी तूफान ला देती है। परंतु इससे इस तथ्य पर कोई अंतर नहीं पड़ता कि जल एक संपदा है। इसका वितरण अनिश्चित है। इसके लिए हमें प्रकृति से शिकायत नहीं करनी चाहिए बल्कि जल संरक्षण करना चाहिए।'

बाबा साहब कहते थे कि ओडिशा को भी वही तरीका अपनाना चाहिए जो नदियों की समस्या से निपटाने के लिए अमेरिका ने अपनाया है और वह तरीका है पानी का स्थायी भंडार रखने के लिए कई जगह नदियों पर बाँध बनाना। ऐसे बाँध सिंचाई के साथ-साथ अन्य कई लक्ष्य भी साधते हैं।

इस नीति को अपनाने के लिए श्रम विभाग ने दो तकनीकी संस्थानों की नवंबर 1944 में केंद्रीय तकनीकी विद्युत मंडल (सीटीबीटी) तथा 5 अप्रैल 1945 में केंद्रीय जलमार्ग सिंचाई तथा नौचालन आयोग (सीडबल्यूआईएनसी) की स्थापना की। केंद्रीय विद्युत मंडल को देश के आंकड़े संकलित करना, सर्वे संचालित करना और विद्युत योजना तैयार करने जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य सौंपे गए। इससे पूरे देश में विद्युत शक्ति पूर्ति, नियोजन, आवंटन तथा कार्यान्वयन जैसी प्रक्रिया को बढ़ावा मिला। आज के 'केंद्रीय जल आयोग' को जल संसाधन कार्य, तथ्य संकलन, नियोजन, समन्वयन तथा कार्यान्वयन करने की भूमिका सौंपी, जल संसाधन के नियोजनबद्ध संवर्धन करने का अहम काम भी सौंपा गया। इस

तरह डॉ. आंबेडकर, भारत की जल संसाधन एवं नदी परिवहन नीति के निर्माता भी हैं।

20 जुलाई, 1942 से लेकर, 29 जून 1946 के बीच, जब डॉ. आंबेडकर वाइसराय की कार्यकारी परिषद् के सदस्य थे, उन्होंने देश के जल संसाधनों का सभी के हित में समुचित दोहन करने के लिए एक नई जल एवं विद्युत नीति का खाका तैयार किया था।

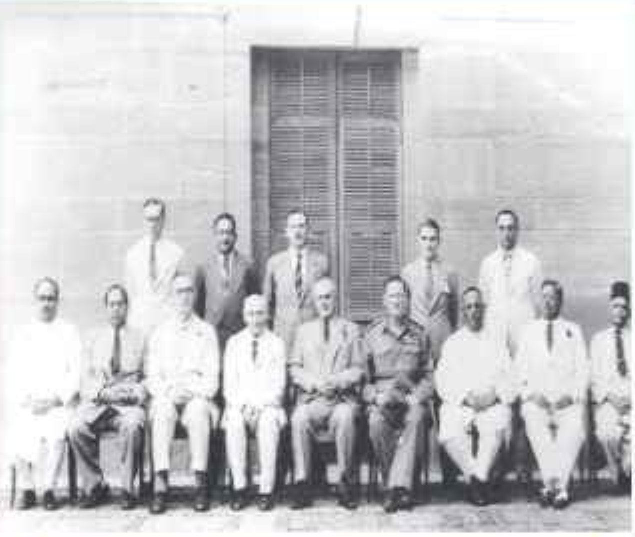

वाइसराय की कार्यकारी परिषद् के सदस्य अन्य सदस्यों के साथ आंबेडकर

उस समय बिहार-बंगाल में 'दुःख का मूल' कहीं जाने वाली दामोदर नदी वस्तुतः भारत की राष्ट्रीय समस्या के रूप में उभरकर आ रही थी। बाढ़ की समस्या बहुत गंभीर थी। अनाज की कमी तथा यातायात की समस्या खड़ी हुई थी। 17 जुलाई 1943 को दामोदर नदी में आई बाढ़ के कारण गंभीर संकट उत्पन्न हो गया था। इस बाढ़ से 70 से अधिक गांव प्रभावित हुए थे। 18 हजार मकान नष्ट हो गए थे। इस नदी की बाढ़ में मानव जीवन की हानि बहुत हुआ करती थी।

अतः बिहार में दामोदर घाटी में बाढ़ नियंत्रण के उपायों की योजना बनाने के लिए गठित निगम के मुखिया के रूप में एक मुख्य अभियंता की नियुक्ति की जानी थी। वाइसराय वेवेल चाहते थे कि इस पद पर एक ब्रिटिश विशेषज्ञ को नियुक्त किया जाए, जो मिस्र के असवान बाँध परियोजना में सलाहकार था। परंतु, डॉ. आंबेडकर का मानना था कि इस काम के लिए किसी ऐसे अमेरिकी इंजीनियर की सेवाएं हासिल की जानी चाहिए, जिसे टेनेसी वैली अथॉरिटी की परियोजनाओं में काम करने का अनुभव हो। उनका तर्क था कि चूंकि ब्रिटेन में एक भी बड़ी नदी नहीं है इसलिए वहां के इंजीनियरों को बड़े बाँधों के निर्माण का कोई अनुभव नहीं हो सकता।

अपनी परिषद् के इस सदस्य के निर्भयतापूर्वक और अत्यंत प्रभावशाली ढंग से सामने रखे गए मज़बूत तर्कों ने वाइसराय को चुप कर दिया और डॉ. आंबेडकर की बात मान ली गई। डॉ. आंबेडकर ने दामोदर घाटी निगम में अमेरिका के डब्ल्यू.एल. वूरदुइन नामक सज्जन की नियुक्ति की। वे इस निगम के पहले तकनीकी विशेषज्ञ थे और उन्हें टेनेसी वैली अथॉरिटी में काम करने का व्यापक अनुभव था। दामोदर घाटी निगम का मुखिया नियुक्त होते ही वूरदुइन ने अगस्त, 1944 में अपना 'प्रिलिमिनरी मेमोरेंडम ऑन द यूनिफाइड डेवलपमेंट ऑफ दी दामोदर वैली' प्रस्तुत कर दिया।

वर्ष 1944-46 की अवधि में श्रम विभाग ने जिन नदी घाटी परियोजनाओं को लागू करने पर सक्रियता से विचार किया, उनमें दामोदर, सोन, महानदी (हीराकुंड), कोसी, चम्बल व दक्कन की नदियों से संबंधित परियोजनाएं शामिल थीं।

इंडियन इनफार्मेशन की 6 अप्रैल 1946 की रिपोर्ट के अनुसार, "टेनेसी वैली अथॉरिटी के प्रमुख इंजीनियरों में से दो – रोस एम. रिएगेल और फ्रेड सी. श्लेमेर – भारत पहुंच चुके हैं और वे मैथों, अल्यार और पंचेट हिल परियोजनाओं के क्रियान्वयन के लिए सेंट्रल टेक्निकल पावर बोर्ड द्वारा बनाई जा रही योजनाओं के संबंध में अपनी सलाह देंगे। दोनों लगभग आठ सप्ताह तक भारत में रुके और उनकी सेवाओं को टेनेसी वैली अथॉरिटी द्वारा अमरीकी विदेश विभाग की सहमति से, भारत सरकार को उपलब्ध करवाया गया।"

दिल्ली में डॉ. आंबेडकर की अध्यक्षता में 25-26 अप्रैल 1946 को आयोजित बैठक, जिसमें केंद्र और बंगाल और बिहार सरकारों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था, ने अनुशंसा की कि तिलैया बाँध

वाइसराय की कार्यकारी परिषद् के

(जो दामोदर नदी पर पहला बाँध था) का निर्माण कार्य शुरू किया जाए। इस बाँध की लागत 55 करोड़ रुपए थी।

कार्यकारी परिषद् के श्रम सदस्य के रूप में डॉ. आंबेडकर ने 15 नवंबर, 1943 और 8 नवंबर, 1945 के बीच पांच संगोष्ठियों को संबोधित किया। इनमें से दो दामोदर घाटी परियोजना (3 जनवरी और 23 अगस्त, 1944 को कलकत्ता में), एक उड़ीसा की नदियों पर बहुउद्देशीय परियोजनाओं (8 नवंबर, 1945 को कटक में) और दो विद्युत उर्जा (25 अक्टूबर, 1943 और 2 फरवरी, 1945) पर केंद्रित थीं।

वर्ष 1945 में स्थापित केंद्रीय जल, सिंचाई व जल परिवहन आयोग को अब केंद्रीय जल आयोग कहा जाता है। जल शक्ति मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत यह आयोग, सरकार की राष्ट्रीय जल नीति का निर्धारण और उसके कार्यान्वयन का पथ-प्रदर्शन भी करता है।

इन योजनाओं से एक साथ कई लक्ष्य हासिल किए जाने थे, जिनमें शामिल थे बाढ़ नियंत्रण, सिंचाई, जल परिवहन, घरेलू उपयोग के लिए जल आपूर्ति व जल विद्युत उत्पादन, दामोदर घाटी परियोजना और हीराकुंड बहुउद्देशीय परियोजना हमें इस महान दूरदृष्टा की याद दिलाते हैं।

राष्ट्र निर्माण में डॉ. आंबेडकर के इस योगदान को देश नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता। अंतरराज्यीय जल विवाद अधिनियम, 1956 और रिवर बोर्ड्स अधिनियम, 1956 प्रमाणित करते हैं कि डॉ. आंबेडकर कई राज्यों में बहने वाली नदियों से संबंधित मुद्दों पर कितने सजग थे। जल विवाद अधिनियम की भूमिका में कहा गया है कि इसका उद्देश्य, अंतरराज्यीय नदियों और नदी घाटियों के पानी से संबंधित विवादों का निपटारा करना है।

सदस्य बतौर लोगों से चर्चा करते आंबेडकर

डॉ. आंबेडकर का जल संसाधन के क्षेत्र में क्या योगदान था, उसका सार इस तरह से है -

पहला - भारत में जल और विद्युत संसाधनों के विकास के संबंध में एक स्पष्ट अखिल-भारतीय नीति का विकास; दूसरा - केंद्रीय जल, सिंचाई व जल परिवहन आयोग और सेंट्रल टेक्निकल पावर बोर्ड, जिसे अब केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण कहा जाता है, का गठन।

ये दोनों संस्थान केंद्रीय स्तर पर राज्यों को ऐसी प्रशासनिक और तकनीकी सहायता उपलब्ध करवाते थे, जिससे वे अपने-अपने क्षेत्रों में सिंचाई और विद्युत संसाधनों का विकास कर सकें; तीसरा- विभिन्न क्षेत्रों में नदियों के समन्वित विकास के लिए नदी घाटी प्राधिकरणों या निगमों की अवधारणा का विकास; चौथा - भारत में पहली बार नदियों के जलग्रहण क्षेत्र के बहुउद्देशीय विकास की अवधारणा की प्रस्तुति, संविधान की 74वीं प्रविष्टि में संशोधन कर उसके कुछ हिस्से को केंद्रीय सूची का भाग बनाना और संविधान में अनुच्छेद 262 जोड़ना, जो अंतरराज्यीय नदियों या नदी घाटियों से संबंधित विवादों के निपटारे के संबंध में है; और पांचवा - दामोदर, सोन और महानदी घाटी परियोजनाओं की शुरुआत। ये सभी आज भी देश की महत्वपूर्ण नदी घाटी परियोजनाओं में शामिल हैं। ❐

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।

- मैथिलीशरण गुप्त

भारत में सामाजिक परिवर्तन

श्रीमती मृदुल सिंह, पीजीटी (समाजशास्त्र)
धर्मपत्नी श्री अमिताभ सिंह, प्रबंधक (राजभाषा)
राजभाषा विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

अक्सर यह कहा जाता है कि परिवर्तन ही समाज का एकमात्र अपरिवर्तनीय पहलू है। सामाजिक परिवर्तन एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग सामाजिक प्रक्रियाओं, सामाजिक प्रतिमानों, सामाजिक अंतःक्रिया या सामाजिक संगठन के किसी भी पहलू में परिवर्तन या संशोधन का वर्णन करने के लिए किया जाता है। जहां तक सामाजिक परिवर्तन की दिशा या मूल्यों का सवाल है तो 'सामाजिक परिवर्तन' शब्द अपने आप में कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं रखता। सामाजिक परिवर्तन देश, काल व परिस्थिति के अनुसार विभिन्न रूपों में देखा जा सकता है और जिसके कारक क्रांति, अनुकूलन, समायोजन, विकास या प्रगति भी हो सकते हैं। यह उल्लेखनीय है कि 'परिवर्तन' शब्द किसी सामाजिक घटना में कुछ समय तक देखी गई अच्छी या बुरी भिन्नता भी हो सकती है।

भारत में सामाजिक परिवर्तन की प्रवृत्तियां और प्रक्रियाएं

संस्कृतीकरण: जाति व्यवस्था भारत की खासियत रही है, लेकिन सामाजिक असमानता सभी प्रकार के मानव समाज में व्याप्त है। धन, बुद्धि, शक्ति और प्रतिष्ठा का किसी भी सामाजिक समूह में समान रूप से विस्तार नहीं पाया जाता है। मानव समाज में सामाजिक स्तर सार्वभौमिक सत्य है। समाजशास्त्री सोरोकिन ने कभी टिप्पणी की थी कि 'असंतुलित समाज के सदस्यों में वास्तविक समानता होना, एक मिथक मात्र है।'

यह सर्वमान्य है कि समाज स्थिर नहीं अपितु गतिशील होता है। 'सामाजिक गतिशीलता' शब्द का प्रयोग किसी समाज में क्रमागत परिवर्तन के लिए किया जाता है। जिस समाज में सामाजिक गतिशीलता अधिक होती है, उसे 'खुले समाज' के रूप में संदर्भित किया जाता है, जबकि 'बंद समाज' में सामाजिक गतिशीलता कम होती है। भारतीय समाज को आम तौर पर 'बंद समाज' की श्रेणी में रखा जाता है, क्योंकि भारतीय समाज में गतिशीलता कम रही है।

भारतीय समाज में गतिशीलता लाने का दिलचस्प प्रयास 'संस्कृतिकरण' के नाम से जाना जाता है। 'संस्कृतिकरण' शब्द का प्रयोग दिवंगत प्रोफेसर मैसूर नरसिम्हाचर श्रीनिवास ने ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में जमा की गई अपनी पीएचडी थीसिस में किया था, जिसे बाद में 'दक्षिण भारत के कूर्गों में धर्म और समाज' शीर्षक से प्रकाशित किया गया था। प्रो. श्रीनिवास ने इस शब्द का प्रयोग एक ऐसी प्रक्रिया को दर्शाने के लिए किया है, जिसके तहत निचली जातियों के लोग सामूहिक रूप से उच्च जातियों या 'द्विज' लोगों द्वारा अपनाई जाने वाली प्रथाओं, रीति-रिवाजों और विश्वासों को अपनाने और उनका अनुकरण करने का प्रयास करते हैं, ताकि समाज में उच्च दर्जा/ समानता प्राप्त किया जा सके। इसी प्रकार के अनुकरण से भारत की पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था में सांस्कृतिक गतिशीलता की एक प्रक्रिया चल रही है।

कर्नाटक में कुर्गों का विस्तृत अध्ययन करने वाले प्रो. श्रीनिवास ने पाया कि निचली जातियों के लोगों ने सामूहिक रूप से ब्राह्मणों के कुछ रीति-रिवाजों, प्रथाओं और यहां तक कि ड्रेस कोड को अपनाया और जाति पदानुक्रम में अपना स्थान बढ़ाने के लिए अपने कुछ रीति-रिवाजों को त्याग दिया। उदाहरण के लिए, उन्होंने मांस खाना, शराब पीना और अपने देवताओं को जानवरों की बलि देना छोड़ दिया और भोजन, पोशाक और अनुष्ठानों के मामले में ब्राह्मणों की नकल की। ऐसा करके वे जाति पदानुक्रम में उच्च स्थान के लिए भविष्य में दावा पेश कर सकते हैं। आम तौर पर, यह एक धीमी प्रक्रिया है जिसमें लंबा समय लगता है; इसमें दशकों या एक पूरी पीढ़ी या कभी-कभी कुछ सदियां भी लग सकती हैं।

समाज शास्त्री योगेंद्र सिंह का मानना है कि संस्कृतिकरण समाजीकरण की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण घटक है। निम्न वर्ग द्वारा उच्च वर्ग के जीवन के तरीकों का अनुकरण करने से निम्न जातियों के सामाजिक व्यवहार में महत्वपूर्ण परिवर्तन होते हैं। उनके लिए, यह सीखने की एक प्रक्रिया है, जहां वे अपनी कुछ पिछली सामाजिक आदतों को भूल जाते हैं और उच्च जाति समूहों से सामाजिक व्यवहार के नए तरीके सीखते हैं, जिन्हें वे अपना संदर्भ मॉडल मानते हैं।

हालांकि, ऐसे लोगों द्वारा अनुसरण किया जाने वाला संदर्भ मॉडल समूह आमतौर पर ब्राह्मण होता है या कभी-कभी इलाके की कोई अन्य प्रमुख जाति भी हो सकती है। इस प्रकार, यदि किसी विशेष क्षेत्र का प्रमुख संदर्भ मॉडल क्षत्रिय है, तो क्षत्रिय मॉडल का अनुकरण किया जाता है। कुछ आदिवासी समूहों को हिंदू समाज का हिस्सा बनने के लिए शूद्रों का अनुकरण करते हुए भी पाया

गया है। संस्कृतिकरण सिर्फ हिंदू जातियों तक सीमित नहीं है; यह गैर-हिंदू आदिवासी और अर्ध-आदिवासी समूहों में भी मौजूद है। यह भारत और नेपाल जैसे अन्य देशों में देखा जाने वाला सामाजिक परिवर्तन का एक रूप है। संस्कृतीकरण की प्रक्रिया किसी व्यक्ति विशेष तक सीमित नहीं है; बल्कि यह प्रक्रिया समूह स्तर पर देखी जा सकती है। यह किसी विशिष्ट समूह की स्थिति में दो या उससे अधिक शताब्दियों में होने वाले परिवर्तनों की व्याख्या करती है।

इस प्रकार संस्कृतीकरण उस जाति की ऊर्ध्वगामी गतिशीलता की ओर ले जाता है जो इस प्रक्रिया से गुजर रही है। हालांकि, ऐसी गतिशीलता संस्कृतीकरण के बिना भी हो सकती है, क्योंकि संस्कृतीकरण इस गतिशीलता के तरीकों में से केवल एक प्रक्रिया मात्र है। संस्कृतीकरण हमेशा ऊर्ध्वगामी सामाजिक गतिशीलता का परिणाम नहीं हो सकता है।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि संस्कृतीकरण से केवल स्थितिगत परिवर्तन होता है, लेकिन इससे कोई संरचनात्मक परिवर्तन नहीं होता है। दूसरे शब्दों में, यह जाति व्यवस्था को समग्र रूप से नहीं बदलता है। इसलिए, इसे हिंदू समाज में गहरी जड़ें जमाए बैठी जाति व्यवस्था के लिए कोई खतरा नहीं माना जाता है।

पश्चिमीकरणः उन्नत पश्चिमी देशों के प्रभाव से होने वाले सामाजिक परिवर्तनों को समाजशास्त्री पश्चिमीकरण कहते हैं। यह पारंपरिक संस्कृति और संबंधित समाज का पश्चिम द्वारा क्रमिक प्रतिस्थापन और परिवर्तन है। सामान्यतः पश्चिमीकरण का संदर्भ-उपयोग ब्रिटेन, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, फ्रांस या जर्मनी जैसे पश्चिमी समाज का भारत, श्रीलंका, बांग्लादेश और पाकिस्तान जैसे पूर्वी समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाने के लिए किया जाता है।

आधुनिकीकरण पश्चिमीकरण का पर्याय है, जहां अविकसित समाज अपने समाज में सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए पश्चिमी मॉडल का उपयोग करते हैं। हालांकि, प्रो. एम.एन. श्रीनिवास के अनुसार, पश्चिमीकरण शब्द नैतिक रूप से तटस्थ है क्योंकि यह समाज में अच्छा या बुरा होने वाले सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया होने का दावा नहीं करता है। वैसे अधिकांश लेखक आधुनिकीकरण को किसी भी समाज में एक सकारात्मक और वांछनीय परिवर्तन मानते हैं।

भारत में पश्चिमीकरण को तीन प्रमुख चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है - ब्रिटिश-पूर्व, स्वतंत्रता-पूर्व और स्वतंत्रता-पश्चात् तपश्चिमीकरण। ब्रिटिश शासन से पहले, भारत एक अत्यधिक पारंपरिक समाज था, जिसमें सामाजिक परिवर्तन के लिए बहुत कम अवसर थे। पश्चिमीकरण के कारण भारत के रूढ़िवादी समाज में गतिशीलता आई है और सामंजस्य की शुरूआत हुई है। पश्चिमीकरण ने भारत में औद्योगीकरण, शहरीकरण और धर्मनिरपेक्षता को भी बढ़ावा दिया है।

स्वतंत्रता-पूर्व काल में, ब्रिटिश शासन अपने साथ पश्चिमी प्रभाव लेकर आया, जिससे भारतीय समाज में आमूलचूल परिवर्तन हुए। विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास हुआ, परिवहन और संचार व्यवस्था उन्नत हुई, प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार के कारण कई बदलाव आए, एक जटिल किंतु व्यवस्थित नौकरशाही संरचना की स्थापना हुई और एक नई शैक्षिक और कानूनी प्रणाली की भी शुरूआत हुई।

पश्चिमी प्रभाव के कारण एक समान पुलिस सेवा और एक नई सैन्य व्यवस्था की संरचना व स्थापना से भारतीय समाज में धीरे-धीरे वैचारिक परिवर्तन आया है। व्यक्तिवाद और मानवतावाद को प्रोत्साहित किया गया, जिससे सामाजिक सुधार हुए और कई सामाजिक कुरीतियां व अन्याय समाप्त भी हुए। धार्मिक रीति-रिवाज अब कानून और तर्क के अधीन हुए। इन कारकों ने समेकित रूप से ब्रिटिश कालीन भारत में त्वरित सामाजिक गतिशीलता के अवसर प्रदान किए।

आज़ादी के बाद यूरोप, अमेरिका और कनाडा के पश्चिमी समाजों ने भारत में सामाजिक परिवर्तन को काफी हद तक प्रभावित किया है। ये परिवर्तन दैनिक जीवन के लगभग सभी पहलुओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, चाहे वह पहनावे का तरीका हो, हेयर स्टाइल हो, संगीत और नृत्य की पसंद हो, गालियों और अपशब्दों का इस्तेमाल हो या फास्ट-फूड संस्कृति हो, परिवर्तन स्पष्ट दिखाई देते हैं ।

धर्मनिरपेक्षताः एम.एन. श्रीनिवास के अनुसार, 'धर्मनिरपेक्षता' शब्द का अर्थ है कि जिसे पहले धार्मिक व्यवस्था माना जाता रहा हो वह अब वैसा न रह गया हो। आज के समाज में धार्मिक कट्टरता बहुत कम हो गई है। धार्मिक रीति-रिवाजों और अनुष्ठानों को अब जीवित रहने के लिए तर्क और कारण की कसौटी पर खरा उतरना होता है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना भारत को एक धर्मनिरपेक्ष गणराज्य घोषित करती है। भारत की धर्मनिरपेक्ष प्रकृति संविधान के अनुच्छेद 27 से 30 में निहित है जो धर्म की स्वतंत्रता के अधिकार की गारंटी देता है। धर्मनिरपेक्षता का भारतीय समाज पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा है। समाज पर धर्म का अधिकार बहुत कम हो गया है।

यह जाति व्यवस्था के धीरे-धीरे खत्म होने, अंतर-धार्मिक विवाहों में वृद्धि, अस्पृश्यता के उन्मूलन और महिलाओं की बेहतर स्थिति से स्पष्ट है। समानता, बंधुत्व और भाईचारे के आदर्श अब समाज में समाहित हो रहे हैं। सरकारी स्वामित्व वाले शैक्षणिक संस्थानों और सरकारी कार्यालयों को धर्मनिरपेक्ष नीति का सख्ती से पालन करना आवश्यक है।

विद्या भूषण द्वारा बताई गई धर्मनिरपेक्षता की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं:

धार्मिक आस्था में कमी: धर्मनिरपेक्षता धर्म में अंधविश्वास के विपरीत है। जैसे-जैसे धर्मनिरपेक्षता बढ़ती है, धार्मिक संस्कारों की प्रथागत प्रथाएं कम होती जाती हैं और उन्हें जीवित रहने के लिए तर्क और कारण की कसौटी पर खरा उतरना पड़ता है। जन्म, मृत्यु और विवाह के समय किए जाने वाले धार्मिक रीति-रिवाज और अनुष्ठान धीरे-धीरे अपना महत्व खो रहे हैं। इसलिए धर्मनिरपेक्षता सामाजिक जीवन के पहलूओं पर धर्म के प्रभाव में कमी के रूप में चिह्नित है।

विभेदन: धर्म अब सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलूओं को आपस में नहीं बांधता है। सामाजिक जीवन के आर्थिक, राजनीतिक, कानूनी और नैतिक पहलू धार्मिक प्रभावों से स्वतंत्र हो रहे हैं और अपने-अपने सिद्धांतों के अधीन हैं। इसलिए धर्मनिरपेक्षता की विशेषता सामाजिक जीवन में विभिन्न पहलूओं का विभेदीकरण या पृथक्करण है ताकि ऐसे पहलू धार्मिक प्रभावों से स्वतंत्र रहें।

तर्कसंगतता: धर्मनिरपेक्षता मनुष्य के तर्कसंगत पक्ष को बल देती है। धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन तब तक किया जाता है जब तक वे तर्कसंगत और उचित कारण के अनुरूप होते हैं, तब नहीं जब वे तर्क और उचित कारणों को चुनौती देते हों।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण: धर्मनिरपेक्षीकरण धार्मिक स्पष्टीकरणों की जगह वैज्ञानिक स्पष्टीकरणों को मान्यता देता है। आधुनिक भारत में धार्मिक विश्वासों में आस्था के स्थान पर वैज्ञानिक सिद्धांतों और स्पष्टीकरणों पर निर्भरता अधिक देखने को मिलती है।

अतः भारत में भी किसी भी अन्य देश या समाज की भांति सामाजिक परिवर्तन सामाजिक प्रक्रियाओं, सामाजिक प्रतिमानों, सामाजिक अंतःक्रियाओं या सामाजिक संगठनों में क्रमिक संशोधन और गतिशीलता के अधीन रहा है। तो ऐसे में भविष्य में भी रूढ़ भारतीय मान्यताओं के स्थान पर विकासशील, तर्कसंगत, वैज्ञानिक और सामंजस्यवादी मान्यताएं अपना स्थान बनाती रहेंगी और गतिशीलता बनी रहेगी । आने वाले समय में भारतीय समाज एक बंद समाज की बजाय खुले समाज के रूप पहचाना जाएगा। ❒

स्वास्थ्य

काम करने पर थकान व चिड़चिड़ापन

अगर आपको भी हर वक्त कमजोरी, आलस और थकान महसूस होती है, तो इसे अनदेखा करना ठीक नहीं है। विशेषज्ञ मानते हैं कि अगर आप पूरी तरह से स्वस्थ हैं, तो थकान नहीं होनी चाहिए। यहां थकान होने के कुछ कारण बताए गए हैं, जिन पर ध्यान देना जरूरी है। ब्राइन मावर के फैमिली मेडिसिन फिजिशियन, डीओ डेमरिस वेसल ने कुछ ऐसे कारण बताए हैं, जो थकान की मुख्य वजह बनते हैं -

नींद की कमी

आमतौर पर लोगों को 7 से 8 घंटे अच्छी नींद की जरूरत होती है, लेकिन ज्यादा थकान या तनाव की वजह से लोग केवल 3 से 4 घंटे की ही नींद ले पाते हैं। नींद की गुणवत्ता में सुधार के लिए रोज एक ही समय पर बिस्तर पर जाएं और हर सुबह एक ही समय पर जागें। यहां तक कि वीकेंड में भी इसी दिनचर्या का पालन करना चाहिए। इसके अलावा कोशिश करें कि हमेशा ठंडे, शांत और अंधेरे कमरे में ही सोएं।

शरीर में आयरन की कमी

हर व्यक्ति को आयरन की जरूरत होती है और विशेष रूप से महिलाओं को इसकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है। लेकिन दैनिक जीवन में उन्हें उतना आयरन नहीं मिलता, जितना उन्हें चाहिए। जिससे एनीमिया हो सकता है। शरीर में आयरन की जरा भी कमी कमजोरी और थकान का कारण बन सकती है। एनीमिया से जूझ रहे व्यक्ति को अपनी डाइट में बीन्स, मछली, सूखे मेवे और आयरन से भरपूर हरी पत्तेदार सब्जियों को शामिल करना चाहिए।

तनाव

घर या रिश्तों में तनाव और अवसाद से गुजर रहे लोगों को अक्सर थकान होती है। थकान का असर दिनभर की दिनचर्या पर पड़ता है, जिससे घर हो या ऑफिस कोई काम ठीक से नहीं हो पाता। इस स्थिति को अनदेखा करने के बजाय इसका इलाज ढूंढना चाहिए।

शरीर में डिहाइड्रेशन

अगर शरीर में थकान दिनभर बनी रहे, तो खुद से सवाल जरूर करें कि क्या आप पर्याप्त मात्रा में पानी पी रहे हैं। जी हां, शरीर में पानी की कमी भी इंसान को थका हुआ बना देती है। एक्टिव रहना चाहते हैं, तो दिनभर में खूब पानी पिएं, पर सोडा, अल्कोहल और एनर्जी ड्रिंक से बचे रहें क्योंकि इनके सेवन से शरीर में पानी की कमी हो सकती है।

ओवरएक्टिव थायरॉइड

ओवरएक्टिव थायराइड अपर्याप्त नींद के लिए जिम्मेदार है। यह एक ऐसी स्थिति है, जिसमें थायराइड हाई लेवल थायराइड हार्मोन बनाता और छोड़ता है। इससे आपका मेटाबॉलिज्म तेज होकर आपको हर वक्त थकान महसूस हो सकती है।

थकान से निपटने के लिए उपाय

- रोजाना व्यायाम करें। इससे एंडोर्फिन रिलीज होता है, जो व्यक्ति का एनर्जी लेवल बढ़ाता है।
- शराब का सेवन बंद करें। इससे शरीर का संतुलन बिगड़ता है और नींद खराब होती है।
- तरल पदार्थ लें और पोषक तत्वों से भरपूर फल खाएं।
- हर्बल टी थकान दूर करती है, इसका सेवन कर सकते हैं।

-साभार

एनएचपीसी की ईएसजी रिपोर्टिंग-एक उपलब्धिपूर्ण सफर

डॉ अविनाश कुमार,
महाप्रबंधक (पर्यावरण)

राजीव रंजन प्रसाद,
महाप्रबंधक (पर्यावरण)

मनोज कुमार सिंह,
समूह वरिष्ठ प्रबंधक (पर्यावरण)

पर्यावरण एवं विविधता प्रबंधन विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

भूमिका : पर्यावरण, सामाजिक और गवर्नेंस अर्थात 'ईएसजी रिपोर्टिंग' एक मापदंड है जिसका उपयोग किसी कंपनी के व्यावसायिक कार्य-प्रणाली की स्थिरता को प्रभावी करने वाले मूल गैर-वित्तीय तत्वों के प्रदर्शन (परफॉर्मेंस) का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह व्यावसायिक जोखिमों और अवसरों को मापने का तरीका भी प्रदान करता है। पूंजी बाजारों में कुछ निवेशक, कंपनियों का मूल्यांकन करने और निवेश योजनाओं को निर्धारित करने के लिए ईएसजी रिपोर्ट का उपयोग करते हैं।

ईएसजी रिपोर्ट में प्रदान किए गए विवरणों से निवेशकों को कंपनियों की पहचान करके निर्णय लेने में सक्षमता प्राप्त होती है। इसके दृष्टिगत, कंपनियों की यह जिम्मेवारी है कि वे हितधारकों व निवेशकों के हित के लिए ईएसजी रिपोर्टिंग करें। इस रिपोर्टिंग या प्रदत्त विवरणों से कंपनी को अपनी कार्य-प्रणाली में मौजूद अच्छाई व खामियों का भी आकलन हो जाता है। मूल्यांकन के आधार पर यदि आवश्यकता हो तो समय रहते सुधार किया जा सकता है।

ईएसजी रिपोर्टिंग के मुख्य निष्पादन तत्व/ संकेतक

ईएसजी रिपोर्टिंग के कुछ मुख्य निष्पादन संकेतक (केपीए) या कारक होते हैं जिसे नीचे तालिका में प्रदर्शित किया गया है। कंपनी के व्यवसाय की प्रकृति के आधार पर, ईएसजी के कुछ केपीए का प्रदर्शन एक कंपनी की तुलना में दूसरे कंपनी में ज्यादा महत्वपूर्ण हो सकता है। अतः केपीए का बारीकी से विश्लेषण करना आवश्यक होता है।

पर्यावरण	सामाजिक	गवर्नेंस
पर्यावरण नीति	पूर्णकालिक कर्मचारी	बोर्ड पर लिंग विविधता
पर्यावरणीय प्रभाव	कर्मचारियों के लिए लाभ	बोर्ड-स्वतंत्रता
ऊर्जा की खपत	संघर्षण दर	बोर्ड-शक्ति का पृथक्करण
ऊर्जा घनत्व	प्रशिक्षण और विकास के घंटे	लिंग वेतन अनुपात
प्राथमिक ऊर्जा स्रोत	स्वास्थ्य और देखभाल लाभ	प्रोत्साहन वेतन
कार्बन/जीएचजी उत्सर्जन	मानव अधिकार नीति	व्यावसायिक नैतिकता, भ्रष्टाचार विरोधी संहिता
जल प्रबंधन	समुदाय एवं सामाजिक कार्य	आपूर्तिकर्ता की आचार संहिता
कचरे का प्रबंधन	लिंग समानता अनुपात	निगम से संबंधित शासन प्रणाली

ईएसजी के नियामक मानदंड

कंपनी की दिन-प्रतिदिन की व्यावसायिक गतिविधियों के दौरान ईएसजी के उपरोक्त वर्णित निष्पादन संकेतक (केपीआई) का प्रबंधन आवश्यक है जिसके अंतर्गत भारत के विभिन्न अधिनियमों का अनुपालन भी सुनिश्चित किया जाता है। उदाहरण के लिए, कंपनी द्वारा पर्यावरणीय प्रभाव, प्रदूषण, जल संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन आदि जैसे केपीआई/ मुद्दों के प्रबंधन के लिए पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986; जल (प्रदूषण निवारण एवं

नियंत्रण) अधिनियम, 1981; प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण अधिनियम, 1976 जैसे अधिनियमों का अनुपालन करना अनिवार्य है। इसी प्रकार सामाजिक व गवर्नेंस जैसे मुद्दों से संबंधित केपीआई प्रबंधन के लिए कंपनी अधिनियम, 2013; भूमि अधिग्रहण पुनर्वासन व पुनर्व्यवस्थापन में उचित मुआवजा एवं पारदर्शिता अधिकार अधिनियम, 2013; कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न अधिनियम, 2013; न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948 जैसे अनेकों अधिनियमों का अनुपालन करना आवश्यक होता है। इन अधिनियमों के प्रभावी अनुपालन के लिए प्रत्येक कंपनी द्वारा अलग-अलग नीतियां बनाई जाती हैं।

मुख्यालय में आयोजित बीआरएसआर व ईएसजी रिपोर्टिंग की बारे में जागरूकता कार्यक्रम

भारत में कंपनियों द्वारा ईएसजी रिपोर्टिंग/ प्रदत्त प्रकटनों (डिस्क्लोजर) के लिए, भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के दिनांक 10.05.2021 के परिपत्र द्वारा जारी दिशा-निर्देश के अनुसार सूचीबद्ध कंपनियों को एक निर्धारित 'बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट (बीआरएसआर) फार्मेट' में रिपोर्टिंग करना निर्दिष्ट है। इस रिपोर्टिंग को वित्त- वर्ष 2022-23 से टॉप 1000 सूचीबद्ध कंपनियों के लिए अनिवार्य किया गया है। सेबी द्वारा जारी 'बीआरएसआर फार्मेट में जिम्मेदार रिपोर्टिंग का मूल उद्देश्य वैश्विक सामाजिक-आर्थिक विकास की प्रक्रिया में भारतीय कंपनियों को सहभागिता प्रदान करना है। बीआरएसआर फार्मेट को कॉर्पोरेट मामलों का मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2019 में जारी जिम्मेदार व्यावसायिक आचरण पर राष्ट्रीय दिशा-निर्देश (एनजीआरबीसी) के अनुसार तैयार किया गया है। एनजीबीआरसी में नौ सिद्धांत (पी1 से पी9) हैं जो संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा वर्ष 2015 में जारी सभी 17 सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) को पूरा करने के उद्देश्य से भारतीय कंपनियों के व्यावसायिक मॉड्यूल को संरेखित करते हैं।

यह परिकल्पना की गई है कि एसडीजी के साथ संरेखित ऐसे व्यावसायिक मॉड्यूल भारत में आर्थिक विकास प्रक्रियाओं को एक नया आयाम देंगे। ईएसजी रिपोर्टिंग की इस प्रक्रिया को सरल व प्रभावकारी बनाने के उद्देश्य से सेबी द्वारा समय-समय पर दिशा-निर्देश जारी किए जा रहे हैं। इसी संदर्भ में, वित्त-वर्ष 2023-24 से 'बीआरएसआर कोर' के रूप में 09 प्रभावी केपीआई पर रिपोर्टिंग किया जाना आवश्यक है एवं कंपनी के वैल्यू चेन पार्टनर अर्थात आपूर्तिकर्ताओं/ संविदाकारों का भी ईएसजी मूल्यांकन करना अनिवार्य है। इसके अलावा, बीआरएसआर का आश्वासन/ लेखापरीक्षा कराने के बारे में भी सेबी द्वारा दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं।

एनएचपीसी की पहली ईएसजी रिपोर्टिंग

एनएचपीसी लिमिटेड द्वारा सेबी के दिशा-निर्देशों का समुचित पालन सुनिश्चित किया जा रहा है। वित्त वर्ष 2022-23 से कंपनी का पहला बीआरएसआर तैयार कर वार्षिक रिपोर्ट 2022-23 में सम्मलित किया गया है जिसे एनएचपीसी के निदेशक मंडल द्वारा अनुमोदित किया गया है। उक्त रिपोर्ट को कंपनी के हितधारकों की जानकारी के लिए एनएचपीसी की वेबसाइट पर अपलोड किया गया है। पावर स्टेशनों एवं अन्य विभागों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर

निदेशकगण के समक्ष सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट का प्रस्तुतीकरण (फरवरी, 2024)

यह बीआरएसआर निगम मुख्यालय के योजना विभाग द्वारा तैयार किया गया है। इस कार्य के लिए पावर स्टेशनों एवं अन्य विभागों से एक नोडल अधिकारी (ईएसजी/ बीआरएसआर) नामित किया गया है।

इसी क्रम में, बीआरएसआर के साथ-साथ एनएचपीसी द्वारा स्वैच्छिक आधार पर सतत रिपोर्टिंग की शुरुआत वित्त वर्ष 2021-22 से की गई है जिसमें कंपनी की ईएसजी मापदंडों के साथ आर्थिक प्रदर्शन के बारे में वृहद विश्लेषण किया गया है। यह प्रथम "सतत रिपोर्ट" ईएसजी के अन्तर्राष्ट्रीय मापदंड 'GRI-2021' पर आधारित है। इस रिपोर्ट को पर्यावरण व विविधता प्रबंधन विभाग द्वारा तैयार किया गया है जिसमें डिलॉइट कंपनी ने परामर्श सेवा दी है। यह एनएचपीसी की स्टैंड अलोन रिपोर्ट है जिसमें 22 पावर स्टेशनों (जल विद्युत-20, सौर ऊर्जा-21, पवन ऊर्जा-21) एवं दो निर्माणाधीन जल विद्युत परियोजनाएं (सुबनसिरी लोअर तथा पार्वती-II) और कार्यालयों से संबंधित विवरण/ डाटा को ईएसजी रिपोर्टिंग के लिए शामिल किया गया है। एनएचपीसी की सहायक/ संयुक्त उद्यम कंपनियों को इसमें शामिल नहीं किया गया है। रिपोर्ट में एनएचपीसी द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किए गए कार्यों की प्रगति का विश्लेषण किया गया है जैसे आर्थिक प्रगति, सीएसआर के तहत स्थानीय समुदायों के लिए विकास का कार्य, पर्यावरण सुरक्षा कार्य एवं कंपनी के कर्मचारियों के लिए अच्छी सुविधाएं, सुरक्षा, नैतिक कर्तव्यों को पालन करने के लिए विधि-व्यवस्था आदि वर्णित है।

रिपोर्ट तैयार होने के उपरांत निदेशकगण के समक्ष दिनांक 22.02.2024 को इसे प्रस्तुत किया गया और दिनांक 29.02.2024 को इसका विमोचन किया गया। यह रिपोर्ट एनएचपीसी के हितधारकों व निवेशकों को कंपनी के व्यावसायिक प्रणाली एवं गैर-वित्तीय मुद्दे पर प्रदर्शन के बारे में विस्तृत जानकारी साझा करने में सहायक होगी। इससे एनएचपीसी की 'ईएसजी रेटिंग' में भी सतत वृद्धि होगी एवं कंपनी की छवि वैश्विक पटल पर अच्छी बनेगी, जिससे निवेशकों को एनएचपीसी में निवेश करने संबंधी निर्णय लेने में रुचि बढ़ेगी। रिपोर्ट की इस महत्ता को देखते हुए अगले वित्तीय वर्षों के लिए भी इस रिपोर्ट को तैयार करने की प्रक्रिया जारी है।

एनएचपीसी की ईएसजी रेटिंग

एनएचपीसी लिमिटेड ने 'एस एंड पी ग्लोबल' की कॉरपोरेट सस्टेनेबिलिटी एसेसमेंट (सीएसए) सर्वेक्षण-2023 (डीजेएसआई) में सक्रिय प्रतिभागिता की थी। मार्च 2024 में एस एंड पी ग्लोबल द्वारा एनएचपीसी की सीएसए सर्वेक्षण के विश्लेषण के आधार पर 48 ईएसजी रेटिंग प्रदान किया गया जो वेबसाइट https://www.spglobal.com/esg/solutions/data-intelligence-esgscores पर उपलब्ध है एवं नीचे दर्शाया गया है। इससे पहले, वर्ष 2022 में, एस एंड पी ग्लोबल ने एनएचपीसी की पब्लिक डोमैन में उपलब्ध डाटा के आधार पर एनएचपीसी को 17 का ईएसजी रेटिंग प्रदान की थी।

वर्ष 2024 में एनएचपीसी का बढ़ा हुआ ईएसजी स्कोर (48) निगम की छवि को उजागर करने, नए निवेशक तक पहुंच बढ़ाने में सहायक होगा।

सीख

एनएचपीसी की पहली ईएसजी रिपोर्ट तैयार करते हुए सामने आई बाधाओं को पार करने में कुछ महत्वपूर्ण अनुभव मिले, जो नीचे दिए गए हैं। इन्हें अमल में लाकर अगली रिपोर्ट की गुणवत्ता में सुधार किया जा सकेगा। इससे एनएचपीसी का ईएसजी मापदंड पर प्रदर्शन भी बेहतर होगा।

डाटा प्रबंधनः विदित है कि किसी भी रिपोर्ट को तैयार करने के लिए डाटा की आवश्यकता होती है। अतः ईएसजी रिपोर्ट के लिए निर्धारित फार्मेट में समयबद्ध तरीके से डाटा का रिकॉर्ड रखना आवश्यक है। परियोजना/ पावर स्टेशनों/ कार्यालयों में आयोजित किए गए कार्यक्रम का उच्चतम गुणवत्ता वाले फोटो का रिकॉर्ड रखना जरूरी है। इस कार्य से संबंधित कार्मिक/ नोडल अधिकारी (ईएसजी) का स्थानांतरण होने पर किसी अन्य कार्मिक को इस डाटा रिकॉर्ड का विवरण साझा करना आवश्यक है ताकि स्थान विशेष द्वारा रिपोर्ट तैयार करने के लिए त्रुटिरहित डाटा निगम मुख्यालय को अविलंब भेजा जा सके।

नीतियों/ नियमों का अनुपालनः बीआरएसआर/ ईएसजी रिपोर्टिंग की आवश्यकतानुसार निगम मुखालय द्वारा वर्ष 2023 में अनेक नई नीतियों का सूत्रीकरण किया गया है जो पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक मुद्दे जैसे मानव अधिकार, हितधारकों से चर्चा आदि से सबंधित हैं। ये सभी नीतियां एनएचपीसी की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। इसके बारे में, जागरूकता का प्रसार एवं अनुपालन सुनिश्चित करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, ईएसजी के केपीआई प्रबंधन के लिए सरकार के अधिनियमों/ नियमों का एनएचपीसी की व्यावसायिक प्रक्रिया में अनुपालन करना अनिवार्य है।

ईएसजी के संबंध में जागरूकता व क्षमता का विकासः ईएसजी एक नया क्षेत्र है जिसके अनुपालन के लिए नए-नए नियम सेबी द्वारा जारी किए जा रहे हैं। इस परिप्रेक्ष्य में, एनएचपीसी के कार्मिकों

के ईएसजी ज्ञान में संवर्धन के उद्देश्य से प्रशिक्षण आयोजित करना आवश्यक है।

अच्छी प्रक्रिया / गतिविधियों के अनुभव को साझा करना: अच्छी प्रक्रिया/ गतिविधियां जैसे परियोजना संबंधी किसी विशिष्ट समस्याओं के समाधान की प्रक्रिया व अनुभव को रिकार्ड करना तथा साझा करना एक प्रशंसनीय कार्य है। इसका उपयोग किसी अन्य परियोजना में घटित इसी प्रकार की समस्या के समाधान में सहायक हो सकता है। इससे परियोजना निर्माण/ परिचालन में अतिरिक्त समय व लागत में बचत की भी संभावना होगी।

स्थानीय हित धारकों से अच्छा संबंध रखना: एनएचपीसी की छवि में सकारात्मक वृद्धि में स्थानीय हितधारकों की अहम भूमिका होती है एवं परियोजना के सहज निर्माण में भी स्थानीय हितधारकों का साथ होता है। अतः एनएचपीसी के कार्मिकों को अपने हितधारकों की पहचान करना, उनकी समस्याओं का समाधान करना एवं उचित जानकारी प्रेषित करना अति आवश्यक है। इस बात का ध्यान रखने से, छोटी समस्या से बड़ी समस्या (जैसे हड़ताल, मुकदमेबाज़ी आदि) में परिवर्तित होने से बचा जा सकता है। वर्तमान में, अपनी बात हितधारकों तक पहुंचाने के लिए कंपनियों के पास सोशल मीडिया एक आसान और सशक्त माध्यम है। हितधारकों की प्रतिक्रिया का सोशल मीडिया पर प्रदर्शन करने से कंपनी की छवि व शेयर मूल्यों पर प्रभाव पड़ सकता है।

निष्कर्ष

ईएसजी रिपोर्टिंग के संबंध में यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह कंपनी के व्यावसायिक हित के अलावा हितधारकों एवं निवेशकों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। एनएचपीसी की व्यावसायिक प्रक्रिया में ईएसजी रणनीति का समावेश करने से कंपनी द्वारा जारी 'स्वच्छ बिजली उत्पादन व क्षमता वृद्धि' का प्रयास सफल होगा एवं निर्धारित मिशन व विजन' को भी यह भली-भांति साकार करेगा। एनएचपीसी का यह प्रयास भारत के 'नेट जीरो कार्बन उत्सर्जन' के लक्ष्य को प्राप्त करने में उत्तम सहयोग साबित होगा। ❐

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है।

– रविशंकर शुक्ल

भ्रष्टाचार उन्मूलन

अपने मन में अक्सर सोचा करता हूँ कई बार,
अपने देश में ही क्यों फैला है इतना भ्रष्टाचार ....
रे भैया इतना भ्रष्टाचार ....

नेता और अधिकारी सारे क्यों है मालामाल,
मेहनतकश मजदूर और किसान देश का, हो गया कंगाल।
वीर सिपाही सीमा पर करता यही पुकार,
अपने देश में ही क्यों फैला है इतना भ्रष्टाचार ....
रे भैया इतना भ्रष्टाचार ....

ग्यारह बच्चे घर में हैं पर है जनगणना अधिकारी,
औरों को उपदेश देते हैं पर कहां गई अकल तुम्हारी।
झट से बोलते हैं सब जायज है, है यहां अपनी सरकार,
अपने देश में ही क्यों फैला है इतना भ्रष्टाचार ....
रे भैया इतना भ्रष्टाचार ....

बचपन में पापा कहते थे ईश्वर भाग्य विधाता है,
जन्म देने वाली माँ से बढ़कर अपनी भारत माता है।
आज ईमानदार और सत्यवादी हो चुका लाचार,
अपने देश में ही क्यों फैला है इतना भ्रष्टाचार ....
रे भैया इतना भ्रष्टाचार ....

कभी तो मानव जागेगा, कवि राकेश के मन में है यही आस,
आइए हम सभी मिलकर करें सामूहिक प्रयास।
ठान लें कि हमें भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाना है,
न खाना है और न ही खिलाना है,
भ्रष्टाचारी को पकड़वाना है, साफ-सुथरा समाज बनाना है,
देश को प्रगति के पथ पर लाकर, जन-जन तक ये संदेश पहुंचाना है।
सत्यनिष्ठा के पथ पर अग्रसर आत्मनिर्भर भारत बनाना है।।

अब हमारा मन कहेगा ये ही बारंबार,
जड़ से मिटेगा भ्रष्टाचार ....
रे भैया जड़ से मिटेगा भ्रष्टाचार ....
कल से दुनिया कहेगा ....
भारतवर्ष है सबसे ईमानदार
रे भैया सबसे ईमानदार।

राकेश कुमार प्रसाद, समूह वरिष्ठ प्रबंधक (सिविल)
बैरा स्यूल पावर स्टेशन, सुरंगिनी (हिमाचल प्रदेश)

चैट जीपीटी-संक्षिप्त इतिहास एवं उसके साथ हमारा सफर

प्रकाश चन्द शर्मा, उप महाप्रबंधक (विद्युत)
डिज़ाइन (ई एंड एम) विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

चैट जीपीटी एक आर्टिफिश्यल इंटेलिजेंस (एआई) यानि कृत्रिम बुद्धिमत्ता चैटबॉट है जो मानवीय संवाद बनाने के लिए प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (नैचुरल लैंगवेज़ प्रोसेसिंग) का उपयोग करता है। भाषा मॉडल सवालों का जवाब दे सकता है और लेख, सोशल मीडिया पोस्ट, निबंध, कोड और ई-मेल सहित विभिन्न लिखित सामग्री को तैयार कर सकता है। यहां यह बताना उचित होगा कि चैट जीपीटी पहला भाषा मॉडल नहीं है; यह पहला जीपीटी मॉडल भी नहीं है। लेकिन इसने प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण में एक महत्वपूर्ण छलांग लगाई, बड़े भाषा मॉडल (एलएलएम) को लोकप्रिय बनाया और एआई को अपनाने में तेजी भी लाई।

चैट जीपीटी क्या है?

चैट जीपीटी एक ऐसा शक्तिशाली एआई चैटबॉट है जो मानवीय हस्तक्षेप द्वारा प्रविष्ट टेक्स्ट को तैयार करने और लिखित आदेशों के आधार पर कार्य करने में सक्षम है। यह संकीर्ण कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एएनआई) का एक उन्नत रूप है और कृत्रिम सामान्य बुद्धिमत्ता (एजीआई) की ओर एक बड़ा कदम है। चैट जीपीटी में जीपीटी का मतलब जेनरेटिव पूर्व-प्रशिक्षित ट्रांसफार्मर है - एक बड़ा भाषा मॉडल जो मानव-जैसा भाषण उत्पन्न करने के लिए गहन शिक्षा का उपयोग करता है। दूसरे शब्दों में कहें तो, जीपीटी मॉडल द्वारा संचालित एक एआई समाधान है - चैट जीपीटी। जीपीटी तकनीक ओपन एआई के कोडेक्स, Copy.ai, जैस्पर आदि जैसे उत्पादों को भी शक्ति प्रदान करती है।

एआई तथा चैट जीपीटी में अंतर

एआई, कंप्यूटर विज्ञान का एक व्यापक क्षेत्र है जो बुद्धिमान एजेंट बनाने का प्रयास करता है। ये ऐसे सिस्टम हैं जो तर्क कर सकते हैं, स्वयं सीख सकते हैं और स्वायत्त रूप से कार्य कर सकते हैं। दूसरी ओर, चैट जीपीटी एक विशिष्ट प्रकार का एआई मॉडल है जिसे वार्तालाप अनुप्रयोगों के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह एक लार्ज लैंगवेज़ मॉडल है जिसे टेक्स्ट तथा कोड के वृहत डेटा सेट पर प्रशिक्षित किया गया है। यह इसे पाठ उत्पन्न करने, भाषाओं का अनुवाद करने, विभिन्न प्रकार की रचनात्मक सामग्री लिखने और जानकारी पूर्ण तरीकों से मानवीय प्रश्नों का उत्तर देने की अनुमति देता है। दूसरे शब्दों में, एआई एक ऐसे अध्ययन का क्षेत्र है जो चैट जीपीटी जैसे चैटबॉट बनाता है। चैट जीपीटी कई अलग-अलग प्रकार के एआई अनुप्रयोगों का एक उदाहरण है।

चैट जीपीटी की तकनीक

प्रारंभिक लार्ज लैंगवेज़ मॉडल, आवर्ती तंत्रिका नेटवर्क (आरएनएन) पर आधारित थे क्योंकि ये पाठ जैसे अनुक्रमों को संभालने वाले पहले मॉडल थे। लेकिन पिछले शब्दों को याद रखने की उनकी क्षमता सीमित थी और प्रशिक्षण प्रक्रिया धीमी थी। लंबी अवधि की मेमोरी (एलएसटीएम) नेटवर्क 1997 में सीमित मेमोरी समस्या के समाधान के रूप में पेश किए गए थे। एलएसटीएम ने लंबे अनुक्रमों को याद रखने की उल्लेखनीय रूप से बेहतर क्षमता का प्रदर्शन किया और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण कार्यों के लिए एक लोकप्रिय मॉडल बन गया। फिर भी, हाल के समाधानों की तुलना में उनकी भाषा क्षमताएं सीमित थी।

चैट जीपीटी कैसे बनाया गया

ओपन एआई की स्थापना दिसंबर 2015 में सैम ऑल्टमैन, ग्रेग ब्रॉकमैन, एलोन मस्क, इल्या सुतस्केवर, वोज्शिएक ज़रेम्बा और जॉन शुलमैन द्वारा की गई थी। संस्थापक टीम ने प्रौद्योगिकी उद्यमिता, मशीन लर्निंग और सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग में अपनी विविध विशेषज्ञता को मिलाकर एक ऐसा संगठन बनाया है जो मानवता को लाभ पहुंचाने वाले तरीके से कृत्रिम बुद्धिमत्ता को आगे बढ़ाने पर केंद्रित है। हालांकि एलोन मस्क अब ओपन एआई में शामिल नहीं हैं और सैम ऑल्टमैन संगठन के वर्तमान सीईओ हैं।

ओपन एआई ने 30 नवंबर, 2022 को चैट जीपीटी का प्रारंभिक डेमो जारी किया और चैटबॉट तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो गया क्योंकि उपयोगकर्ताओं ने उदाहरण साझा किए कि यह क्या कर सकता है। कहानियों और नमूनों में यात्रा योजना, दंतकथाएं लिखने से लेकर कंप्यूटर प्रोग्राम को कोड करने तक सब कुछ शामिल था। पांच दिनों के भीतर, चैटबॉट ने दस लाख से अधिक उपयोगकर्ताओं को आकर्षित किया था।

ओपन एआई का जेनरेटिव प्री-ट्रेंड ट्रांसफॉर्मर (जीपीटी) और गूगल का ट्रांसफॉर्मर से बाई-डायरेक्शनल एनकोडर रिप्रेजेंटेशन (बीईआरटी) मॉडल ट्रांसफॉर्मर आर्किटेक्चर पर आधारित हैं।

ओपन एआई का मूल्य वर्तमान में $29 बिलियन है और कंपनी ने अब तक सात चरणों में कुल $11.3 बिलियन की फंडिंग जुटाई है। जनवरी में, माइक्रोसॉफ्ट ने ओपन एआई के साथ अपनी दीर्घकालिक साझेदारी का विस्तार किया और दुनिया भर में एआई सफलताओं में तेजी लाने के लिए अरबों डॉलर के निवेश की घोषणा की।

चैट जीपीटी के लाभ

व्यवसाय और उपयोगकर्ता अभी भी चैट जीपीटी के लाभों की खोज कर रहे हैं क्योंकि कार्यक्रम का विकास जारी है। कुछ लाभों में निम्नलिखित शामिल हैं:

क्षमता : एआई-संचालित चैटबॉट नियमित और दोहराव वाले कार्यों को संभाल सकते हैं, जो कर्मचारियों को अधिक जटिल और रणनीतिक जिम्मेदारियों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मुक्त कर सकते हैं।

लागत बचत: अतिरिक्त कर्मचारियों को काम पर रखने और प्रशिक्षण देने की तुलना में एआई चैटबॉट का उपयोग करना अधिक लागत प्रभावी हो सकता है।

बेहतर सामग्री गुणवत्ता: लेखक व्याकरण संबंधी या प्रासंगिक त्रुटियों को सुधारने या सामग्री के लिए विचारों पर विचार-मंथन करने में मदद करने के लिए चैट जीपीटी का उपयोग कर सकते हैं। कर्मचारी साधारण पाठ ले सकते हैं और उसकी भाषा सुधारने या भाव जोड़ने के लिए कह सकते हैं।

शिक्षण और प्रशिक्षण: चैट जीपीटी वर्चुअल ट्यूटर के रूप में काम करने के लिए अधिक जटिल विषयों पर स्पष्टीकरण प्रदान करने में मदद कर सकता है। उपयोगकर्ता गाइड और प्रतिक्रियाओं पर कोई आवश्यक स्पष्टीकरण भी मांग सकते हैं।

बेहतर प्रतिक्रिया समय: चैट जीपीटी त्वरित प्रतिक्रियाएं प्रदान करता है, जिससे सहायता चाहने वाले उपयोगकर्ताओं के लिए प्रतीक्षा समय कम हो जाता है।

उपलब्धता में बढ़ोत्तरी: निरंतर समर्थन और सहायता प्रदान करने के लिए एआई मॉडल चौबीस घंटे उपलब्ध हैं।

बहुभाषी समर्थन : चैट जीपीटी कई भाषाओं में सम्प्रेषण कर सकता है या वैश्विक दर्शकों वाले व्यवसायों के लिए अनुवाद प्रदान कर सकता है।

वैयक्तिकरण: एआई चैटबॉट पिछले इंटरेक्शन (पारस्परिक क्रिया) के आधार पर उपयोगकर्ता की प्राथमिकताओं और व्यवहारों के अनुसार प्रतिक्रियाएं तैयार कर सकता है।

स्केलेबिलिटी: चैट जीपीटी एक साथ कई उपयोगकर्ताओं को संभाल सकता है, जो उच्च उपयोगकर्ता सहभागिता वाले अनुप्रयोगों के लिए फायदेमंद है।

प्राकृतिक भाषा समझ: चैट जीपीटी मानवीय पाठ को समझता है और उत्पन्न करता है, इसलिए यह सामग्री तैयार करने, सवालों के जवाब देने, बातचीत में शामिल होने और स्पष्टीकरण प्रदान करने जैसे कार्यों के लिए उपयोगी है।

एआई का भविष्य: चैट जीपीटी से परिवेश में बदलाव

चैट जीपीटी का भविष्य अविश्वसनीय रूप से आशाजनक है, संभावित प्रगति के साथ जो हमारे संचार, काम करने और प्रौद्योगिकी के साथ बातचीत करने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव ला सकता है। जैसे-जैसे प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और एआई क्षमताओं की प्रगति होती है, हम उम्मीद कर सकते हैं कि चैट जीपीटी ग्राहक सेवा और शिक्षा से लेकर स्वास्थ्य देखभाल और मनोरंजन तक विभिन्न उद्योगों में एक अनिवार्य उपकरण बन जाएगा। हालांकि, चैट जीपीटी की क्षमता विशाल है, इसकी पूरी क्षमता का जिम्मेदारी से दोहन करने के लिए तकनीकी प्रगति और नैतिक विचारों के बीच संतुलन बनाना आवश्यक है। जैसे ही हम चैट जीपीटी के भविष्य की इस यात्रा पर आगे बढ़ते हैं, हम एक ऐसी दुनिया की आशा कर सकते हैं जहां एआई के साथ आदर्श मानवीय सम्प्रेषण होगा, यह नई संभावनाओं को खोलेगी (अनलॉक करेगी) और बुद्धिमान मशीनों के साथ जुड़ने के तरीके को बदल देगी। चैट जीपीटी जैसी नई एआई तकनीक से हमारी रचनात्मकता को खतरा नहीं होना चाहिए, इसके बजाय हमें अपनी सोच को फिर से आकार देना चाहिए कि कैसे काम किया जाता है, नए कार्य स्थल उपकरण और नई प्रौद्योगिकियां रोजगार के अवसरों में कैसे सुधार कर सकती हैं। ❒

राजभाषा: नियम/प्रावधान

वार्षिक कार्यक्रम के मुख्य बिंदु

दिनांक 18 जनवरी, 1968 को संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित राजभाषा संकल्प में यह व्यक्त किया गया है कि:

"यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति को बढ़ाने हेतु तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए इसके उत्तरोत्तर प्रयोग हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा और किए गए उपायों एवं की गई प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद के दोनों सदनों के पटल पर रखी जाएगी और सभी राज्य सरकारों को भेजी जाएगी।"

उक्त संकल्प के उपबंधों के अनुसरण में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रति वर्ष केंद्र सरकार के कार्यालयों द्वारा कार्यान्वयन के लिए राजभाषा हिंदी के प्रसार और प्रगामी प्रयोग हेतु वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया जाता है। हिंदी बोले जाने और लिखे जाने के आधार पर देश के राज्यों/ संघ राज्य क्षेत्रों को तीन क्षेत्रों में चिह्नित किया गया है। इन तीनों क्षेत्रों यथा 'क', 'ख' और 'ग' का विवरण निम्नानुसार है-

क्षेत्र	क्षेत्र में शामिल राज्य/ संघ राज्य क्षेत्र
'क'	बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड राज्य तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली और अंडमान व निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र।
'ख'	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़ दमन व दीव और दादरा व नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र।
'ग'	'क' और 'ख' क्षेत्र में शामिल नहीं किए गए अन्य सभी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र।

वार्षिक कार्यक्रम के संबंध में निम्नलिखित बिंदु विशेष रूप से विचारणीय है:

(i) राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार के बारे में सरकार की नीति यह भी है कि सरकारी कामकाज में हिंदी को प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना से बढ़ाया जाए। लेकिन इसके साथ ही नियमों और आदेशों के अनुपालन में दृढ़ता बरती जानी चाहिए। इस संबंध में यह उल्लेखनीय है की राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के तहत केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह सुनिश्चित करे कि राजभाषा अधिनियम और राजभाषा नियमों के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित अनुपालन हो। यदि कोई कर्मचारी या अधिकारी जानबूझकर राजभाषा के बारे में लागू प्रावधानों की अवहेलना करता है तो प्रकरण से संबंधित नियमों एवं आदेशों के उल्लंघन के आधार पर कार्रवाई की जा सकती है।

(ii) यह आवश्यक है कि संसदीय राजभाषा समिति की रिपोर्ट के नौ खंडों पर जारी किए गए राष्ट्रपति के आदेशों का केंद्र सरकार के कार्यालयों द्वारा अनुपालन किया जाए।

(iii) संबंधित मंत्रालय/ विभाग वैज्ञानिक व तकनीकी साहित्य हिंदी में छपवाने के लिए आवश्यक कदम उठाएं और उसे जनसाधारण के उपयोग हेतु उपलब्ध करवाने के लिए आवश्यक उपाय करें।

(iv) हिंदी भाषा/ हिंदी टंकण/आशुलिपि के प्रशिक्षणों में न केवल तेजी लाई जाए बल्कि प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके सभी कार्मिकों को हिंदी भाषा, हिंदी टंकण/ आशुलिपि का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए प्रेरित एवं निर्देशित भी किया जाए।

(v) राजभाषा विभाग द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में केंद्र सरकार के कार्यालय नियमित रूप से अपने कर्मचारियों को नामित करें और नामित कर्मचारी को निदेश दें कि वह नियमित रूप से कक्षाओं में उपस्थित रहे और पूरी तत्परता से प्रशिक्षण प्राप्त करें तथा परीक्षाओं में बैठें। प्रशिक्षण को बीच में छोड़ने या परीक्षाओं में न बैठने वाले मामलों में कडाई बरती जाए।

(vi) केंद्र सरकार के कार्यालय केंद्रीय सेवाओं के अपने प्रशिक्षण संस्थानों में राजभाषा हिंदी में प्रशिक्षण की व्यवस्था इस स्तर पर करें जिस स्तर पर लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी में कराई जाती है और अपने विषयों से संबंधित साहित्य का सृजन हिंदी में करवाए ताकि प्रशिक्षण के बाद अधिकारी सरकारी कामकाज सुविधापूर्वक राजभाषा हिंदी में कर सकें। वार्षिक कार्यक्रम में 'क', 'ख' व 'ग' क्षेत्र के लिए केंद्र सरकार के सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अनिवार्यतः हिंदी माध्यम में प्रशिक्षण दिए जाने हेतु लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं।

(vii) प्रत्येक तिमाही में कार्यशाला का आयोजन कर सभी

कार्मिकों को राजभाषा नीति की जानकारी दी जाए जिससे वह अपने दायित्वों को अच्छी तरह निभा सकें।

(viii) केंद्र सरकार के कार्यालय अपने विषयों से संबंधित संगोष्ठियां हिंदी माध्यम से आयोजित करें।

(ix) यह सुनिश्चित किया जाए की हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीतने वाले अधिकारी/ कर्मचारी अपना अधिक से अधिक सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करें।

(x) मंत्रालयों/ विभागों के संबंधित अधिकारियों व वरिष्ठ अधिकारियों (उप सचिव/ निदेशक/ संयुक्त सचिव) द्वारा केंद्र सरकार के कार्यालयों का समय-समय पर राजभाषा संबंधी निरीक्षण राजभाषा अनुभाग के अधिकारियों के साथ किया जाए।

(xi) तिमाही प्रगति रिपोर्ट प्रत्येक तिमाही के समाप्ति के 30 दिनों के अंदर राजभाषा विभाग को ऑनलाइन उपलब्ध करा दी जाए। इसी प्रकार वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट प्रत्येक वर्ष 30 जून तक अवश्य उपलब्ध करा दी जाए। केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों से अपेक्षित है कि तिमाही प्रगति रिपोर्ट व वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट ऑनलाइन ही भेजें।

(xii) केंद्र सरकार के कार्यालयों द्वारा जो भी विज्ञापन अंग्रेजी/ क्षेत्रीय भाषाओं में दिए जाते हैं उन्हें हिंदी भाषा में भी अनिवार्य रूप से प्रकाशित कराया जाए।

(xiii) केंद्र सरकार के कार्यालयों द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि सभी कंप्यूटरों में यूनिकोड की सुविधा हो ताकि उन पर हिंदी में काम किया जा सके।

(xiv) यह भी सुनिश्चित किया जाए कि अनुवाद कार्य से जुड़े सभी अधिकारी/ कर्मचारी राजभाषा विभाग द्वारा विकसित कराए गए कंठस्थ सॉफ्टवेयर/ टूल का अधिक से अधिक उपयोग करें तथा बार-बार किए जाने वाले कार्यों को इसमें फीड करें। ❐

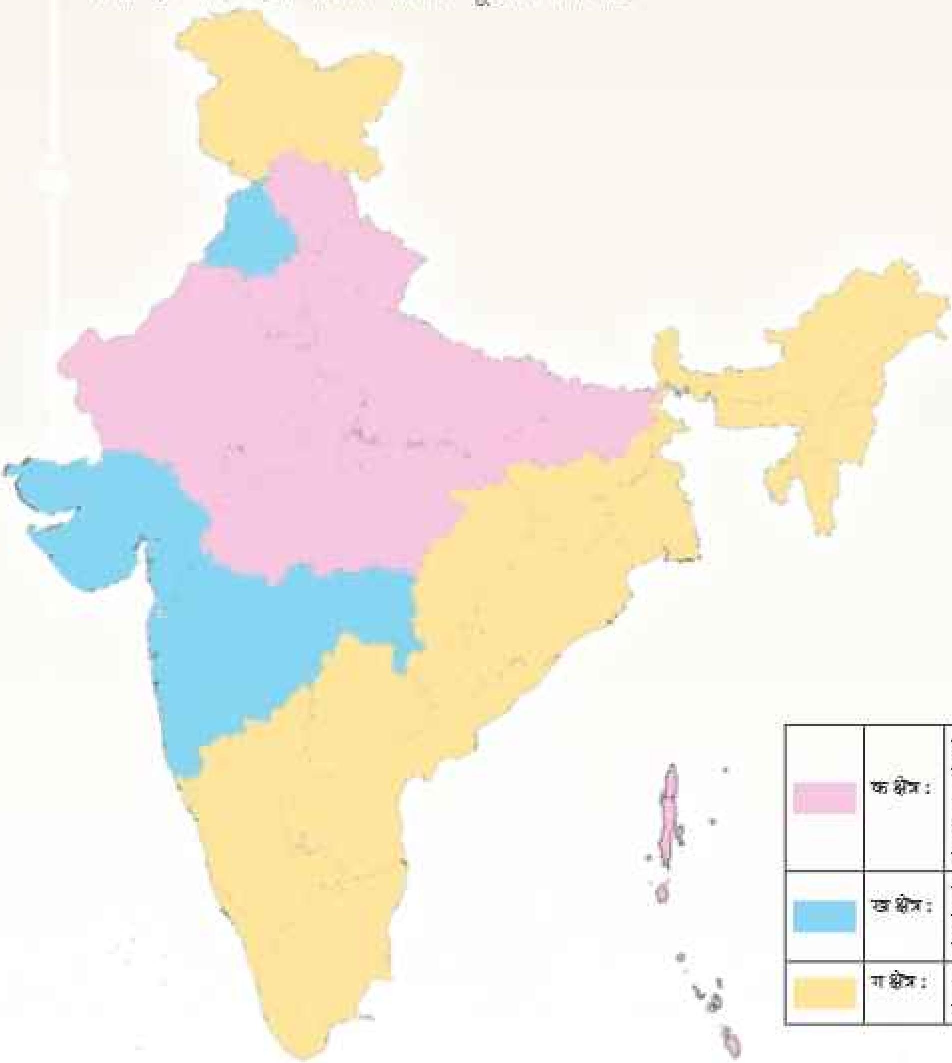

	क क्षेत्र :	बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, झारखंड, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड राज्य तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली और अंडमान व निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र
	ख क्षेत्र :	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन व दीव और दादर व नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र
	ग क्षेत्र :	'क' और 'ख' क्षेत्र में शामिल न किए गए अन्य सभी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र

पारिभाषिक शब्दावली

1	*dies non*	अकार्य दिवस, अदिन
2	inoperative	अप्रवर्तनशील, अप्रवर्ती
3	sabbatical leave	विश्राम छुट्टी
4	sundry	विविध, फुटकर
5	earmarked	उद्दिष्ट
6	in the course of action	कार्रवाई के दौरान
7	negotiated contract	बातचीत से तय किया गया ठेका
8	in confirmation of	की पुष्टि में
9	disregarding the facts	तथ्यों की उपेक्षा करते हुए
10	draft is concurred in	प्रारूप से सहमति है, मसौदे से सहमति है
11	during the course of discussion	चर्चा के दौरान
12	address all concerned	सर्वसंबंधित को लिखा जाए
13	governed by the rules	नियमों द्वारा शासित
14	*ipso jure*	विधित:
15	noted for future guidance	भावी मार्गदर्शन के लिए नोट कर लिया
16	accounts payable	देनदारी खाते
17	admissible limit	स्वीकार्य सीमा
18	appreciation of currency	मुद्रा मूल्य-वृद्धि
19	buy-back	वापस खरीद, प्रति क्रय
20	bad debt	अशोध्य ऋण
21	blank endorsement	कोरा पृष्ठांकन
22	blocked account	अवरूद्ध खाता
23	indemnity bond	क्षतिपूर्ति बॉण्ड
24	break-even point	लाभ-अलाभ बिंदु, संतुलन स्तर बिंदु
25	bearer bond	धारक बॉण्ड
26	benchmark	तल चिह्न, मानक

हिंदी साहित्य

हिंदी के मुहावरे

आँख का तारा, आँख की पुतली

अर्थ: बहुत प्यारा

प्रयोग: यह बच्चा मेरी आँखों का तारा है।

खून का प्यासा

अर्थ: जानी दुश्मन होना

प्रयोग: उसकी क्या बात कर रहे हो, वह तो मेरे खून का प्यासा हो गया है।

खून ठंडा होना

अर्थ: उत्साह से रहित होना या भयभीत होना

प्रयोग: आतंकवादियों को देखकर मेरा तो खून ठंडा पड़ गया।

गढ़ फतह करना

अर्थ: कठिन काम करना

वाक्य प्रयोग: आई.पी.एस पास करके दीक्षा ने सचमुच गढ़ फतह कर लिया।

घर घाट एक करना

अर्थ: कठिन परिश्रम करना

प्रयोग: नौकरी के लिए संजय ने घर घाट एक कर दिया।

दिन गंवाना

अर्थ: समय नष्ट करना

प्रयोग: बेरोजगारी में रोहन आजकल यूं ही दिन गंवा रहा है।

हिंदी की लोकोक्ति

जूँ के डर से गुदड़ी नहीं फेंकी जाती

अर्थ: साधारण कष्ट या हानि के डर से कोई व्यक्ति काम नहीं छोड़ देता।

जैसा कन भर वैसा मन भर

अर्थ: थोड़ी-सी चीज की जांच करने से पता चल जाता है कि पूरी सामग्री कैसी है।

अंत भला सो सब भला

अर्थ: कार्य का परिणाम सही हो जाए तो सारी गलतियां भुला दी जाती हैं।

अंधा बगुला कीचड़ खाय

अर्थ: भाग्यहीन को सुख नहीं मिलता।

अधजल गगरी छलकत जाए

अर्थ: ओछा आदमी थोड़ा गुण या धन होने पर इतराने लगता है।

जैसा मुँह वैसा तमाचा

अर्थ: जैसा आदमी होता है वैसा ही उसके साथ व्यवहार किया जाता है।

पर्यायवाची शब्द

इच्छुक – अभिलाषी, लालायित, आतुर, उत्सुक

उचित – ठीक, मुनासिब, संगत, उपयुक्त

ऊधम – उपद्रव, उत्पाद, हुल्लड़

आँसू – अश्रु, नेत्रनीर, नयनजल, नेत्रवारि

ओज – बल, ताकत, जोर, दम, पराक्रम

गणेश – विनायक, एकदन्त, गजानन, लम्बोदर

झरना – प्रपात, स्त्रोत, उत्स, प्रस्त्रवण

दंगा – उत्पात, उपद्रव, झगड़ा, फ़साद

रश्मि – कर, अंशु, मयूख, किरण

विलोम शब्द

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अकर्मण्य	कर्मण्य	उत्कृष्ट	नीच
अगम	सुगम	उदय	अस्त
अधम	उत्तम	उपयोगी	अनुपयोगी
अति	अल्प	उपजाऊ	ऊसर
आच्छादित	अनाच्छादित	एकमुखी	बहुमुखी
आधुनिक	प्राचीन	एकांगी	सर्वांगीण
उत्कर्ष	अपकर्ष	औपचारिक	अनौपचारिक

तीस्ता नदी की प्रलयंकारी बाढ़ - एक प्राकृतिक आपदा एवं एनएचपीसी परियोजनाओं पर इसका प्रभाव

शैलेन्द्र सिंह बरिहा, उप महाप्रबंधक (भू-विज्ञान)
तीस्ता VI परियोजना, सिंगताम (सिक्किम)

पूर्वी हिमालय में बसा राज्य, सिक्किम, अपने मनमोहक सौंदर्य और शांत वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। इसकी जीवन रेखा के रूप में जानी जाने वाली तीस्ता नदी, ब्रह्मपुत्र नदी की एक प्रमुख सहायक नदी है। भारतीय राज्यों सिक्किम और पश्चिम बंगाल से होकर बहने वाली तीस्ता नदी इस क्षेत्र के सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्व रखती है। यह सिक्किम की सबसे बड़ी नदी है और गंगा के बाद पश्चिम बंगाल की दूसरी सबसे बड़ी नदी है।

तीस्ता नदी का उद्गम स्थल समुद्र तल से लगभग 5,500 मीटर उत्तरी सिक्किम की हिमालय पर्वत श्रृंखला में है और अपने उद्गम स्थल से निकल कर यह सिक्किम के खूबसूरत परिदृश्यों से होकर बहती है। दक्षिण दिशा की ओर यह तीस्ता बाज़ार के पास पश्चिम बंगाल में प्रवेश करती है और आगे बहते हुए सिलीगुड़ी शहर से हो कर ब्रह्मपुत्र नदी में विलीन हो जाती है।

प्रायः शांत रूपेण तीस्ता नदी में, 3-4 अक्टूबर 2023 की आधी रात को आई अचानक बाढ़ ने इस क्षेत्र को आश्चर्यचकित कर दिया और प्रकृति का प्रकोप दिखाते हुए क्षेत्र में भारी तबाही मचाई। पानी की तेज़ लहरों के कारण इमारतें, सड़कें और कई पुल धवस्त हो गए, राज्य का प्रमुख हिस्सा अन्य मैदानी क्षेत्र से कट गया। इस फ्लैश फ्लड ने चुंगथांग, सिंगताम, रंगपो, मेली, तीस्ता बाजार आदि घनी आबादी वाले स्थानों को अपनी चपेट में ले लिया, जिससे नदी के किनारे बसे निवासियों के लिए जान-माल का भारी नुकसान हुआ। इस प्राकृतिक आपदा के गंभीर आर्थिक परिणाम भी हुए। पर्यटन उद्योग, जो तीस्ता की प्राकृतिक सुंदरता पर अत्यधिक निर्भर करता

सिक्किम राज्य में तीस्ता नदी घाटी

है, को भी एक असहनीय आघात लगा। राज्य को जोड़ने वाले करीब 14 पुलों के पूरी तरह से क्षतिग्रस्त होने एवं बह जाने के कारण, रिसॉर्ट और पर्यटक स्थल दुर्गम हो गए।

अचानक आई बाढ़ ने क्षेत्र में महत्वपूर्ण विभिन्न प्रतिष्ठानों के कामकाज पर भी कहर बरपाया जिसमें भारतीय सेना, एनएचपीसी लिमिटेड, सीमा सड़क संगठन (बीआरओ), पावर ग्रिड, एन.एच.आई.डी.सी.एल, फार्मास्यूटिकल कंपनियां, शैक्षणिक संस्थान, इरकॉन इत्यादि शामिल हैं। इसमें मुख्य रूप से सिक्किम ऊर्जा लिमिटेड द्वारा विकसित तीस्ता-3 पावर स्टेशन, जिसे पहले तीस्ता ऊर्जा लिमिटेड के नाम से जाना जाता था, को गंभीर क्षति का सामना करना पड़ा और उसका बाँध पूर्ण रूप से ध्वस्त हो गया। इसके अलावा, 96 मेगावाट की डिक्चु हाइड्रो इलेक्ट्रिक परियोजना, जो तीस्ता की एक सहायक नदी में स्थित है, को भी भारी क्षति पहुंची।

तीस्ता नदी पर, एनएचपीसी लिमिटेड के पहले से ही संचालित तीस्ता-V, तीस्ता लो डैम-III, तीस्ता लो डैम-IV पावर स्टेशनों के साथ-साथ सिक्किम के सिंगताम के पास निर्माणाधीन तीस्ता-VI परियोजना में चल रहे निर्माण कार्यों पर इस बाढ़ का भयावह प्रभाव पड़ा। इसके परिणामस्वरूप विद्युत उत्पादन में बाधा, बुनियादी ढांचे को नुकसान और बाँध संरचनाओं की सुरक्षा संबंधी चिंताएं उत्पन्न हो गई।

तीस्ता नदी पर पश्चिम बंगाल में एनएचपीसी लिमिटेड के पावर स्टेशन तीस्ता लो डैम-III और तीस्ता लो डैम-IV को तुलनात्मक रूप से कम नुकसान हुआ जबकि सिक्किम में स्थित तीस्ता-V

सिक्किम राज्य में तीस्ता नदी पर एनएचपीसी परियोजनाएं

पावर स्टेशन को इस बाढ़ ने पूर्ण रूप से निष्क्रिय कर दिया। बाढ़ के पानी के अचानक अतिप्रवाह से बाँध के शीर्ष से 4 से 5 मीटर ऊपर तक जल स्तर बढ़ गया और इसके नियंत्रण ब्लॉकों, स्पिलवे, एचआरटी, भूमिगत संरचनाओं, सर्ज शाफ्ट, पावर हाउस और बाँध के शीर्ष तक पहुंच मार्गों आदि को अत्यधिक नुकसान पहुंचाया।

तीस्ता-V पावर स्टेशन, बालूटार में पानी का स्तर लगभग 15-16 मीटर तक बढ़ गया था। बालूटार का सुंदर परिदृश्य, जो कभी हरे-भरे हरियाली और सुरम्य दृश्यों से सुशोभित था, अब नए बाढ़ के मैदानों में बदल गया था। बाढ़ के पानी की तीव्रता के कारण दोनों किनारों पर मलबा जमा हो गया, जिससे इसका भूदृश्य पूरी तरह से बदल गया है। बालूटार में तीस्ता नदी के बाएं किनारे पर स्थित केंद्रीय विद्यालय भी इस बाढ़ के प्रकोप से नहीं बच पाया। कभी छात्रों और शिक्षकों से गुलजार रहने वाला परिसर मलबे से भर गया था। कक्षाएं, प्रयोगशालाएं और प्रशासनिक क्षेत्र अत्याधिक क्षतिग्रस्त हो गए। बाएं किनारे पर स्थित प्रतिष्ठान, जैसे सेंट्रल स्टोर, आई.आर.बी.एन कैंप, खेल मैदान, फायर स्टेशन, मैकेनिकल वर्कशॉप, बैडमिंटन कोर्ट, केंद्रीय विद्यालय आदि अब प्राकृतिक आपदा की गंभीर याद दिलाते हैं। दोनों तटों को जोड़ने वाले एकमात्र पुल के ढह जाने से दाएं किनारे पर स्थित आवासीय कालोनी में रहने वाले कार्मिक और उनके परिवार एकदम से अलग-थलग हो गए। इस आपदा ने पानी की आपूर्ति, बिजली, शैक्षणिक संस्थानों, आदि जैसी आवश्यक सेवाओं व मूलभूत सुविधाओं तक निवासियों की पहुंच खत्म कर दी थी। पुल की अनुपस्थिति ने न केवल गतिशीलता के मामले में बल्कि आपातकालीन प्रतिक्रिया और सामुदायिक कनेक्टिविटी के लिए भी चुनौती पेश की थी। क्षेत्र में बाढ़ के बाद कुछ दिनों तक मोबाइल नेटवर्क के बाधित होने से समस्या और भी अधिक बढ़ गई थी।

इसी तरह, तीस्ता-VI परियोजना के निर्माण स्थल पर आधी रात को अचानक बाढ़ का पानी बढ़ना पूरी तरह से अप्रत्याशित था और इस तरह निर्माण कार्य में लगी एजेंसियों की मशीनें बह गई जो बैराज क्षेत्र में रात को काम पर तैनात थी। तीस्ता-VI परियोजना के बैराज क्षेत्र में बाढ़ का स्तर, सामान्य से लगभग 17 मीटर अधिक तक बढ़ गया था। बाढ़ वाले क्षेत्रों से श्रमिकों और मशीनरी को बचाना एक कठिन व चुनौतीपूर्ण काम था क्योंकि पानी के तेज बहाव, मलबे, लकड़ी के लट्ठों और जलमग्न खतरों के कारण गंभीर बाधाएं उत्पन्न हो गई थी। तीस्ता-VI परियोजना के निर्माणाधीन पावर हाउस की साइट पर निर्माण श्रमिकों, सुरक्षा कर्मियों, ठेकेदारों और एनएचपीसी कार्मिकों आदि के आवास थे। पावर हाउस स्थल पर बाढ़ के पानी द्वारा लाए गए मलबे के कारण क्षति हुई। कनेक्टिंग बेली ब्रिज के पूरी तरह बह जाने के कारण इस साइट पर रहने वाले निवासी कई दिनों तक वहीं फंसे

तीस्ता V बाँध स्थल और जलाशय क्षेत्र के आसपास क्षेत्र में बाढ़ से हुआ नुकसान

रहे और बाहरी दुनिया से अलग पड़ गए। बिना किसी कनेक्टिविटी और सीमित संसाधनों के बीच, फंसे हुए श्रमिकों और अधिकारियों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। भोजन, पानी और चिकित्सीय सहायता जैसी दैनिक आवश्यकताएं दुर्लभ हो गई।

तीस्ता-VI बराज और पावर हाउस क्षेत्र में बाढ़ के कारण हुए नुकसान की तस्वीरें

बाढ़ के कारण तीस्ता नदी के ऊंचे इलाकों में स्थित सेना का गोला-बारूद डिपो भी क्षतिग्रस्त हो गया था और हथियारों, गोला-बारूद, गैर-विस्फोटित सामग्रियां बाढ़ के पानी के साथ बहकर निचले इलाकों में जमा हो गई। ऐसी सामग्रियों के गलत इस्तेमाल और दुर्घटनाओं की संभावना के डर से प्रभावित आबादी में दहशत की स्थिति पैदा हो गई थी। स्थिति की गंभीरता को पहचानते हुए, भारतीय सेना ने डर को कम करने और प्रभावित समुदायों को आश्वस्त करने के लिए तुरंत हस्तक्षेप किया। बह गए गोला-बारूद और विस्फोटक सामग्री की मौजूदगी के कारण बहाली

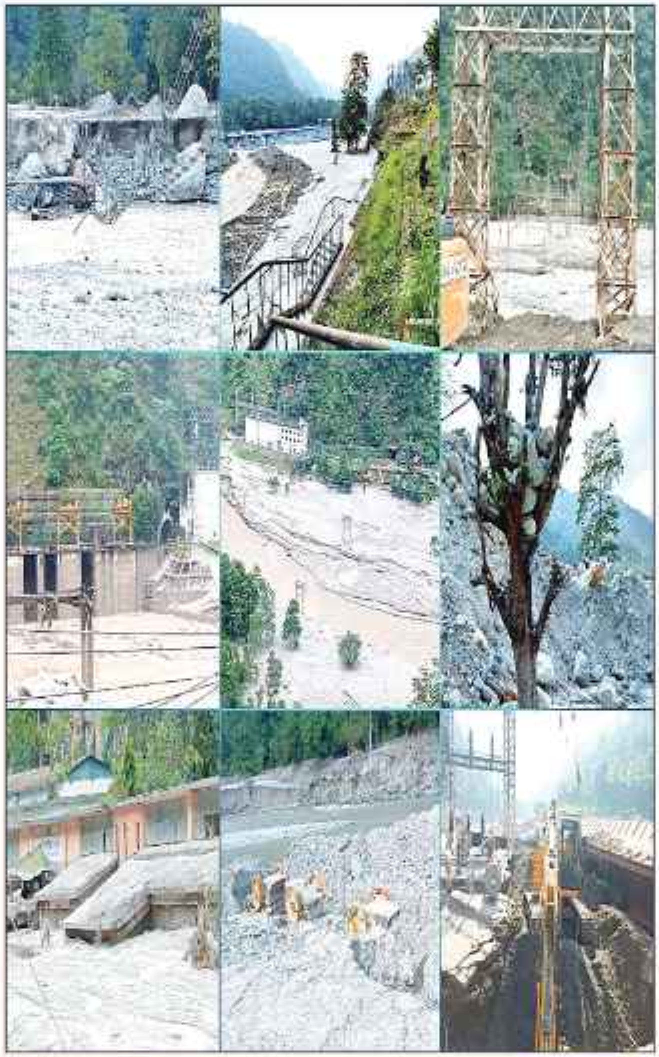

टी.आर.टी आउटलेट और आवासीय कालोनी- बालूटार में बाढ़ के कारण हुए नुकसान

कार्यों को अस्थायी रूप से रोकना आवश्यक हो गया। श्रमिकों और स्थानीय आबादी दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए, इन खतरनाक वस्तुओं का पता लगाने और उनके सुरक्षित रूप से निपटान करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

वैज्ञानिकों और संबंधित अधिकारियों ने दावा किया कि उत्तरी सिक्किम में दक्षिण लोनाक झील में हुए ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड (ग्लोफ) के कारण तीस्ता नदी में अचानक बाढ़ आई थी। इस बाढ़ ने स्थानीय लोगों के मन मस्तिष्क में भय और अविश्वास की स्थिति उत्पन्न कर दी थी। निवासियों की पुरानी पीढ़ियां पांच दशक पहले इसी तारीख को हुई ऐसी ही बाढ़ की घटना को याद करती हैं। बाढ़ से हुई तबाही की यादें पुराने स्थानीय लोगों के दिमाग में स्पष्ट रूप से अंकित हैं। उस भयावह रात को आई विनाशकारी बाढ़ ने उन लोगों पर एक अमिट छाप छोड़ी थी।

इस आपदा की भयावहता को याद रखना आवश्यक है। तीस्ता नदी का ऐसा विकराल और विनाशकारी रूप देखना जिंदगी के

पुनरुद्धार कार्य प्रगति पर

बाढ़ के बाद गोला-बारूद की बरामदगी और भारतीय सेना द्वारा निष्क्रिय करने की प्रक्रिया

कटु अनुभव में शुमार है। इस भीषण प्राकृतिक आपदा ने किसी न किसी रूप में लोगों के जीवन, संस्थानों तथा विकास कार्यों को प्रभावित किया है। प्राकृतिक आपदा से उबरने के लिए जैसे-जैसे समय बीतता जाएगा, यादें धुंधली होती जाएंगी और बाढ़ का प्रभाव कम होना शुरू हो जाएगा। एनएचपीसी के अधिकारियों, उनके परिवार के सदस्यों और बच्चों के पास इस कठिन समय में टूटने के सभी कारण थे, लेकिन सभी ने कई बाधाओं के बावजूद, दृढ़ता और एकजुट होकर इस चुनौती का सामना किया।

एनएचपीसी के लिए आपदा के बाद पुनर्स्थापना कठिन रही है और अब समय-समय पर मुख्य शहर सिलीगुड़ी को जोड़ने वाला राष्ट्रीय राजमार्ग मरम्मत कार्यों के कारण बंद रहता है। हालांकि, तीस्ता-V पावर स्टेशन की बहाली का काम युद्ध स्तर पर शुरू हो चुका है और तीस्ता-VI परियोजना के लिए उत्खनन कार्यों की प्रगति जटिल भू-वैज्ञानिक परिवेश में समय के साथ गति पकड़ रही है। आशा है इस घटना से उभरते हुए एनएचपीसी लिमिटेड हमेशा ही तरह चुनौतियों से पार पाएगी और कार्य की उत्कृष्ठता की ओर अग्रसर रहेगी। ❒

हे भ्रष्टाचार, तू हाहाकार

भारत पर उस दिन काला बादल छाया था,
भ्रष्टाचार ने जब इस देश में प्रवेश पाया था।
उसने हर सीने में जब नोटों की आग लगाई थी,
रुपयों की इस दुनिया में एक नई भागम-भाग लगाई थी।

जन जन ने जब ठाना था कि खूब पैसे कमाएंगे,
कह रहे थे कुछ लोग के हम नहीं ललचाएंगे।
लेकिन टेबल के नीचे से जब नोटों की बारिश होती है,
अच्छे से अच्छे दिल में भी इक ख्वाहिश होती है।

रिश्तेदार जब जुल्म करें, तो मदद तुरंत बुलाते हैं।
भले-भले जज वकील भी, जाने क्यों रिश्वत खाते हैं।
ये भ्रष्टाचार, एक नरसंहार, देश पर है प्रहार,
पर यह राक्षस रूप मरके भी बार-बार, रह जाता है अपार।

शकुनि का तू ही पासा है,
चरित्र तेरा बड़ा ख़ासा है।
रुपयों की तू अभिलाषा है,
कोतवाल तक ने तुझे तलाशा है।

रिश्तों की वो गांठ भी तू है,
पुश्तों की वो ऐंठ भी तू है,
और ब्यूरोक्रेट्स की धौंस भी तू है।
दुष्ट कर्म का सम्मान भी तू है,
राजनीति की शान भी तू है।
उच्च कुल खानदान भी तू है,
और भारत देश का पतन भी तू है।

भ्रष्ट नेता जन को निकाला जाए,
लालच और घमंड संभाला जाए।
जन जन तक खबर फैलाया जाए,
कि अब भ्रष्टाचार जड़ से मिटाया जाए।

बस इतना ही कह पाएंगे।
तुझको नहीं सहन कर पाएंगे,
के बार बार दोहराएंगे,
हे भ्रष्टाचार तुझे मिटाएंगे।

(मास्टर रिशित वीरसिया)
सुपुत्र विनय कुमार दिवाना, वरिष्ठ प्रबंधक (सिविल)
बैरा स्यूल पावर स्टेशन, सुरंगिनी (हिमाचल प्रदेश)

महीन सौर सेल - ऊर्जा का नया स्रोत

शुभ्रा शाह, समूह वरिष्ठ प्रबंधक (ई. एडं सी.)
चमेरा-II पावर स्टेशन, चम्बा (हिमाचल प्रदेश)

वैज्ञानिकों ने अल्ट्रालाइट फैब्रिक सौर सेल विकसित किए हैं, जो किसी भी सतह को त्वरित और आसानी से ऊर्जा स्रोत में बदल सकते हैं। ये सौर सेल, जिन्हें पावर फैब्रिक के रूप में भी प्रयोग किया जा सकता है, मानव बाल जीतने पतले होते हैं और हल्के कपड़े से चिपके होते हैं, जिससे उन्हें किसी सतह पर स्थापित करना आसान होता है।

दस्ताने पहने हाथों में सौर कोशिकाओं की 6x5 ग्रिड वाली एक शीट

इन सौर सेलों का वजन पारंपरिक सौर सेलों की तुलना में लगभग 100 गुना कम होता है और प्रति किलोग्राम लगभग 18 गुना अधिक बिजली पैदा कर सकते हैं। ये सेमीकंडक्टर स्याही से बने होते हैं और बड़े क्षेत्र के विनिर्माण के लिए उनका उपयोग किया जा सकता है।

इन सौर सेलों को कई अलग-अलग सतहों पर लेमिनेट किया जा सकता है, जैसे कि नावों की पाल पर, आपदा प्रबंधन कार्यों में या ड्रोन के पंखों पर। ये रक्षा बलों के लिए मददगार हो सकते हैं और इन्हें न्यूनतम स्थापना आवश्यकताओं के साथ आसानी से निर्मित वातावरण में एकीकृत किया जा सकता है।

ये नवीन सौर सेल की बिजली रूपांतरण दक्षता अधिक और इनकी लागत सीमित होती है। इनकी तुलना में पारंपरिक सिलिकॉन सौर सेल अधिक नाजुक होते हैं और इन्हें कांच में बंद रखा जाता है, जो उनके उपयोग को सीमित करता है।

'वन लैब' टीम ने पतली-फिल्म सामग्री का उपयोग करके हल्के सौर सेलों का उत्पादन किया था, जो इतने हल्के थे कि वे साबुन के बुलबुले के ऊपर बैठ सकते थे। इन अति पतली सौर कोशिकाओं को वैक्यूम आधारित प्रक्रियाओं से निर्मित किया गया था, जो महंगा हो सकता है और बड़े पैमाने पर इनका उत्पादन चुनौतीपूर्ण भी हो सकता है। सौर कोशिकाओं को विकसित करने के लिए, उन्होंने स्याही-आधारित सामग्रियों और स्केलेबल फैब्रिकेशन तकनीकों का उपयोग किया। रिसर्च लैब के क्लीन रूम में काम करते हुए, उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक सामग्री की परतों को तैयार सब्सट्रेट पर जमा करने के लिए एक स्लॉट-डाई कोटर का उपयोग किया। इसके बाद, उन्होंने सौर मॉड्यूल को पूरा करने के लिए संरचना पर इलेक्ट्रोड जमा किया।

शोधकर्ता ने एक हल्के, लचीले और उच्च शक्ति वाले सब्सट्रेट की खोज की, जिस पर सौर कोशिकाओं का लगाया जा सके। उन्होंने कपड़े को इष्टतम साधन के रूप में पहचाना क्योंकि कपड़ा अतिरिक्त कम वजन के साथ-साथ यांत्रिक लचीलापन और सामान्य लचीलापन प्रदान करते हैं।

शोधकर्ताओं ने जब डिवाइस का परीक्षण किया तो पाया कि फ्रीस्टैंडिंग स्थिति में यह 730 वाट प्रति किलोग्राम बिजली पैदा कर सकता है और उच्च शक्ति वाले डायनेमा कपड़े पर लगाया जाए तो लगभग 370 वाट प्रति किलोग्राम बिजली उत्पन्न कर सकता है।

मैसाचुसेट्स शहर में एक सामान्य छत पर सौर स्थापना लगभग 8,000 वाट की होती है, जिसे बढ़ाने के लिए ये फैब्रिक फोटोवोल्टिक एक घर की छत पर केवल 20 किलोग्राम (44 पाउंड) के भार की बढ़ोतरी करेंगे।

एमआईटी शोधकर्ताओं ने अपने उपकरणों के टिकाऊपन का परीक्षण किया और पाया कि कपड़े के सौर पैनल को 500 से अधिक बार रोल करने और खोलने के बाद भी, कोशिकाओं ने अपनी प्रारंभिक बिजली उत्पादन क्षमताओं का 90 प्रतिशत से अधिक बरकरार रखा। ये सौर सेल पारंपरिक सेल की तुलना में कहीं अधिक हल्के और अधिक लचीले हैं, जिससे उन्हें बाहरी वातावरण के प्रभाव से बचाने के लिए किसी अन्य सामग्री में बंद करने की आवश्यकता होगी।

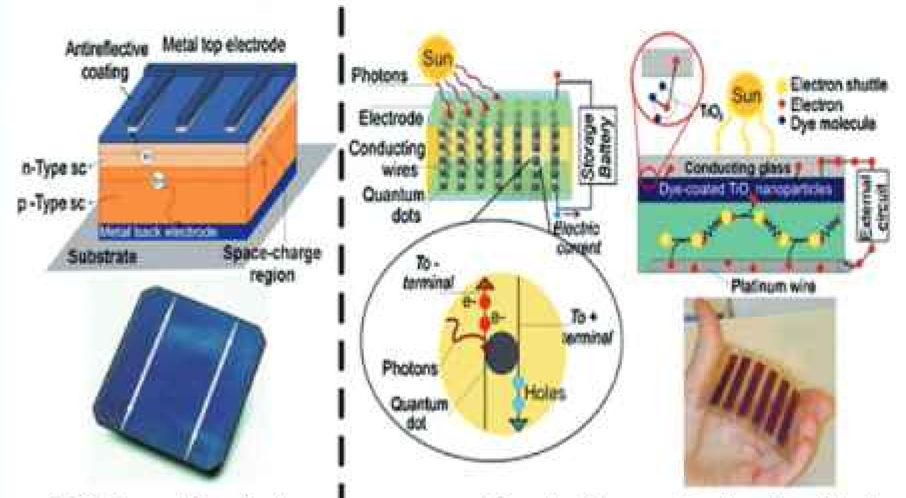

सिलिकॉन आधारित सौर सेल | क्वान्टम आधारित सौर सेल | डाई-संवेदनशील सौर सेल

पारंपरिक सौर सेल | ***गैर-संरचित सौर सेल***

किंतु इन सौर कोशिकाओं को भारी ग्लास के खोल चढ़ाने से (जैसा कि पारंपरिक सिलिकॉन सौर कोशिकाओं के साथ किया जाता है), इस क्षेत्र में हो रही उन्नति की महत्ता कम हो जाएगी, इसीलिए अनुसंधान टीम वर्तमान में अल्ट्राथिन पैकेजिंग को विकसित करने का प्रयास कर रही है, जो केवल वर्तमान अल्ट्रालाइट उपकरणों के वजन को आंशिक रूप से बढ़ाएगी।

इस शोध को आंशिक रूप से एमआईटी एनर्जी इनिशिएटिव, यू.एस. नेशनल साइंस फाउंडेशन और कनाडा के प्राकृतिक विज्ञान और इंजीनियरिंग अनुसंधान परिषद के माध्यम से एनी एस.पी.ए. द्वारा वित्त पोषित किया गया है।

निष्कर्ष

यह कहा जा सकता है कि यह नई तकनीक सौर सेलों के व्यापक प्रयोग और संभावनाओं को नए परिवेश में ले जा रही है। अल्ट्रालाइट फैब्रिक सौर सेलों का उदय न सिर्फ ऊर्जा स्रोतों को विस्तारित कर रहा है बल्कि इसका आधुनिकीकरण भी ऊर्जा संयंत्रों को स्थानांतरित कर रहा है।

ये सौर सेल पारंपरिक सेलों की तुलना में न केवल अधिक हल्के हैं बल्कि उनकी ऊर्जा उत्पादन क्षमता भी अधिक है। इसके अलावा, इनके उपयोग से स्थानीय और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी सकारात्मक प्रभाव हो सकता है क्योंकि यह एक प्राकृतिक, अस्थायी ऊर्जा स्रोत की तुलना में सतत और विश्वसनीय ऊर्जा विकल्प प्रस्तुत करते हैं।

हमें नए और सुरक्षित पर्यावरणीय तकनीकों के प्रोत्साहन, उनके विकास को बढ़ावा देने और उनके विभिन्न लाभों को समाज में व्यापक स्थानीय व वैश्विक स्तर पर समझाने की आवश्यकता है। इस अद्भुत प्रौद्योगिकी के विकास से, हम एक स्वच्छ, सतत और उत्पादक ऊर्जा स्रोत की ओर अग्रसर हो रहे हैं, जो समृद्धि, सुरक्षा और पर्यावरणीय संतुलन को साधने में मदद कर सकता है। ❒

प्रेरक प्रसंग

धैर्य की परीक्षा

विदेश में स्वामी विवेकानंद ट्रेन के फर्स्ट क्लास डिब्बे में बैठे हुए थे। उनके पास दो अंग्रेज आकर बैठ गए। एक साधु को फर्स्ट क्लास में देखकर दोनों अंग्रेज अपनी भाषा में साधु-संतों की बुराई करने लगे। दोनों अंग्रेज कह रहे थे कि साधु दूसरों के पैसों पर फर्स्ट क्लास डिब्बे में घूमते हैं। दोनों अंग्रेज साधुओं की लगातार बुराई करते रहे। अंग्रेज सोच रहे थे कि ये साधु अंग्रेजी नहीं जानता होगा।

कुछ देर बाद ट्रेन का गार्ड आया तो विवेकानंद जी ने उससे अंग्रेजी में बात की। ये देखकर दोनों अंग्रेज हैरान हो गए। दोनों अंग्रेजों को ये मालूम हो गया कि ये स्वामी विवेकानंद हैं। इसके बाद दोनों ने स्वामी जी से क्षमा मांगी। अंग्रेजों ने पूछा कि आप अंग्रेजी जानते हैं तो अभी तक आप चुप क्यों थे।

स्वामी जी ने कहा "जब मेरे सामने मेरी आलोचना हो रही थी तो इससे मुझे बहुत फायदा हुआ, ऐसी स्थिति में मेरी सहनशक्ति और निखरती है। आपके अपने विचार हैं, आपने प्रकट कर दिए। मेरा अपना निर्णय है कि मुझे धैर्य नहीं छोड़ना है। मैं आप पर गुस्सा करता तो नुकसान आपका नहीं, मेरा ही होता।"

जब कोई हमारी बुराई करता है, तब हमारे धैर्य की असली परीक्षा होती है। बुरी बातों को सहन करने की शक्ति हमें कई समस्याओं से बचा लेती है।

-साभार

राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियां
(2024-2025 अर्धवार्षिक)

राजभाषा कार्यान्यवन समिति की बैठकें

निगम में भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए पूरी निष्ठा से प्रयास करते हुए कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा के उतरोत्तर प्रयोग को बढ़ावा दिया गया है।

निगम मुख्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों का नियमित रूप से आयोजन किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही बैठक का आयोजन तत्कालीन माननीय अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री राजेन्द्र प्रसाद गोयल की अध्यक्षता में दिनांक 21 मई 2024 को हाइब्रिड मोड में किया गया।

वर्ष 2024-25 की दूसरी तिमाही बैठक का आयोजन माननीय अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री राज कुमार चौधरी की अध्यक्षता में दिनांक 30 अगस्त 2024 को किया गया।

इन बैठकों में सभी निदेशकगण, निगम मुख्यालय के सभी विभागाध्यक्ष प्रत्यक्ष रूप से तथा निगम की परियोजनाओं/ पावर स्टेशनों/ कार्यालयों के प्रभारी ऑनलाइन माध्यम से शामिल हुए। बैठकों में निगम मुख्यालय के सभी विभागों के साथ-साथ परियोजनाओं/ पावर स्टेशनों/ क्षेत्रीय व संपर्क कार्यालयों में राजभाषा प्रगति की समीक्षा की गई।

काव्य गोष्ठी का आयोजन

राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के लिए और कार्मिकों के बीच हिंदी भाषा के प्रति अनुराग बढ़ाने के उद्देश्य से 07 जून 2024 को हिंदी काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस काव्य गोष्ठी में निगम मुख्यालय में पदस्थ अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा काव्य पाठ किया गया। इस काव्य गोष्ठी में सुप्रसिद्ध कवि डॉ. प्रवीण कुमार 'राही' और कवियित्री सुश्री डॉ. शुभम त्यागी को आमंत्रित किया गया था। काव्य गोष्ठी में श्री प्रिय रंजन, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) व प्रभारी (राजभाषा) भी उपस्थित थे।

हिंदी कार्यशाला

निगम मुख्यालय तथा परियोजनाओं/ पावर स्टेशनों/ कार्यालयों में पदस्थ अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए कुल 02 हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन हिंदी कार्यशालाओं में प्रतिभागियों को राजभाषा नीति, नियम आदि के साथ साथ कार्यान्वयन पर प्रशिक्षण दिया गया और नवीनतम हिंदी साफ्टवेयरो के संबंध में जानकारी प्रदान की गई।

एक विशेष हिंदी कार्यशाला नव नियुक्त कार्मिकों के लिए भी आयोजित की गई, जिसमें राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन पर और अपेक्षा एवं उत्तरदायित्वों पर विस्तार से चर्चा की गई।

नराकास (का) फरीदाबाद के तत्वावधान में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फरीदाबाद के सदस्य कार्यालयों के लिए 02 हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालों में नराकास सदस्य कार्यालयों के कुल 77 कार्मिकों को प्रशिक्षित किया गया।

राजभाषा निरीक्षण

निगम मुख्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन का जायजा लेने के लिए विद्युत मंत्रालय के राजभाषा विभाग की टीम ने 30 अप्रैल, 2024 को राजभाषा निरीक्षण किया। श्री कर्मचन्द, निदेशक व प्रभारी (राजभाषा) एवं श्री सुशील कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने मुख्यालय के विभागों में प्रत्यक्ष रूप से राजभाषा हिंदी में किए जा रहे कार्यों का जायजा लिया और राजभाषा कार्यान्वयन में एनएचपीसी द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

हिंदी भाषा प्रशिक्षण

फरीदाबाद तथा पलवल जिले में स्थित भारत सरकार के विभिन्न कार्यालयों के 133 कार्मिकों के लिए भाषा प्रशिक्षण पर परीक्षा लेने के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा एनएचपीसी के निगम मुख्यालय, फरीदाबाद को परीक्षा केंद्र बनाया गया था। ये परीक्षाएं 10 से 13 जून 2024 की अवधि में आयोजित की गई। परीक्षा के दौरान हिंदी शिक्षण योजना (मध्योत्तर क्षेत्र), नई दिल्ली के अधिकारियों द्वारा निरीक्षण किया गया और परीक्षा केंद्र पर एनएचपीसी द्वारा निदेशों के अनुरूप की गई परीक्षा संबंधी व्यवस्थाओं पर तथा कुशल संचालन के लिए एनएचपीसी प्रबंधन व राजभाषा विभाग की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

संपर्क कार्यक्रम

एनएचपीसी निगम मुख्यालय में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, हिंदी शिक्षण योजना (मध्योत्तर क्षेत्र), नई दिल्ली के सहयोग से 26 जुलाई 2024 को एक संपर्क कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान हिंदी शिक्षण योजना द्वारा संचालित विभिन्न हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विषय में विस्तृत व अद्यतन जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम में हिंदी शिक्षण योजना के निदेशक लेफ्टिनेंट कर्नल श्री राम नरेश शर्मा सहित हिंदी शिक्षण योजना के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में एनएचपीसी से श्री लूकस गुडिया, कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन) भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। श्री प्रियरंजन, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) व प्रभारी (राजभाषा) भी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

इस कार्यक्रम में फरीदाबाद स्थित भारत सरकार के नियंत्रणाधीन कार्यालयों, उपक्रमों, निकायों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों से 116 अधिकारी/ कर्मचारी शामिल हुए।

हिंदी पखवाड़े का आयोजन

दिनांक 16 से 29 सितंबर, 2024 तक निगम मुख्यालय सहित सभी परियोजनाओं, पावर स्टेशनों एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में हिंदी पखवाड़े का भाषाई सद्भाव के साथ आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाड़े के दौरान निगम मुख्यालय में महाप्रबंधक एव उच्च स्तर के अधिकारियों के लिए हिंदी प्रश्नोत्तरी, नियमित कार्मिकों के लिए नोटिंग ड्राफ्टिंग, प्रश्नोत्तरी व अनुवाद, काव्य पाठ आिद प्रतियोगिताओं और हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में लगभग 400 कार्मिकों ने भाग लिया।

प्रेरणा सह उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन

प्रशिक्षण व मानव संसाधन विकास विभाग के सहयोग से निगम मुख्यालय, फरीदाबाद में 05 से 09 अगस्त 2024 तक निगम में नव नियुक्त हिंदी अनुवादकों के लिए पांच दिवसीय प्रेरणा सह उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए उद्घाटन सत्र में, श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने प्रतिभागियों को राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधानों पर व्याख्यान दिया। इस दौरान श्री प्रिय रंजन, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) व प्रभारी (राजभाषा) और राजभाषा विभाग, निगम मुख्यालय के अधिकारी भी उपस्थित रहे। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी नीतियों, नियमों, अधिनियमों, शक्तियों का प्रत्यायोजन, नोटिंग-ड्राफ्टिंग, ई-ऑफिस जैसे सॉफ्टवेयरों, निगम की प्रोत्साहन योजनाओं, विविध रिपोर्टों (तिमाही, छमाही व वार्षिक) और कंठस्थ 2.0 आदि से संबंधित विषयों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया और अनुवाद का अभ्यास कराया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन सत्र के दौरान 09 अगस्त 2024 को अतिथि वक्ता श्री नरेश कुमार, उप निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा संचालित अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी के साथ-साथ अनुवाद विषय की गूढ़ता व व्यापकता पर व्याख्यान दिया।

हिंदी दिवस

गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 14 -15 सितंबर, 2024 को नई दिल्ली में हिंदी दिवस तथा चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में माननीय निदेशक (कार्मिक) श्री उत्तम लाल सहित एनएचपीसी लिमिटेड मुख्यालय से वरिष्ठ अधिकारियों और अधीनस्थ परियोजनाओं/पावर स्टेशनों/कार्यालयों से भी राजभाषा कार्मिकों ने प्रतिभागिता की।

विद्युत मंत्रालय द्वारा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन

विद्युत मंत्रालय ने 03 अगस्त, 2024 को आरईसी ऑडिटोरियम में एक अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का भव्य आयोजन किया। इस सम्मेलन में विद्युत मंत्रालय तथा उसके नियंत्रणाधीन कार्यालयों/ उपक्रमों में पदस्थ राजभाषा कर्मियों और राजभाषा हिंदी का कार्य देख रहे अधिकारियों/ कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की। सम्मेलन का विधिवत उद्घाटन माननीय विद्युत और नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री श्री श्रीपद येसो नाईक जी के कर कमलों से किया गया। इस अवसर पर विद्युत मंत्रालय के माननीय सचिव (विद्युत) भी उपस्थित थे। एनएचपीसी लिमिटेड की ओर से राजभाषा कार्यों से जुड़े 40 कार्मिकों सहित श्री संजय कुमार सिंह, निदेशक (परियोजनाएं), श्री लूकस गुडिया, कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन) और श्री प्रियरंजन, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) व प्रभारी (राजभाषा) भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

नराकास (का) फरीदाबाद की बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), फरीदाबाद की वर्ष 2024-25 की प्रथम छमाही बैठक श्री आर.पी. गोयल, तत्कालीन अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक, एनएचपीसी लिमिटेड तथा अध्यक्ष, नराकास, फरीदाबाद की अध्यक्षता में 28 मई 2024 को आयोजित की गई। इस बैठक में नराकास (का.) फरीदाबाद के सदस्य कार्यालयों के प्रमुख एवं राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े अधिकारियों सहित कुल 90 कार्मिक शामिल हुए।

राजभाषा कार्यान्वयन-गतिविधियां

वर्ष 2024-25 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दूसरी बैठक

निदेशकगण के कर कमलों से हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन

अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक तथा निदेशकगण द्वारा
राजभाषा ज्योति के 44वें अंक का विमोचन

हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी में पुस्तकों का अवलोकन करते हुए निदेशकगण

विद्युत मंत्रालय के अधिकारियों द्वारा निगम मुख्यालय में राजभाषा संबंधी निरीक्षण

राजभाषा कार्यान्वयन-गतिविधियां

वर्ष 2024-25 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति की पहली बैठक

नराकास (का.), फरीदाबाद की हिंदी पत्रिका 'नगर सौरभ' का विमोचन

कार्मिकों के बच्चों के लिए आयोजित हिंदी प्रतियोगिता के विजेता को पुरस्कृत करते हुए कार्यपालक निदेशक

हिंदी कार्यशाला में प्रतिभागियों के साथ राजभाषा प्रभारी

कार्मिकों के परिवार की महिला सदस्यों के लिए आयोजित हिंदी प्रतियोगिता के प्रतिभागीगण

उत्तराखंड राज्य का लोक पर्व-हरेला

डॉ. देवेन्द्र तिवारी, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
राजभाषा विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

हरेला का शाब्दिक अर्थ है "हरे/ पीले पत्ते"। पारंपरिक रूप से एक वर्ष में दो हरेले मनाए जाते हैं, एक हिंदू कैलेंडर के चैत्र महीने में (ग्रेगोरियन कैलेंडर में मार्च/अप्रैल) और दूसरा हिंदू कैलेंडर के श्रावण महीने में (ग्रेगोरियन कैलेंडर में जुलाई/ अगस्त), जो ऋतुओं के परिवर्तन के अनुरूप होता है। हालांकि, हरेला मेला स्वयं श्रावण उत्सव के हिस्से के रूप में आयोजित किया जाता है जो भारत में मानसून के मौसम की शुरुआत के साथ भी जुड़ा हुआ है और फसल उगाने के मौसम का प्रतीक है। स्थानीय लोक कथाओं के अनुसार, यह त्योहार भगवान शिव और देवी पार्वती के विवाह का भी स्मरण करता है।

हरेला मेले का इतिहास

हरेला मेला शताब्दियों से अधिक समय से चला आ रहा है। संभवतः हरेला मेला फसल के मौसम के आसपास किसानों के बाजार के विस्तार के रूप में विकसित हुआ। भारतीय स्वतंत्रता से पहले, व्यापारी बरेली, रामपुर आदि जैसे दूर-दराज के स्थानों से फसलों और अन्य सामानों को बेचने के लिए कुमाऊं की पहाड़ियों में ले जाते थे।

कुमाऊं के पहाड़ों से लोग इन उत्पादों को खरीदने के लिए इकट्ठा होते थे और समय के साथ यह हरेला मेला बन गया।

इस वर्ष (2024 में) प्रकृति को समर्पित लोक पर्व हरेला 16 जुलाई दिन रविवार को मनाया गया। हर साल हरेला पर्व कर्क संक्रांति को श्रावण मास के पहले दिन मनाया जाता है। त्योहार के ठीक 10 दिन पहले लोग अपने घरों में ही हरेला बोते हैं लेकिन कुछ लोग 11 दिन का भी हरेला बोते हैं।

यह पर्व उत्तराखंड के कुमाऊं मंडल में विशेष रूप से मनाया जाता है। उल्लेखनीय है कि 10 दिन की प्रक्रिया में मिश्रित अनाज को देवस्थान में उगाकर कर्क संक्रांति के दिन हरेला काटकर यह त्योहार मनाया जाता है।

जिस तरह मकर संक्रांति से सूर्य भगवान उत्तरायण हो जाते हैं और दिन बढ़ने लगते हैं, वैसे ही कर्क संक्रांति से सूर्य भगवान दक्षिणायन हो जाते हैं। कहा जाता है कि इस दिन से दिनों की अवधि घटने लगती है और रातें बड़ी होती जाती हैं।

7 किस्म का बोया जाता है अनाज

हरेला बोने के लिए हरेला त्योहार से 12 से 15 दिन पहले से तैयारियां शुरू हो जाती हैं। घर के पास साफ जगह से मिट्टी निकाल कर सुखाई जाती है और उसे छानकर रख लिया जाता है। हरेला में 7 या 5 किस्म के अनाज का मिलाकर बोया जाता है। इसमें धान, मक्की, उड़द, गहत, तिल और भट्ट शामिल होते हैं। इसे मंदिर के कोने में रखा जाता है। इसे बोने से लेकर और इसकी देखभाल तक घर की महिलाएं करती हैं।

सावन के हरेला का महत्व

हरेला पर्व प्रकृति से जुड़ा हुआ है। उत्तराखंड में हरेला पर्व से सावन मास की शुरुआत मानी जाती है। सावन मास के हरेला पर्व का विशेष महत्व है, सावन भगवान शिव का प्रिय मास है और उत्तराखंड को शिव भूमि भी कहा जाता है। हरेला पर्व के समय शिव परिवार की पूजा अर्चना की जाती है। मान्यता है कि हरेला जितना बड़ा होगा, कृषि में उतना ही फायदा देखने को मिलेगा। वैसे तो हरेला को हर घर में बोया जाता है लेकिन कुछ गांव में सामूहिक रूप से स्थानीय ग्राम देवता के मंदिर में भी हरेला बोया जाता है।

इनको भेजा जाता है हरेला

कटे हुए हरेले में से कुछ भाग छत पर रख दिया जाता है। घर में छोटों को बड़े लोग हरेले के आशीष गीत के साथ हरेला लगाते हैं, गांव में या रिश्तेदारी में नवजात बच्चों को हरेला भेजा जाता है। इस दिन हरेला की शुभकामनाएं देकर बुजुर्ग बच्चों को आशीर्वाद देते हैं।

इस पवित्र त्योहार के दिन देवस्थानों में भोग आरती भी की जाती है तथा सभी के सुख, समृद्धि की कामना करते हुए देश प्रदेश में रहने वाले व फौजी भाइयों को हरेला भेजा जाता है।

राजनीतिक महत्व

इस मेले का पारंपरिक रूप से राजनीतिक पहलू भी है। विभिन्न स्थानीय राजनीतिक निकाय पार्टी जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ पार्टी के सदस्यों को अपने साथ जोड़ने के लिए स्टॉल लगाते हैं। भारतीय स्वतंत्रता से पहले, यह विभिन्न स्वतंत्रता कार्यकर्ताओं के लिए एक बैठक का अवसर था। ❒

गुलाबी परिधान वाली 'सबला'

कमलेश कुमार, सहायक राजभाषा अधिकारी
राजभाषा विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

बचपन में हम सब की प्राथमिक पाठशाला अमूमन उपनिषदों और वेदों में बताए गए नीतिवाक्यों से शुरू होती है। इससे इतर यह बहुत विचारणीय विषय है कि कालानुक्रम में ये नीतिवाक्य हमारे जीवन में कितने यथार्थपूर्ण रह जाते हैं अथवा इन सीखों को हम अपने व्यवहार में कितना उतार पाते हैं।

महिलाओं के प्रति नितदिन घटित होने वाली घटनाएं महिलाओं के प्रति हमारे व्यवहार को उजागर करती हैं और प्रतिक्षण मनुस्मृति के श्लोक- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' को झूठा साबित कर रहीं हैं। ऐसी घटनाओं से क्षुब्ध होकर प्रतिकार स्वरूप उठ खड़ी होती है कोई सबला जिसका एकमात्र ध्येय ऐसी घटनाओं का दमन करना होता है।

ऐसी ही एक सबला की कहानी, जिसने बुंदेलखंड क्षेत्र के बांदा-चित्रकूट जिले में एक ऐसी अलख जगाई जो निश्चय ही प्रेरणाप्रद है। जिसके कलेवर और कार्यशैली के अनूठे ढंग ने दमनकारियों और अत्याचारियों को बाखूबी सबक सिखाया।

इस सबला के कलेवर में गुलाबी रंग ने इसका खूब साथ निभाया और यही गुलाबी रंग उसकी पहचान बना। यूं तो गुलाबी रंग सहृदयता, करुणा, समझ और भावनात्मक आत्मीयता का प्रतीक है, परंतु इस सबला ने अपनी पहचान से इस रंग के मायने इस तरह से बदल दिए मानो मशहूर शायर 'मजाज़' ने अपना निम्नलिखित शेर उनके लिए ही लिखा हो –

तिरे माथे पे ये आंचल बहुत ही ख़ूब है लेकिन
तू इस आंचल से इक परचम बना लेती तो अच्छा था

एक साधारण कद-काठी की महिला जिसकी उम्र लगभग 60 से ऊपर की हो और उसके बारे में यह पता चले कि वह एक ऐसे संगठन को संचालित कर रही हैं जिसके अंतर्गत स्वतंत्र रूप से महिलाओं के लिए न्याय की बातें हो रही हैं और उन्हें घरेलू हिंसा से लड़ने का संबल दिया जा रहा है, तो चकित रह जाना स्वाभाविक है। क्योंकि आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ बुंदेलखंड का यह हिस्सा शिक्षा, जन-सुविधाओं और बुनियादी जरूरतों से सदैव महरूम रहा है। ऐसे हिस्से से आने वाली एक महिला घर की देहरी लांघ कर जब महिलाओं के लिए सामाजिक समरूपता और न्याय के लिए उठ खड़ी होती है तो यह अविश्वसनीय है।

बांदा जनपद के एक गरीब चरवाहे (गड़रिया) परिवार में वर्ष 1958 को जन्मी संपत देवी पाल बुंदेलखंड क्षेत्र के बांदा-चित्रकूट जिले में कई वर्षों से इस दिशा में सक्रिय रही हैं। औपचारिक शिक्षा से वंचित और बहुत छोटी उम्र में वैवाहिक जीवन का बोझ उठाने वाली संपत देवी ग्रामीण महिलाओं के बीच उनके अधिकारों, शिक्षा और जागरूकता के लिए सार्थक प्रयास कर रहीं हैं। जानकारियों में थोड़ी भी रुचि रखने वाला 'गुलाबी गैंग' से अपरिचित नहीं होगा। संपत देवी पाल इसी गुलाबी गैंग की मुखिया और नेतृत्वकर्ता है। यह संगठन महिला कल्याण और सशक्तिकरण के लिए कार्य करता है। इस संघटन में बड़ी संख्या में अनगिनत महिलाएं सक्रिय भूमिका में हैं जो अपनी विशेष पहचान के लिए गुलाबी रंग की साड़ी पहनती हैं और हाथ में एक बांस की लाठी लेकर चलती हैं।

संपत देवी पाल के पड़ोस में रहने वाली एक महिला को उसके पति द्वारा घरेलू कार्यों के चलते पीटने की घटना का मुखर विरोध इस आंदोलन की नीव बनी। संपत देवी पाल द्वारा विरोध के बावजूद वह पुरुष अपनी पत्नी को पीटता रहा। कुछ देर बाद संपत देवी पाल कुछ अन्य महिलाओं के साथ बांस की लाठी के साथ वापस लौटीं और उन्होंने उस पुरुष को लठियों से खूब पीटा। इस घटना ने मानों चिंगारी का काम किया और फिर उस अंचल में आए दिन किसी न किसी गांव से पुरुषों की पिटाई की खबरें आने लगीं। ऐसी महिलाएं घटना के बाद संपत देवी पाल से मिलती और उनके संगठन में सम्मिलित हो जातीं। कुछ पीड़ित महिलाओं के मिलने से बना यह संगठन बड़ी कम समयावधि में एक कारवां बन गया, जिसने कालावधि में एक आंदोलन का रूप लिया।

संपत देवी पाल मानती हैं कि उनके समाज और क्षेत्र में महिलाओं को शिक्षा से रोक दिया जाता है और कम उम्र में ही उन पर घर की जिम्मेदारियां सौंप दी जाती हैं। कम उम्र में उनकी शादी कर दी जाती है और फिर अनपढ़ महिला पुरुष के इशारों पर चलने

वाली कठपुतली मात्र बनकर रह जाती है। यह अशिक्षा उन्हें अपने समय से बहुत पीछे ले जाती है और इसके चलते उन पर अनेकों अत्याचार होते हैं। ऐसी परिस्थिति बुंदेलखंड अंचल मात्र की नहीं है अपितु देश के अधिकांश हिस्सों की कमोबेश यही स्थिति है। ऐसे ही तमाम उत्पीड़नों के दमन और पीडिताओं की आवाज को संबोधित करने और उन्हें न्याय तथा हक की लड़ाई में विजय दिलाने के लिए इस संगठन का प्रादुर्भाव हुआ था। बड़े मशहूर शायर 'मुनीर नियाजी' महिलाओं के बुलंद इरादों पर एक शेर लिखते हैं कि-

शहर का तब्दील होना शाद रहना और उदास

रौनकें जितनी यहां हैं औरतों के दम से हैं।

शुरुआत में इस संगठन द्वारा महिलाओं के प्रति होने वाली घरेलू हिंसा और यौन उत्पीड़न की घटनाओं के लिए संघर्ष किया गया। धीरे-धीरे संगठन द्वारा किए जाने वाले संघर्ष का दायरा बढ़ता गया। इसने विभिन्न क्षेत्रों जैसे सड़क, पानी, बिजली, मनरेगा, पेंशन, शिक्षा, अस्पताल जैसी मूलभूत जरूरतों और सरकारी योजनाओं में हीला-हवाली करने वाले अधिकारियों के खिलाफ भी अपनी मोर्चेबंदी शुरू की। अन्याय पर न्याय पाने के लिए इस संगठन ने हिंसक और अहिंसक दोनों प्रकार के प्रतिरोध का सहारा लिया। क्षेत्र में महिलाओं पर होने वाले उत्पीड़न के बारे में अधिक जागरूकता बढ़ाने के लिए इस संगठन द्वारा सरकारी कार्यालयों, अस्पतालों और स्कूलों के आस-पास सक्रिय रूप से विरोध प्रदर्शन किए गए।

इस संगठन के विरोध के कुछेक उदाहरण निम्नवत हैं-

- इस संगठन द्वारा पुलिस की कार्यवाही का विरोध करने का अनूठा उदाहरण इस प्रकार है, एक बार संपत देवी पाल महिलाओं के साथ कुछ कुत्तों को लेकर पुलिस चौकी पहुंच गई और उन्होंने पुलिस वालों से कहा कि आपसे ज्यादा तो ये कुत्ते वफादार हैं और हमारे पक्ष में हैं। कुछ शर्म तो आप लोग करिए।
- एक बार बिजली दफ्तर की घटना है, बिजली खराब होने पर गांव वालों के बहुत कहने पर भी जब बिजली अधिकारियों द्वारा बिजली सही नहीं की गई तो इस संगठन के लोग बिजली दफ्तर पहुंचे और ऑफिस का दरवाजा बंद करके ताला लगा दिया। सभी अधिकारी इमारत में कैद कर दिए गए और यह फैसला लिया गया कि बिजली बहाली के बाद ही ताला खोला जाएगा। इसके बाद आनन-फानन में बिजली बहाल की गई। इस घटना के बाद गुलाबी गैंग और संपत देवी पाल इस क्षेत्र में मुसीबतों के हल बनने लगे।

संपत देवी पाल का कहना था कि गुलाबी गैंग में घरेलू हिंसा के प्रति न्याय की दर शत-प्रतिशत है। वो कहती हैं कि हमारी लठियां अपनी सुरक्षा के लिए हैं, हां कभी-कभी इसका उपयोग स्वयं की रक्षा करने के दौरान सामने वाले पर भी करना पड़ता है। हम बलात्कारियों के खिलाफ इस लाठी का भरपूर उपयोग करते हैं ताकि करने वाले और सुनने वाले दोनों को आजीवन यह सबक याद रहे। हालांकि उत्पीड़कों से निपटने में यह हमारा आखिरी प्रयास होता है।

गुलाबी गैंग को उनके विविध सामुदायिक प्रयासों के लिए गॉडफ्रे फिलिप्स बाहदुरी पुरस्कार, नारी शक्ति सम्मान 2010, मेगा सम्मान 2010, अहिल्याबाई होलकर पुरस्कार, सब सतरंगी पुरस्कार, माँ घर शांति पुरस्कार, पहल पुरस्कार, भारत ज्योति पुरस्कार, सेवरी सम्मान और केल्विनेटर 11वां जीआर 8 पुरस्कार जैसे सम्मान प्रदान किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, वर्ष 2008 में फ्रांसीसी भाषा के लेखक को. एन्ने बरथोड ने इस संगठन पर 'मोई, संपत पल, चीफ डी गैंग एन सारी रोज' नाम से किताब भी लिखी है। टेलीविजन के चर्चित कार्यक्रम बिग बॉस में भी संपत देवी पाल ने भाग लिया है। इसके साथ ही अनेक मंचों पर उन्हें सम्मानित किया गया है।

गुलाबी गैंग का ध्येय है- 'दुर्बलों को दुर्व्यवहार से बचाना और भ्रष्टाचार से लड़ना, ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबों के बुनियादी अधिकारों को सुनिश्चित करने और बाल-विवाह जैसी परंपराओं को तोड़ने के लिए प्रतिबद्ध रहना।' स्वभाविक रूप से यह संगठन अति अशिक्षित और कमजोर वर्ग की महिलाओं का संबल है। फ्रांसीसी लेखक को. एन्ने बरथोड अपनी किताब में लिखते हैं कि 'भारत के ऊंचे पहाड़ों और बाढ़ग्रस्त मैदानों वाले उत्तर प्रदेश के एक नितांत साधनहीन क्षेत्र में एक महिला बाहुबलियों के अत्याचारों के सामने अकेली उठ खड़ी हुई है। जिसका नाम है संपत पाल जो प्रताड़ित पत्नियों, संपत्ति छीन लिए गए लोगों और उच्च वर्ग द्वारा अस्पृश्यता के शिकार लोगों को न्याय दिलाने के लिए संघर्ष कर रही है।' एक सुदूर क्षेत्र की बहुत कम पढ़ी-लिखी महिला के लिए इतनी बातें लिख देना अपने आप में ही उसका सम्मान है। इस सबला के इरादों को 'बिलकीस ज़फ़ीरूल हसन' ने अपने शेर में क्या खूब बयां किया है - ❐

ख़ुद पे ये ज़ुल्म गवारा नहीं होगा हम से

हम तो शोलों से न गुजरेंगे न सीता समझें

स्रोत संदर्भ- गुलाबी गैंग की आधिकारिक वेबसाइट और इंटरनेट से साभार एवं क्षेत्रीय जानकारी पर आधारित।

भारतीय एकता के लक्ष्य का साधन हिंदी भाषा का प्रचार है।
- टी. माधवराव

भूविज्ञान का अनुप्रयोग : सिक्किम हिमालय की भूवैज्ञानिक चुनौतियां और उनका शमन

अनूप कुमार पटेल, वरिष्ठ प्रबंधक (भूविज्ञान)
तीस्ता-VI जल विद्युत परियोजना, सिंगताम, गंगटोक (सिक्किम)

हिमालय संस्कृत के दो शब्दों - हिम तथा आलय से मिलकर बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'बर्फ का घर' होता है। हिमालय पर्वत का महत्व न केवल इसके आसपास के देशों के लिए है, बल्कि पूरे विश्व के लिए है क्योंकि यह ध्रुवीय क्षेत्रों के बाद पृथ्वी पर सबसे बड़ा हिमाच्छादित क्षेत्र है जो विश्व की जलवायु को भी प्रभावित करता है। हिमालय पर्वत, जो पूरे विश्व मे अपनी भव्य सुंदरता के लिए जाने जाते हैं, न केवल मनोरम हैं, बल्कि हमारे ग्रह को आकार देने वाली गतिशील शक्तियों का भी प्रमाण हैं।

हिमालय की उत्पत्ति की व्याख्या प्लेट टेक्टोनिक्स सिद्धांत द्वारा की जाती है। जिसके परिणामस्वरूप पर्वतीय शृंखला का निर्माण हुआ, जिसमें मुख्य रूप से हिमालय की तीन शृंखलाएं शामिल हैं, जिनका उत्तर से दक्षिण तक क्रम पहले ग्रेटर हिमालय, फिर लेसर हिमालय और सबसे अंत में शिवालिक है। हिमालय को दुनिया के सबसे अस्थिर क्षेत्रों में से एक के रूप में जाना जाता है तथा यह युवा पर्वत भी माना जाता है।

हिमालय की अनूठी भूवैज्ञानिक स्थितियां हमेशा से भूवैज्ञानिकों के लिए एक चुनौतीपूर्ण और कठिन क्षेत्र रही हैं। जिसमें से लेसर हिमालय की कायांतरित चट्टानें एवं शिवालिक की अवसादी चट्टानें मजबूत नहीं हैं। जिससे कारण ये क्षेत्र फोल्ड्स, फाल्ट्स और शियर जोन जैसी भूवैज्ञानिक संरचनाओं के प्रति अतिसंवेदनशील हो जाते हैं। साथ ही, टेक्टोनिक प्लेटों की निरंतर चलायमान स्थिति हिमालयी क्षेत्रों में उच्च दबाव पैदा करती है, जो इन क्षेत्रों की स्थिरता को और कम कर देती है। जटिल भूगर्भीय संरचनाएं और अत्यधिक विकृत चट्टानें स्थिति की जटिलता को और अधिक बढ़ाते हैं।

इसके अतिरिक्त, भूकंपीय गतिविधियों के प्रति संवेदनशील होने के कारण ये कारक स्थिरता के मुद्दों को और प्रभावित करते हैं, जिसके कारण इस क्षेत्र में किसी भी प्रकार की निर्माण परियोजना

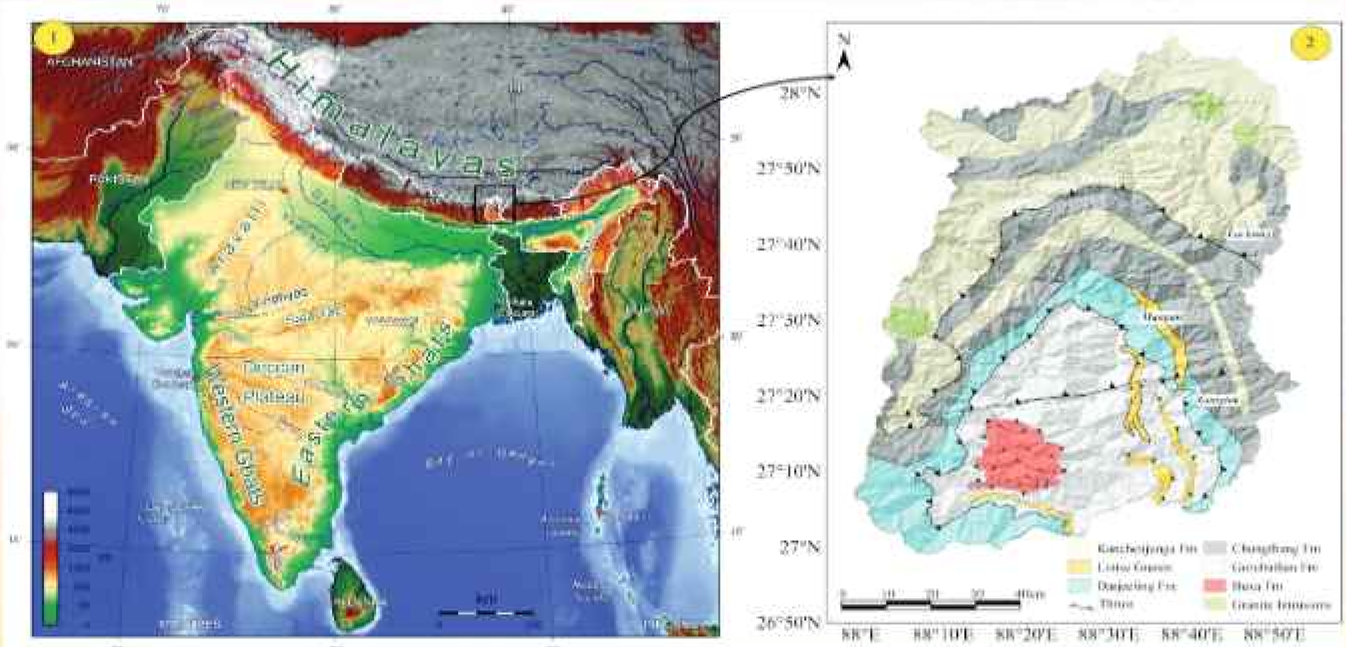

चित्र-1 सिक्किम हिमालय की भूवैज्ञानिक सेटिंग्स (स्रोत : 1 https://ramana-studypoint.blogspot.com/2011/07/major-mountain-ranges-in-india.htm 2. Rajinder Bhasin et. al. 2023, GeoHazards V.4(1)

के लिए अतिरिक्त जोखिम पैदा हो जाता है। एक अन्य कारक जो हिमालय की अस्थिरता को बढ़ाता है, वह है इस क्षेत्र में होने वाली अत्याधिक वर्षा जो कि हिमालयी क्षेत्रों मे सतही अपवाह में वृद्धि करते है एवं दरों आदि द्वारा जमीन के अंदर जाकर जलस्रोत को भी बढ़ाते है, जिससे भूस्खलन या प्रवाह ट्रिगर होते हैं। कमजोर चट्टानों, सक्रिय टेक्टोनिक बलों, जटिल भूगर्भीय स्थितियों और भारी वर्षा की क्षमता का संयोजन हिमालय को किसी भी प्रकार के भूमिगत कार्य के लिए एक चुनौतीपूर्ण वातावरण बनाता है।

भारत के मानचित्र में, हिमालय के पूर्वोत्तर में स्थित सिक्किम अंगूठे के आकार का राज्य है जो दक्षिण में समुद्र तल से 280 मीटर से लेकर उत्तर में 8,586 मीटर तक ऊंचाई प्राप्त करता है। इस राज्य की सीमा पश्चिम में नेपाल, उत्तर तथा पूर्व में चीनी तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र और दक्षिण-पूर्व में भूटान से लगी हुई हैं। भारत का पश्चिम बंगाल राज्य इसकी दक्षिणी सीमा से लगा हुआ है। जनसंख्या के आधार पर यह भारत में सबसे कम आबादी वाला तथा क्षेत्रफल में गोवा के बाद सबसे छोटा राज्य है। अपने छोटे आकार के बावजूद सिक्किम भौगोलिक दृष्टि से काफी विविधतापूर्ण है (चित्र-1)। दुनिया की तीसरी सबसे ऊंची चोटी कंचनजंगा, सिक्किम के उत्तर-पश्चिमी भाग में नेपाल की सीमा पर है और इस पर्वत चोटी को प्रदेश के कई भागों से आसानी से देखा जा सकता है। इसके अलावा 4,000 मीटर से अधिक की ऊंचाई वाले सिक्किम की पहाड़ी क्षेत्रों में काफी भारी बर्फबारी होती है, जिसके परिणामस्वरूप बारहमासी नदियों का निर्माण होता है। सुंदर वादियां, साफ-सुथरे इलाके एवं प्राकृतिक सुंदरता आदि विशेषताओं के कारण सिक्किम राज्य आज भारत में पर्यटन का प्रमुख केंद्र है। लेकिन सिक्किम ने विकास के अन्य मार्गों की ओर भी अपना ध्यान केंद्रित किया है।

आज सिक्किम सबसे तेजी से विकसित होने वाला पहाड़ी राज्य बन गया है एवं भौगोलिक दृष्टि से चुनौतीपूर्ण क्षेत्र होने के बावजूद, शहरीकरण तेज गति से प्रगतिशील है। सिक्किम का लगभग 47.11% भूभाग वनों द्वारा संरक्षित है, परिणामस्वरूप शहरी विस्तार के लिए भूमि सीमित है। वर्ष 2001-2011 की अवधि के दौरान सिक्किम की शहरी आबादी में 156.52 प्रतिशत की वृद्धि हुई एवं 2011 में सिक्किम की कुल जनसंख्या में से 25.15% लोग शहरी क्षेत्रों में रहने लगे थे और आने वाले समय में इस प्रतिशतता में और बढ़ोत्तरी की उम्मीद है।

सिक्किम राज्य में तेजी से विकास, शहरीकरण और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सिक्किम के हर गांव और कस्बे तक पहुंचने के लिए उचित कनेक्टिविटी की आवश्यकता है। चूंकि अब तक सिक्किम राज्य रेलवे और जलमार्ग से वंचित रहा है, इसलिए सड़क मार्ग ही राज्य के लिए व्यवहार्य परिवहन का एकमात्र साधन रहा है। पिछले तीन दशकों के दौरान, सिक्किम राज्य में

चित्र-2 सिक्किम में भूस्खलन (1 से 5) एवं बाढ़ (6 से 9) के रूप में आई हुई प्राकृतिक आपदा के दृश्य

चित्र-3 सिक्किम हिमालय में भूमिगत उत्खनन के दौरान प्रतिकूल भूवैज्ञानिक परिस्थितियों का एक दृश्य: 1. कोल सीम / बेड्स 2. शियर ज़ोन 3. फोल्डेड रॉक मास 4. फ़ाल्ट प्लेन 5. थिंली फिलियेटेड फिलाइट 6. गाद का प्रवाह 7. हाइली फ्रेक्चर्ड एवं जोइंटेड रॉक मास 8. भूमिगत जल का सामना (जलभृत स्रोत) 9. हाइली वेदर्ड एवं क्रस्ड रॉक मास

सड़कों का घनत्व बहुत ज्यादा बढ़ा है, जिससे राज्य का हर कोना जुड़ गया है। यहाँ तक कि राज्य का सबसे दूरस्थ क्षेत्र भी जिला मुख्यालय से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

इसके अतिरिक्त, तीव्र विकास एवं मानव आबादी में वृद्धि के कारण बुनियादी ढांचों का निर्माण करने के लिए नदी के तटों, इसकी सहायक नदियों और मौसमी नालों पर अतिक्रमण हुआ है। इसके दुष्प्रभावों के फलस्वरूप इन स्थानों पर भूवैज्ञानिक मापदंडों को ध्यान में रखे बिना, किए गए विकास के कारण भूस्खलन, अचानक बाढ़ और बादल फटने जैसी घटनाओं के कारण गंभीर तबाही का सामना करना पड़ता है (चित्र-2)।

जैसा कि हम जानते हैं कि सिक्किम में युवा एवं नाजुक पहाड़ों के साथ-साथ, पहाड़ी नदियां, बरसाती नाले, पानी के झरने इत्यादि शामिल हैं। इस प्रकार, यह इसे विविध और प्राकृतिक आपदा के प्रति संवेदनशील बनाता है। इसके अलावा, हिमालयी क्षेत्र में अत्यधिक भूकंप सक्रिय खतरनाक क्षेत्रों में से एक के रूप में सिक्किम भी शामिल है, इसीलिए यह भारत के भूकंपीय क्षेत्र IV की श्रेणी के अंतर्गत आता है। बार-बार होने वाली भूकंपीय हलचलें और भारी वर्षा हमेशा भूस्खलन को ट्रिगर करती हैं जिसके परिणामस्वरूप सड़कें और पुल क्षतिग्रस्त हो जाते हैं।

आने वाले समय में, सिक्किम और अन्य पहाड़ी राज्यों के आर्थिक विकास के लिए भूमिगत संरचनाएं एक प्रमुख विकल्प होंगी। इसी को ध्यान में रखते हुए तथा सिक्किम में कनेक्टिविटी और विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी से सिक्किम तक भारतीय रेल नेटवर्क के लिए भूमिगत सुरंग निर्माण की आधारशिला रखी थी, जो अब अपने अंतिम पड़ाव पर है। इसके अलावा भारत सरकार एवं सिक्किम सरकार ने सिक्किम के विकास को और तीव्रता प्रदान करने के लिए एनएचपीसी, राज्य सरकार के उपक्रमों और निजी क्षेत्र के कई विकासकर्ताओं के साथ मिलकर विभिन्न महत्वाकांक्षी जल विद्युत परियोजनाओं की शुरुआत भी की है। हालांकि, इन परियोजनाओं को क्षेत्र की प्रतिकूल भूवैज्ञानिक स्थितियों और संभावित अनिश्चितताओं के कारण उत्पन्न होने वाली जटिल भू-तकनीकी और निर्माण समस्याओं का सामना करना पड़ता है, अधिकतर ऐसे भूवैज्ञानिक मुद्दों को भूवैज्ञानिक आश्चर्य की संज्ञा दी जाती है। वैसे, इस तरह की भूवैज्ञानिक समस्याएं कुछ भी हो सकती हैं लेकिन इस क्षेत्र में ये कोई आश्चर्य की बात नहीं हैं। आखिरकार, हिमालय एक 'वलित पर्वत' है जो एक सक्रिय टेक्टोनिक क्षेत्र में स्थित है, जहां प्रतिकूल भूवैज्ञानिक स्थितियों का सामना एक सामान्य घटना है, खासकर जब नाजुक चट्टान स्तरों पर निर्माण गतिविधियां की जाती हैं। इसके अलावा, सिक्किम हिमालयी ऑरोजेनी की जटिल संरचनात्मक सेटिंग को देखते हुए, प्रतिकूल भूवैज्ञानिक चुनौतियां क्षेत्र के भूवैज्ञानिक पहलुओं को गहराई से प्रभावित करती हैं, जो स्थानीय और क्षेत्रीय दोनों स्तरों

पर डिफार्मेसन के विभिन्न चरणों से गुजरी है।

वास्तव में, सुरंग निर्माण के दौरान भूवैज्ञानिक आश्चर्य का सामना विस्तृत भूवैज्ञानिक डेटा और जानकारी के साथ-साथ विस्तृत भूवैज्ञानिक मानचित्रण के अभाव को दर्शाता है। सिक्किम क्षेत्र की नाजुक और खंडित चट्टानों के बीच सुरंग बनाने की जोखिमभरी स्थितियां हमेशा से परियोजनाओं की योजना और कार्यान्वयन में शामिल लोगों के लिए एक दुःस्वप्न बनी हुई हैं। इसके अलावा, इस क्षेत्र में ऊंचे पहाड़ों, खड़ी ढलानों, गहरी घाटियों और घने जंगलों की मौजूदगी भूवैज्ञानिक डेटा अधिग्रहण और मानचित्रण के दौरान भूवैज्ञानिकों के लिए कठिन चुनौतियां पेश करती है, जिसके कारण एचआरटी के समानांतर भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण नहीं किए जाते हैं, जो आगे चलकर सुरंग निर्माण के दौरान गंभीर समस्याओं को जन्म देते हैं।

अक्सर यह पाया गया है कि सुरंग निर्माण कार्य के दौरान शियर जोन्स, फोल्ड्स, फाल्ट्स, भूमिगत जल स्रोतों का अचानक सामना होने से सुरंग का फेस ढह जाता है, जो कि संपूर्ण परियोजना के निर्माण पर असर डालता है (चित्र-3)। ज्यादातर विकासकर्ता इन चुनौतियों से निपटने के लिए खुद को कम सुसज्जित पाते हैं, क्योंकि उन्हें विशेष ज्ञान और संसाधनों की आवश्यकता होती है जो अक्सर उनकी पहुंच से बाहर होते हैं।

इन चुनौतियों से निपटने में देरी सुरंग को और अधिक नुकसान पहुंचाती है जिससे परियोजना की लागत कई गुना ज्यादा बढ़ जाती है। यहां तक तो कुछ मामलों में पूरी परियोजना ही बीच में छोड़ दी जाती है। वास्तव में भूमिगत सुरंग निर्माण के दौरान इन प्रतिकूल भूवैज्ञानिक चुनौतियों का अचानक सामना होना मुख्यतः विस्तृत भूवैज्ञानिक मानचित्रण की कमी के साथ-साथ निर्माण स्थलों पर विशेषज्ञ इंजीनियरिंग भूवैज्ञानिकों की कमी एवं कार्य स्थल पर भूवैज्ञानिकों के द्वारा दिए गए निर्देशों और अनुशंसाओं की उपेक्षा के कारण होता है।

अतः 'भूवैज्ञानिक आश्चर्यों' को कम करने के लिए परियोजना के प्रारंभ में भूवैज्ञानिक अध्ययनों में निवेश करके और पूरे परियोजना क्षेत्र का व्यापक अध्ययन, मूल्यांकन के साथ-साथ इसकी संरचनात्मक विशेषताओं का अच्छी तरह से विश्लेषण करके किया जा सकता हैं, साथ ही साथ सुरंग संरेखण की दिशा में विस्तृत भूवैज्ञानिक और भूभौतिकीय आकलन करके लिथोलॉजिकल इकाइयों को सटीक रूप से निर्धारित करने के साथ लिथोलॉजिकल सीमाओं की पहचान करके उन्हें पहले से ही चिह्नित किया जा सकता है।

इसके अलावा, निर्माण परियोजना की सफलता सुनिश्चित करने के लिए, परियोजना निर्माण चरण के दौरान साइट पर कुशल इंजीनियरिंग भूवैज्ञानिकों की एक टीम मौजूद होना अति महत्वपूर्ण है। ये विशेषज्ञ हर बार उत्खनन से पहले सभी भूवैज्ञानिक विशेषताओं को दर्शाते हुए 2-डी और 3-डी दोनों प्रारूपों में विस्तृत सुरंग ग्रेड के 3-डी लॉग तैयार करते हैं और साथ ही सिविल इंजीनियरों को मूल्यवान भूवैज्ञानिक पैरामीटर और रॉक मास रेटिंग प्रदान करते हैं, जिसकी सहायता से सिविल इंजीनियर सर्वाधिक उपयुक्त उत्खनन पद्धति का चयन करके समय पर उचित उपायों के कार्यान्वयन को सक्षम बनाते हैं। इसके अतिरिक्त, इंजीनियरिंग भूवैज्ञानिक सुरंग फेस से आगे आने वाली चट्टानों की जानकारी हासिल करने के लिए समय-समय पर प्रोब होल ड्रिलिंग करते हैं जिससे वे आने वाले शियर ज़ोन और जल धारण करने वाली परत या जल स्रोतों जैसे संभावित खतरों की पहचान करके सुरंग की प्रगति के दौरान आवश्यक एहतियाती उपायों को करके, सुरंग निर्माण को सफल बनाते हैं। अतः यह आवश्यक है कि ऐसी परियोजनाओं में शामिल सभी विकासकर्ता इन आकलनों को प्राथमिकता दें और व्यापक जांच के लिए पर्याप्त संसाधन आवंटित करें। ऐसा करके, समय एवं लागत को कम किया जा सकता है और इस क्षेत्र में भूमिगत निर्माण परियोजनाओं का सफल कार्यान्वयन भी सुनिश्चित किया जा सकता है।

आज सिक्किम के अधिकांश हिस्सों में सड़क नेटवर्क के साथ-साथ मोबाइल संचार सेवाएं और हाई स्पीड इंटरनेट पहुंच गया है। इसके साथ ही प्रौद्योगिकी के माध्यम से भूवैज्ञानिक प्रौद्योगिकियों में प्रगति ने भूविज्ञान इंजीनियरिंग के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। आजकल, गूगल अर्थ, जियो-ट्रैकर, क्लाइनों एप, हैंडी जीपीएस और रॉकलॉगर जैसे कई एंड्रॉयड ऐप उपलब्ध हैं, जिनका उपयोग भूगर्भीय डेटा संग्रह और विश्लेषण की सटीकता और दक्षता को बढ़ाने के साथ-साथ भूवैज्ञानिक अन्वेक्षण में लगने वाले समय को भी कम करता है। इसके अलावा, भूभौतिकीय प्रौद्योगिकियों के उदय और भूमिगत अन्वेषण में उनके व्यापक उपयोग ने भूवैज्ञानिक जांच की गुणवत्ता में सुधार किया है एवं भूगर्भीय अध्ययनों से प्राप्त निष्कर्षों को और विश्वसनीय बनाया है।

अतः हम कह सकते हैं कि केवल भूवैज्ञानिक और भूभौतिकीय प्रौद्योगिकियों को अपनाने एवं पर्याप्त संख्या में इंजीनियरिंग भूवैज्ञानिकों की नियुक्ति के द्वारा ही सिक्किम जैसे कठिन भूवैज्ञानिक क्षेत्र में भूमिगत निर्माण परियोजनाओं को बढ़ी हुई सुरक्षा, कम जोखिम और बेहतर दक्षता से लाभान्वित किया जा सकता है। इसके अलावा, सटीक भूवैज्ञानिक डेटा की उपलब्धता से बेहतर योजना और निर्णय लेने की अनुमति दी जा सकती है। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जा सकता है कि उत्खनन के तरीके उचित हैं और आवश्यक उपायों को समय पर लागू किया जा सकता है। नतीजतन, परियोजनाओं को आवंटित समय-सीमा के भीतर और कम व्यवधानों के साथ अधिक सफलता से पूरा किया जा सकता है। ❐

बिजली महादेव

भारत भूषण, सहायक प्रबंधक (आईटी)
सतर्कता विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

भारत में भगवान शिव के अनेक अद्भुत मंदिर हैं, उन्हीं में से एक हिमाचल प्रदेश के कुल्लू में स्थित प्राचीन महादेव मंदिर है - बिजली महादेव। कुल्लू शहर में ब्यास और पार्वती नदी के संगम के पास एक ऊंचे पर्वत के ऊपर बिजली महादेव का मंदिर है। यह मंदिर कुल्लू से 14 किलोमीटर दूर हरी झाड़ियो से घिरे हुए जंगल के बीच में तथा लगभग 2438 मीटर क्षेत्र में फैला हुआ है।

इस जगह का नाम एक महान चमत्कार के बाद रखा गया था। यहां स्थापित शिवलिंग बिजली से कई टुकडों में बट गया था और फिर मंदिर के पुजारी ने सभी टुकडो को जमा किया और उन्हें मक्खन की सहायता से दोबारा जोड़ा। इस शिवलिंग पर बिजली क्यों गिरती है और इस जगह का नाम कुल्लू कैसे पड़ा इसके पीछे एक पौराणिक कथा है, 8 जो इस प्रकार हैः-

कुल्लू घाटी के लोग बताते हैं कि बहुत पहले यहां कुलान्त नामक दैत्य रहता था। दैत्य कुल्लू के पास की नागणधार से अजगर का रूप धारण कर मंडी की घोग्घरधार से होता हुआ लाहौल स्पीति से मथाण गांव आ गया। दैत्य रूपी अजगर कुंडली मार कर ब्यास नदी के प्रवाह को रोक कर, इस जगह को पानी में डूबना चाहता था। इसके पीछे उसका उद्देश्य यह था कि यहां रहने वाले सभी जीव-जंतु पानी में डूब कर मर जाएंगे। भगवान शिव कुलान्त के इस विचार से चिंतित हो गए। बड़े जतन के बाद भगवान शिव ने उस राक्षस रूपी अजगर को अपने विश्वास में लिया। शिव ने उसके कान में कहा कि तुम्हारी पूंछ में आग लग गई है। इतना सुनते ही जैसे ही कुलान्त पीछे मुड़ा तभी शिव ने कुलान्त के सिर पर त्रिशूल से वार कर दिया। त्रिशूल के प्रहार से कुलान्त मारा गया। कुलान्त के मरते ही उसका शरीर एक विशाल पर्वत में बदल गया। उसका शरीर धरती के जितने हिस्से में फैला हुआ था वह पूरा का पूरा क्षेत्र पर्वत में बदल गया। कुल्लू घाटी के बिजली महादेव से रोहतांग दर्रा और उधर मंडी के घोग्घरधार तक की घाटी कुलान्त के शरीर से निर्मित मानी जाती है। किवंदती है कि कुलान्त से ही कुलूत और इसके बाद कुल्लू नाम पड़ा।

बिजली शिवलिंग पर आकाशीय बिजली के गिरने के बारे में कहा जाता है कि भगवान शिव नहीं चाहते थे कि जब बिजली गिरे तो जन-धन को इससे नुकसान पहुंचे। भोलेनाथ लोगों को बचाने के लिए इस बिजली को अपने ऊपर गिरवाते हैं। इसी वजह से भगवान शिव को यहां बिजली महादेव कहा जाता है। हर साल शिवरात्रि के समय यहां भक्तों की भीड़ उमड़ आती है तो सभी मिलकर भगवान शिव की पूजा अर्चना भी करते है। भादों के महीने में यहां मेला-सा लगा रहता है। शिवरात्रि पर भी यहां भक्तों की भीड़ उमड़ती है।

बिजली महादेव कैसे पहुंचा जाए -

बिजली महादेव जाने के लिए कुल्लू के बस स्टैंड से चंसारी गांव के लिए बस और शेयर कैब मिल जाती है। चांसरी गांव से 3 किलोमीटर की ऊंचाई तक सीढियों द्वारा मंदिर तक पहुंचा जा

सकता है। अपने निजी वाहन से भी बिजली महादेव पहुंचा जा सकता है और गांव धारठ में बनी पार्किंग में आपने वाहन को खड़ा कर मंदिर तक यात्रा की जा सकती है। यह रास्ता जंगल और मनमोहक बागों से होकर गुजरता है। जैसे-जैसे मंदिर प्रांगण में ऊपर की तरफ पहुंचेंगे वैसे-वैसे थकान में पैर आपसे आराम करने को कहेंगे लेकिन प्राकृतिक सुंदरता को देखकर भक्त अपने दर्द को भूलकर बिजली महादेव के मनमोहक नजारे को देखने के लिए आगे बढ़े चले जाते हैं। ❐

प्रेरक प्रसंग

जीवन में सुख-दुख

पुराने समय में किसी गुरुकुल में एक शिष्य बहुत उदास रहता था। उसके गुरु उसे रोज देखते, लेकिन सोचते कि कुछ दिनों में इसका मन ठीक हो जाएगा। काफी दिन बीत जाने के बाद भी शिष्य आश्रम में दुखी ही रहता था। एक दिन गुरु ने उससे कहा कि आज शाम को तुम मेरे पास आना, मुझे कुछ बात करनी है।

शाम को पढ़ाई पूरी होने के बाद शिष्य गुरु के पास पहुंचा तो गुरु ने उससे कहा कि तुम इतना उदास क्यों रहते हो?

शिष्य बोला, 'गुरुजी बीते समय में मेरे परिवार में बहुत परेशानियां एक साथ आ गई थीं। पुरानी बातों को याद करके मेरा पूरा परिवार बहुत दुखी रहने लगा है। उन्हें याद करके मैं यहां दुखी रहता हूं। मेरा मन पढ़ाई में भी नहीं लग पाता है।'

गुरु ने कहा, 'क्या तुम नींबू शरबत पियोगे? उससे तुम्हें अच्छा महसूस होगा।'

शरबत के लिए शिष्य मान गया। गुरु ने नींबू शरबत बनाया और जानबूझकर उसमें नमक ज्यादा डाल दिया।

शिष्य ने जैसे ही थोड़ा सा शरबत पिया तो ज्यादा नमक की वजह से उसका मुंह बिगड़ गया। उसने गुरु से कहा, 'गुरुजी इसमें नमक बहुत ज्यादा हो गया है।'

गुरु बोले, 'अच्छा, शायद गलती से ज्यादा नमक डल गया है। मैं इसे फेंक देता हूं। फिर दूसरा शरबत बना लेते हैं।'

शिष्य बोला, 'गुरुजी इसे फेंकने की जरूरत नहीं है, इसमें थोड़ी शक्कर डाल देंगे तो मिठास से शरबत का खारापन कम हो जाएगा और हम इसे पी सकेंगे।'

गुरु बोले, 'बिल्कुल सही बात है। ठीक इसी तरह जब हमारे जीवन में बुरा समय आता है तो हमें भी दुख देने वाली बातों को भूलकर जीवन के अच्छे अनुभवों पर ध्यान लगाना चाहिए। ऐसा करने से बुरे समय में भी हमारी सोच सकारात्मक रहती है। अगर हम बीते समय की दुख देने वाली बातों पर ही टिके रहेंगे तो जीवन का दुख कभी खत्म ही नहीं हो पाएगा। इसीलिए सिर्फ अच्छी बातों पर ध्यान लगाना चाहिए।'

-साभार

गौवंश और मानव अस्तित्व

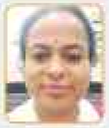

दीपिका सूद, वरिष्ठ प्रबंधक (विद्युत)
नवीकरणीय ऊर्जा और हरित हाइड्रोजन विभाग, अहमदाबाद (गुजरात)

जिस प्रकार आजकल श्वानों को गोद लेने का चलन शुरू हुआ है और सोशल मीडिया पर इंसानियत की मिसाल कायम की जा रही है, इसे देख कर अच्छा तो लग रहा है .... परंतु उसी प्रकार यदि गली में छोड़े गए बेसहारा पशुओं जैसे गाय, बैलों को भी गोद लिया जाए तो सड़क पर इन पशुओं की समस्याओं को दूर किया जा सकता है। साथ ही भारतीय संस्कृति का पुनर्स्थापन भी संभव हो पाएगा।

लेकिन अब आप कहेंगे भई इतने बड़े पशु को भला आज के टाइम में घर पर रख जा सकता है?... वो भी तब जब इंसानों के रहने के लिए जगह कम पड़ रही हो..। इसका समाधान भी है.... बस इच्छाशक्ति की देर है। जरा सोचिए कभी आप स्वप्न में भी सोच सकते थे कि जिस गाय को भारतीय संस्कृति में माता का स्थान दिया जाता है वो इस तरह सड़को पर लावारिस घूमे, सड़क पर चलने वाली गाडियां, ट्रक आदि से टकराकर, बीच सड़क के तड़प-तड़प के मर जाए। हम इतने स्वार्थी कैसे हो गए? हमे दूध तो चाहए पर गौ सेवा नही कर पाएंगे। समय नही है हमारे पास, न ही जगह.... वास्तव में हम हमेशा से स्वार्थी तो रहे हैं... पर साथ ही समझदार भी थे.... हमें ज्ञात था कि प्रकृति की कौन सी कृतियां जैसे वृक्षों में पीपल, पौधों में तुलसी, पशुओं में गौमाता, नदियों के गंगा, धरा, आकाश, सूर्य, चंद्रमा, जो हमारे लिए वरदान हैं इनका सम्मान करें, इसीलिए ही भारतीय संस्कृति में इन सभी को पूजनीय माना जाता था ताकि हम स्वयं के लिए चिरकाल तक इनका संरक्षण करें। इनके संरक्षण पर हमारा अस्तित्व टिका था, इस बात को हम भूल चुके हैं और आधुनिकता के नाम पर खुद के पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं। यदि ये सभी समाप्त अथवा लुप्त हो भी जाएं, तो इससे सबसे बड़ी हानि मानव अस्तित्व को ही होगी। आज जहां पश्चिमी देश भारत की संस्कृति में छिपी वैज्ञानिकता को पहचान कर इसे अपना रहे हैं, वहीं दूसरी ओर आधुनिकता की अंधी दौड़ में हम अपनी सभ्यता के साथ चलने में असहज व आउटडेटेड महसूस करते हैं। जब तक कोई पश्चिमी लैब या वैज्ञानिक यह प्रमाणित नही करता कि हल्दी दूध से इम्युनिटी बढ़ती है, लहसून आपके जोड़ो के दर्द में आराम दे सकता है। हम इनको अंधविश्वास या नीम हकीम खतराए जान कहते रहेंगे, हज़ारो वर्षो से हमारी रसोई किसी औषधालय से कम नही रही, दादी-नानी के नुस्खों की वजह से ही हम बड़े हुए हैं... हम इन सब विचारों को पुराना मानते हैं और इनको पूरे मन से स्वीकार करने में संकोच करते हैं क्योंकि अभी तक किसी पश्चिमी वैज्ञानिक ने इन्हें मान्यता नहीं दी है या कहें प्रमाणित नहीं किया है जबकि हर 50 वर्ष के आसपास का भारतीय इन पुरानी मान्यताओं का प्रमाण है।

शायद आपमें से अधिकांश पाठकों को पता भी होगा कि अकेले गौवंश में इतना सामर्थ है कि असाध्य से असाध्य रोग भी इनके सानिध्य से दूर हो जाते हैं। इनके दूध, गोबर, मूत्र यहां तक कि श्वास तक में रोगमुक्त करने की शक्ति है। इनके अद्भुत गुणों के कारण कहा जाता है कि गौमाता में तैंतीस कोटि देवता निवास करते हैं। लेकिन इन सबके बावजूद गौवंश की ऐसी दशा हमें सोचने पर मजबूर करती है कि हम अपनी जड़ों से दूर होकर किधर जा रहे हैं। यदि हम आज भी जाग जाते है और इनके प्रति अपनी जिमेदारी केवल गौमाता के लिए दुकानों पर लगी दान पेटी तक सीमित न रख कर, हो सके तो एक कॉलोनी, एक सोसाइटी में एक गौशाला का निर्माण करें, जहां इनकी सेवा कर स्वयं अपना स्वास्थ्य ठीक करें, भले ही ये दूध न भी दे पर इनका गौमूत्र, गोबर और सानिध्य हमें स्वस्थ रखने में सक्षम है।

इस तरह हम अपने आने वाली पीढ़ी को भी गौसेवा का अर्थ और लाभ समझा पाएंगे।

यह विषय शोध का है स्वयं पर इसका प्रभाव देखें फिर परिणाम के साथ स्वयं आगे बढ़ें किसी वैज्ञानिक के प्रमाणित करने का इंतजार क्यों करना....? ❐

घनघोर घटा

धर्मेन्द्र सिंह कुशवाहा
सहायक राजभाषा अधिकारी, किशनगंगा पावर स्टेशन,
बांडीपोरा (जम्मू व कश्मीर)

उसका दुबला-पतला शरीर आज फिर थर-थर कांप रहा था। मौसम जैसे फिर उसके सब्र को आजमाने की ठान चुका था। उसने बेबसी से बादलों की ओर ताकते हुए पूछा, "जो असहनीय पीड़ा मुझे मिली है क्या वह पूरी न थी, जो तुम फिर चले आए, मेरे मन में कामनाओं की ज्वाला जलाने के लिए?"

सावन की बूंदों ने मुस्कुराते हुए हौले से जवाब दिया- "हम तो समय चक्र का हिस्सा हैं, एक नियत समय पर हमें आना ही होता है। जरा देखो तो दिवाकर के प्रचंड, तमतमाते रूप से पूरी धरा कैसी निर्जीव, बेजान तथा रोनकहीन पड़ी है और हमने हल्के से उसे चूम क्या लिया कि वे फिर जीवन से भर लहकने, लहराने, झूमने लगी है। पर तुम क्यों परिवर्तन और बदलाव की ओर पीठ िकिए बैठी हो?"

बूंदों के सवाल से आहत उसने मन ही मन सोचा, मुझ अभागिन का हरा-भरा संसार लुट गया, मेरे जीवन से रंगों का नाता टूट गया, मेरी आंखों के अबोध सपनों को काल ने अपने क्रूर हाथों से मसल कर रख दिया और तुम मुझे परिवर्तन की सीख दे रहे हो?

मेरी तड़प भला कौन समझेगा? जिसे बारिश की बूंदें अग्नि सदृश्य जला रही हों, हवा के झोंके विगत जीवन के इंद्रधनुषी पन्ने खोल देने पर आमादा हो, मेहंदी की सुगंध जिसके जले मन पर नमक छिड़कने का कार्य कर रही हो और..... सोचते-सोचते उसके कलेजे में एक तेज हूक सी उठी, वेदना आंखों में छलछला उठी थी। बेचैनी के आलम में वह अपने हाथों से अपने दिल को जोर-जोर से दबाने लगी थी पर दर्द जरा भी कम न हुआ।

उसने बेबसी से फिर आसमान के आंवारा मेघों की ओर देखा, जो पूरी शिद्दत से धरती को गले लगा रहे थे, चूम रहे थे। उनके चुम्बन से धरती खिल उठी थी, लहक उठी थी। वह भी तो 'उसके' प्यार से ऐसे ही जी उठती थी, लहक उठती थी। 'वह' जिस कदर उसे टूट कर चाहता था, उससे वह अक्सर डर जाया करती थी। उसके अंदर का भय उससे पूछता यह प्रेम की डोर अगर टूट गई तो? तब वह और जोर से उसे अपने सीने से भींच लेती थी, उसके माथे पर अपने दहकते होंठ धर देती थी और 'वह' उसकी दीवानगी को देख निहाल हो उसे और टूट कर चाहने लगता था।

बूंदों ने उसके नर्म गालों को स्पर्श किया तो वह आंखों से यादों के कतरों को पोंछते हुए वर्तमान में लौट आई थी। आज वह उसे बारिश में भीग कर याद करना चाहती थी। जीवन पर विराम लगाती किसी रुकी थमी नदी सी नहीं बल्कि जिंदगी को एक नए मायने देने के हौंसले के रूप में याद करना चाहती थी। उसकी यादों को हमेशा के लिए अपने दिल के कैदखाने में कैद कर लेना चाहती थी।

बूंदों ने हौले से कहा- कहां खो गई? सुनो! जीवन की सुंदरता उसकी गतिशीलता है, मेरी लाडो! चलते रहने का नाम ही तो जीवन है और ठहरना..... ठहरना कायरता है, मौत है। मौत से पहले मौत की कामना..... जिंदगी को यह शोभा देता है क्या? कहते हुए बूंदों की लड़ियों ने उसका हाथ पकड़कर सब कुछ भुलाकर मौजूदा लम्हों को जी लेने का इसरार किया।

बूंदों के बोल उसके कानों में गूंजते रहे बार-बार लगातार बूंदों की आवाज़ कानों के पर्दों से टकराती रही..... ठहरना कायरता है, मौत है।

और फिर वह निकल पड़ी आंगन में बारिश की बूंदों का खुले मन से स्वागत करने के लिए, जले हुए मन के फफोले को शीतलता देने के लिए। बारिश की नर्म बूंदें उसके मन पर छाई गम की स्याह बदली को अपनी निर्मलता से धोने लगी थी।

आंगन के बीचों-बीच वह अपने दोनों हाथों को दोनों ओर फैलाए, आंखें मूंदें अपने अंदर की घुटन को, उसको खो देने के दर्द को आंखों की बरसात से दिलासा देने लगी थी।

बहुत देर तक वह यूं ही बाहें फैलाए, आंखें बंद किए अपने भीतर अपने आप को टटोल रही थी, अपने मन की उलझन से उलझ रही थी। समाज की मर्यादाएं उसे क्रोधित नजरों से देखते हुए चेतावनी दे रही थी– मन का ऐसे बेकाबू होना ठीक नहीं है लड़की! तू विधवा है, तुझे विधवा की तरह ही जीना होगा। अपने मन की चंचलता पर लगाम लगाना होगा.... पर आज वह कुछ भी सुनना नहीं चाहती थी।

आंखें खुली तो बरामदे में बैठी बूढ़ी सास से नजरें जा मिली। उसकी नजरें झुक गई, मानों उसकी चोरी पकड़ी गई हो, खुश होकर उसे याद करने की चोरी, मर्यादा की बेड़ियों को परे धकेल कर आगे बढ़ने की चोरी, समाज की बनी-बनाई लीक से हटकर चलने की चोरी, पर सास के उदास चेहरे पर मुस्कान का छोटा इंद्रधनुष खिला था। एक मोहक मुस्कान, ममता से भरी मुस्कान। उन्होंने अपनी बाहें फैला दी थी। बहुत दिनों बाद उनकी बहू की आंखों में जिंदगी हौले-हौले सांस ले रही थी।

दौड़ती हुई आकर उसने सास की गोद में सिर छुपा लिया था। जैसे पूछना चाह रही हो- 'माँ! मैंने मन की सुन कर कुछ गलत तो नहीं किया न?' सास जिसका रीता आंचल हर पल उसके एकलौते बेटे के न होने का दंश चुभोता रहता था, उस आंचल से बहू के भीगे माथे को पोंछते हुए जैसे वह दिलासा दे रही थीं –

नहीं मेरी बच्ची! तूने कोई गलती नहीं की अपने मन की सांकल खोल कर जिंदगी को आने दे, उसे फिर से मुस्कुराने दो।

सांवन की बूंदें मुस्कुराकर और देखते इठलाकर धरा की निराली छवि को चूमने लगी और दूर क्षितिज पर एक बेहद खूबसूरत इंद्रधनुष अपनी बाहें खोलकर होने वाले नए सवेरे का स्वागत कर रहा था। ❐

हिंदी भाषा की उन्नति का अर्थ है राष्ट्र और जाति की उन्नति।

- रामवृक्ष बेनीपुरी

यादों की अलमारी

कई दिनों से बंद पड़ी,
यादों की अलमारी को खोला है...
जीवन पर जंग बन गए,
पलों को इक थपकी से टटोला है...

तेरी यादों का मंडप बिखरा,
इस दिल पर मैंने तान लिया...
हर मझधार से बच निकल अब,
जीवन को अनन्तिम उन्माद दिया...

प्रेम शब्द का अर्थ अनोखा,
जैसे हर धड़कन ने अब जान लिया...
प्रेम-देवता इस जीवन का,
फिर से तुमको ही मान लिया...

तन से तन का मिलन नहीं,
यह मिलन रुह सा पावन है...
मरुथल की तपती धरती पर,
यादों से बरसा झूम के सावन है...

कई दिनों से बंद पड़ी
यादों की अलमारी को खोला है...

आशीष आनन्द आर्य, हिंदी अनुवादक
धौलीगंगा पावर स्टेशन, पिथौरागढ़ (उत्तराखंड)

एक महिला सिविल इंजीनियर का 'साइट अनुभव'

प्रीति कुमारी, प्रबंधक (सिविल)
तीस्ता- VI जल विद्युत परियोजना, सिंगताम, गंगटोक (सिक्किम)

परिवर्तन ही संसार का नियम है और यह नियम हमारी नौकरी का भी एक अति महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसी नियम के अनुसार 15 अप्रैल 2021 को मेरे तबादले का आदेश जारी किया गया, मुझे कुछ ही दिनों में दक्षिण सिक्किम स्थित तीस्ता-VI.... जल विद्युत परियोजना में कार्यभार ग्रहण करना था।

तबादला ऐसे समय में हो रहा था जब कोविड-19 महामारी की घातक दूसरी लहर चरम पर थी और इस घातक लहर ने जाने कितनों के अपनों को उनसे छीन लिया था। हर व्यक्ति, हर जगह, हर मन में कोविड का खौफ था। लोग घरों में कैद थे और मजबूरीवश ही बाहर निकलते थे। 'न्यूटन के पहले नियम' और कोविड की परिस्थितियों के हिसाब से मैं थोड़ी परेशान तो हुई। फिर मैंने 'डर' को किनारे कर, तबादले पर जाने के लिए मन पक्का किया और अपना सामान बांधना शुरू कर दिया। जल्दी ही, अपने घर को सामान रूपी ट्रक में बांधकर अपने छह साल के बच्चे को साथ लेकर निकल पड़ी अपने नए सफर की ओर।

निगेटिव आरटी-पीसीआर रिपोर्ट एवं दिल्ली से गंगटोक तक की हवाई टिकट ले निकल तो गई, पर एयरपोर्ट पहुंच कर पता चला कि मेरी फ्लाइट रद्द हो गई है। अब हमारे पास दो ही रास्ते थे, या तो वापस जाऊं अथवा हवाई यात्रा से बागडोगरा (सिलीगुड़ी) पहुंचकर चार-पांच घंटे की सड़क मार्ग यात्रा के बाद छह बजे से पहले (कोविड नियमों के अधीन) सिक्किम पहुंच जाऊं। दिल्ली से बागडोगरा पहुंचकर, वहां से सड़क यात्रा करते हुए छह बजे तक सिक्किम पहुंचना लगभग नामुमकिन सा था और अगर एयरपोर्ट से वापस घर जाती तो आरटी-पीसीआर की वैधता समाप्त हो जाती। खैर फैसला यही किया कि बागडोगरा पहुंचकर वहीं से सिक्किम पहुंचा जाए। काफी जद्दोजहद के बाद, सिलीगुड़ी- गंगटोक मार्ग पर उल्टियां करती हुई 6.30 बजे शाम तक दौड़ती-भागती सिक्किम पहुंच ही गई। लेकिन शाम 06:00 बजे के बाद सिक्किम का प्रवेश द्वार बंद कर दिया गया था। प्रवेश द्वार पर स्थित राज्य प्रशासन के अधिकारियों और चौकसी के लिए नियुक्त पुलिस कर्मियों की लाख विनती करने के बाद भी किसी ने एक न सुनी। उसके बाद, परियोजना अधिकारियों की मदद से कुछ घंटों के बाद अपने गंतव्य तक पहुंच पाई और वहां पहुंचते ही मुझे क्वारंटीन कर दिया गया...

निगम मुख्यालय के डिज़ाइन विभाग में रहते हुए, मैं 'तीस्ता-VI जल विद्युत परियोजना' से संबंधित हर छोटे-बड़े कार्य से जुड़ी हुई थी। मुझे शुरू से ही इस परियोजना से कुछ खास लगाव था। लेंको की पीडीएफ ड्राइंग से एक-एक लाइन मापकर नई निर्माण ड्राइंगों को तैयार किया था। तत्कालीन विकासकर्ता मैसर्स लेंको द्वारा तीस्ता-VI जल विद्युत परियोजना की आधी-अधूरी संरचना को एनएचपीसी द्वारा नए डिज़ाइन एवं ड्राइंग के अनुसार पूरा किया जाना था। मुझे अपनी ही बनाई गई ड्राइंगों को मूर्त रूप में बनवाने का मौका मिला था। मैंने बिना कुछ सोचे-समझे मौके पे चौका मारा और शुरुआत हो गई....... मेरे जीवन के एक नए अनुभव की, एक साइट इंजीनियर के रूप में....

आज के समय में भी निर्माणाधीन साइटों पर पुरूषों को प्राथमिकता दी जाती है, विशेष रूप से जल विद्युत परियोजनाओं में, जो सुदूर स्थानों पर तो होती ही हैं साथ ही वहां मूल बुनियादी सुविधाओं का भी सामान्यतः आभाव रहता है। लेकिन एक महिला सिविल इंजीनियर के लिए यह कहना कि साइट पर नहीं जाना....... उचित नहीं होगा। महिला सिविल इंजीनियर को कुछ सीखने और कार्य अनुभव के लिए विभिन्न बाधाओं एवं मान्यताओं को गलत साबित करके दिखाना पड़ता है। मैं यह तो बिल्कुल ही नहीं कहूंगी कि यह करना आसान होता है। पर हां, अगर आपके अंदर कुछ सीखने का जज्बा एवं हिम्मत हो तो बड़ी-बड़ी कठिनाइयां भी आसान हो जाती हैं।

जब मैं साइट पर पहुंची तो वहां काम करने वाले लोग बड़े ही कौतूहल दृष्टि से मुझे देखते। उनके चेहरे पर प्रश्न होते थे कि क्यूं आई हो यहां, ऐसी क्या मजबूरी है?, यह जगह तुम्हारे लिए नहीं है इत्यादि.....। कुछ लोग तो दयावश सामने से आकर बोल पड़ते,

'मैडम आप ऑफिस में काम ले लो'। मैं बस यही कहती, मैं कुछ सीखने आई हूँ और मुझे कोई समस्या नहीं है। लग्न व ऊर्जा के साथ परियोजना को पूरा करने के उद्देश्य से साइट पर पहुंच जाती थी। परिणामस्वरूप, धीरे-धीरे लोगों ने बोलना बंद कर दिया और मेरी मदद करने लगे। गर्मियों में पहाड़ वाली चिलचिलाती धूप बर्दाश्त करना मुश्किल हो जाता था। बारिश में लगातार होती वर्षा में भीग जाने की वजह से कितनी बार बीमार भी पड़ी। कितनी बार मन में आता कि साइट का काम छोड़ आफिस का काम कर लेती हूँ। पर ये बातें सिर्फ सोचने तक सीमित रही, कभी ऐसा नहीं कर सकी। कंक्रीट की पहली पोरिंग से लेकर परियोजना की हर एक प्रगति के साथ मुझे उतनी ही खुशी होती, जितनी खुशी किसान को अपनी लहलहाती खेती देखकर होती है। परियोजना से जुड़े सभी लोगों की मेहनत रंग लाई और जल्द ही तीस्ता-VI जल विद्युत परियोजना (बैराज परिसर), पानी और कीचड़ से भरे मैदान की जगह एक सुदृढ़ संरचना में परिवर्तित होने लगी।

परियोजना का निर्माण कार्य अभी भी चल रहा है, यह परियोजना एनएचपीसी के लिए एक चुनौतीपूर्ण परियोजना है। निर्माण कार्य पूरा होने और कमीशनिंग तक कई चुनौतियां हैं जिसमें प्रतिकूल भौगोलिक परिस्थिति एवं प्राकृतिक आपदाओं की प्रमुख भूमिका है। अभी हाल ही में, अक्तूबर-2023 की भीषण बाढ़ ने तीस्ता बेसिन की सारी परियोजनाओं को भारी क्षति पहुंचाई। तीस्ता-V पावर स्टेशन जैसा सुंदर और सुदृढ़ प्रोजेक्ट भी पूर्णतः बंद हो गया। महज कुछ क्षणों में बना-बनाया सालों का इन्फ्रास्ट्रक्चर तहस-नहस हो गया। यह अत्यंत दुखदायी था और आशा करती हूँ कि यह पावर स्टेशन पहले से भी ज्यादा सुदृढ़ बनकर तैयार हो और फिर से बिजली उत्पादन की शुरुआत करे।

अपनी इस साइट अनुभव की यात्रा में मैंने बहुत सारी विकट परिस्थितियों का सामना किया है। एक महिला को कार्यालय के अलावा बच्चे की अच्छी परवरिश और अपने घर के कार्यों को भी देखना होता है। परिवार का साथ हो तो यह थोड़ा आसान हो जाता है लेकिन अकेले सारा काम करना मुश्किल होता है। शायद ईश्वर ने नारी को इसीलिए अधिक सहनशील व शक्ति का प्रतीक बनाया है।

अपनी ही बनाई गई ड्राइंगों को मूर्त रूप से अपने सामने अपनी निगरानी में बनते देखना मेरे लिए सपने से कम नही है। आज भी मैं पूरे जज्बे के साथ साइट पर काम कर रही हूँ, एक आशा के साथ कि हमारी मेहनत और त्याग से परियोजना का कार्य जल्द पूरा हो और देश एवं निगम की प्रगति में मैं भी कुछ योगदान कर सकूं। मैं उन सब के प्रति आभारी हूँ जिन्होने मुझे हमेशा प्रोत्साहित किया एवं मेरा साथ दिया। साइट पर और सुदूर स्थान पर रहने की वजह से जब कभी मन में नकारात्मकता उठती है तो मैं नारी शक्ति को समर्पित निम्नांकित पंक्तियां दोहरा लेती हूँ-

आया समय, उठो तुम नारी, युग निर्माण तुम्हें करना है।
आजादी की खुदी नींव में, तुम्हें प्रगति पत्थर भरना है।
अपने को कमजोर न समझो,
जननी हो, सम्पूर्ण जगत की
गौरव हो, अपनी संस्कृति की,
आहट हो स्वर्णिम आगत की।
तुम्हें नया इतिहास देश का, अपने कर्मों से रचना है। ❐

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक है तो वह देवनागरी लिपि हो सकती है।

(जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर

पीढियां... नई और पुरानी

श्रुति सिन्हा, हिंदी अनुवादक
पार्बती जलविद्युत परियोजना चरण-II, नगवाई (हिमाचल प्रदेश)

हमारी युवा पीढ़ी केवल अपनी आधुनिक पीढ़ी को ही लेकर जागरूक नहीं है, अपितु वह अपनी पुरानी पीढ़ी को लेकर संवेदनशील भी है। आज की युवा पीढ़ी भी इन पीढ़ियों के मध्य की खाई को पाटना चाहती है। ....

सामान्य तौर पर जो पुरानी परंपरा, मान्यताओं, पुरातन रूढ़ियों का अनुकरण करने के साथ ही आने वाली पीढ़ी से पुरातनता के समर्थन की अपेक्षा रखें, उसे 'पुरानी पीढ़ी' कहा जा सकता है और इसके विपरीत जो नए के प्रति आकर्षित हो, महत्वकांक्षी होने के साथ ही वह परिवर्तन की मांग करें उसे नई पीढ़ी कहा जाता है। आमतौर पर ऐसे लक्षण 'नई पीढ़ी' में ही दिखाई दे ये जरूरी नहीं है पर ऐसी मान्यता बनी हुई है। यह अनिवार्य भी नहीं है कि जो व्यक्ति पुरानी पीढ़ी का हो उसके विचार आधुनिक हो ही नहीं। यह एक सामान्य तथ्य है कि पुरानी पीढ़ी को परंपरा से जोड़ा जाता है और नई पीढ़ी को आधुनिकता का प्रतिनिधित्व करने वाली पीढ़ी समझा जाता है। असल में 'आधुनिकता' समय से जुड़ा हुआ शब्द है, जो अपने समय में आधुनिक होता है वह आने वाले समय में पुरातन हो जाता है। इस आधुनिकता का संबंध विचार प्रक्रिया से भी है। काल विशेष से प्राचीन किंतु विचार से आधुनिक हो सकता है।

पुरानी पीढ़ी में अधिकांश लोग पुरानी परंपराओं का अनुकरण करते हुए पाए जाते हैं और अपनी आने वाली पीढ़ी के प्रति एक अपेक्षित भाव भी रखते है। दरहसल परंपरा और रूढ़ि में भेद होता है, परंपरा उस बहते हुए पानी की तरह है जो निरंतर कलकल करती हुई बहती है, वह स्थिर नहीं रहती तथा रूढ़ि उस जमा हुए पानी की तरह है जो काई बन जाता है। परंपरा का स्थिर और अपरिवर्तित हो जाना ही उसे रूढ़ि बना देता है। परंपरा से रूढ़ि बनने में अधिक समय नहीं लगता है। यह एक सामान्य सी प्रक्रिया है कि पुरानी पीढ़ी भी अपने समय में समकालीन रही होगी, उसने भी कई बातों का विरोध किया होगा और आज उन्हीं मान्यताओं का समर्थन भी करती है।

उदाहरण के तौर पर मन्नू भंडारी कृत 'त्रिशंकु' में पुरानी और नई पीढ़ी की टकराहट को रेखांकित किया गया है। इस कहानी में एक माँ है जिन्होंने तो 'प्रेम विवाह' किया किंतु वह अपनी बेटी को प्रेम करने की छूट नहीं देती है। ऐसे में माँ के भीतर अपनी बेटी के लिए एक संकोच भावना उत्पन्न हो जाती है। बेटी को ऐसा महसूस होता है कि वह माँ के विरुद्ध जा सकती है किंतु दो पीढ़ियों अर्थात् (नाना और माँ) के विरुद्ध जाना एक कठिन स्थिति बन जाता है। अब माँ भी उन्हीं विचारों का समर्थन करती है जो उनके समय में उनके पिताजी (नानाजी) के कट्टर विचार थे। यह एक आयु की सीमितता है जिसमें 20-25 वर्ष के लोग 'प्रेम विवाह' का समर्थन करते है और वही लोग 40-45 वर्ष की उम्र में दूसरे पड़ाव पर कट्टर विरोधी बन जाते है। यह सिर्फ प्रेम विवाह के लिए ही नहीं है अपितु उन सभी मान्यताओं के प्रति है जो दूसरों को 'स्पेस' नहीं देती है। पुरानी पीढ़ी भी समकालीन रही होगी और उन पर भी बंधनों को थोपा गया होगा। जिस कारण उनको मुक्ति नहीं मिली और इसी कारण वह नई पीढ़ी को मुक्ति देने में संकोच करती है। 'नई पीढ़ी' के टैबू के अधीन रहकर भी लोग पुरातनता का समर्थन करते हुए स्वयं को 'आधुनिकता' की श्रेणी में रखते है किंतु वह आधुनिक नहीं हो सकते है क्योंकि आधुनिकता किसी पीढ़ी विशेष या व्यक्तित्व का नाम नहीं है अपितु आधुनिकता का प्रत्यक्ष संबंध विचार प्रक्रिया से है। पुरातनता में भी नवीनता होती है जैसा कि माँ की पुरानी साड़ी से बेटी अपने अनुसार सूट या ड्रेस बनवा लेना। यह एक साधारण-सा उदाहरण है जो हम अपने निजी जीवन में अपनाते है।

नए के प्रति आकर्षित होना स्वाभाविक है। यही तत्व नई पीढ़ी की ताकत के साथ कमजोरी बना हुआ है। अगर सफलता प्राप्त होने

पर परिवार का सहयोग मिले तो परिस्थिति अनुकूल है लेकिन इसके विपरीत सफलता न मिलने पर परिवार का सहयोग और स्नेह दोनों ही छूट जाता है। नई पीढ़ी को जब एहसास हो कि वह आर्थिक रूप से सक्षम है तब ही उसके निर्णयों में परिवार की सहभागिता शामिल होती है। ज्यादातर मामलों में नई पीढ़ी भी उन पुरातन परंपराओं, मान्यताओं और रूढ़ियों को तोड़ने में भीतर से असमर्थ होती है क्योंकि बचपन से ही उनके भीतर मान्यताओं के नाम का 'डोज़' भर-भर कर डाला गया है जिसे एकदम से अलगाना किसी के लिए भी मुश्किल ही होगा।

असल में नई और पुरानी की टकराहट का बीज 'संशोधन' है- नई पीढ़ी पुरातन मान्यताओं में संशोधन की मांग रखती है और स्वयं को विशिष्ट बनाना चाहती है संशोधन भी एक सीमा तक ही होना चाहिए नहीं तो वह खोखलेपन में तब्दील हो जाएगा जैसे- संयुक्त परिवार का एकल में विलय होना। आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने 'परंपरा और आधुनिकता' शीर्षक निबंध में दोनों पर चर्चा करते हुए सामंजस्य स्थापित करने का पुरज़ोर प्रयत्न किया है। परंपरा और आधुनिकता दो पैरों के समान चलने वाली क्रिया है जिसमें आगे बढ़ने वाला पैर आधुनिकता है तो पिछला पैर, जो स्थाई है, वह परंपरा है। परंपरा के बिना आधुनिकता का वजूद नहीं है। वास्तव में, परंपरा ने ही आधुनिकता का विकास किया है। यही धारणा हमें पुरानी और नई पीढ़ी के संदर्भ में अपनानी चाहिए। हमें एक समन्वय की अवधारणा को अपनाने की जरूरत है और यही बेहतरीन विकल्प होगा।

पुरानी पीढ़ी के प्रयत्नों ने ही नई पीढ़ी में विकास किया है। नई पीढ़ी के अस्तित्व का निर्माण पुरानी पीढ़ी के कर्म पर निर्भर करता है। दोनों ही पीढ़ियों के मध्य एक समन्वय स्थापित किया जा सकता है जिसकी शुरुआत मुझसे होगी और जब यह समन्वय स्थापित हो जाएगा तो कोई भी पीढ़ी 'नई' या 'पुरानी' नहीं रहेगी......... ऐसा मुझे विश्वास है। ❒

विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।

- वाल्टर चेनिंग

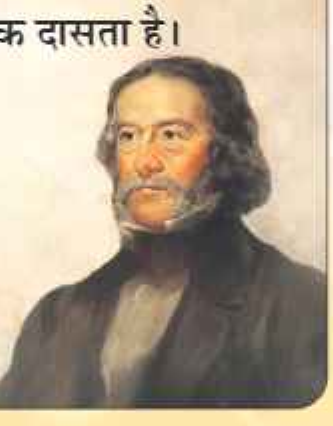

देखो... इंसानों की माया

देखो, देखो, हम इंसानों की माया...
पेड़ काटकर जंगल छांटकर, पर्यावरण पर संकट लाया।

अपने स्वार्थ को खूब बढ़ाया......
पर्यावरण को खूब सताया ।
पंछी सारे लुप्त हो गए,
फिर भी हमको समझ न आया।

देखो, देखो, हम इंसानों की माया...

सुन लो पर्यावरण की दुहाई,
सुन लो पेड़ काटने वाले कसाई।
पेड़ लगाओ, देश बचाओ,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ।

विकास की इस अंधी दौड़ में,
ध्यान रहे पर्यावरण पर,
संदेश यह सब तक फैलाओ,
आओ, पर्यावरण को बचाओ।

वृक्षों पर ही हैं ... सांसें निर्भर
यह है जीवन-दाता,
आया है पर्यावरण पर संकट
चलो मिलकर यह संकल्प उठाएं
हर जन एक वृक्ष लगाए।

ये कटते वृक्ष, सूखती नदियां,
सिमटते हिम पर्वत, सूखते ताल,
कहते हैं सब.. ये संकट का जाल!

उठो, नींद से जागो भैया,
सृष्टि का न नाश करो,
सूखा, बाढ़ काल है,
प्रकृति की तो मार है।
चलो मिलकर यह संकल्प उठाए,
हर जन एक वृक्ष लगाए।

सुरेश सिंह, उप प्रबंधक (सिविल)
धौलीगंगा पावर स्टेशन, पिथौरागढ़ (उत्तराखंड)

ओवर पेरेंटिंग

श्वेता शर्मा, सहायक प्रबंधक (सचिव)
क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ (पंजाब)

मेरे कार्यालय के पास एक पेड़ है, वहां हर सुबह एक बूढ़ा आदमी अनाज का एक पैकेट लेकर जाता और एक पेड़ के नीचे एक मुट्ठी अनाज डालता। मुझे लगता कि पक्षियों के लिए दाना छोड़ना कितना अच्छा है। फिर एक विचार आता है – पक्षियों को पेड़ के नीचे दाना ढूंढने की आदत पड़ जाएगी और फिर समय के साथ-साथ, वे भूल जाएंगे कि अपने भोजन की तलाश कैसे करें। अंततः, वे अपने भोजन के लिए काम करने की इच्छा खो देंगे। क्या होगा जब एक दिन यह बूढ़ा आदमी अनाज डालने में असमर्थ हो जाएगा और पेड़ के नीचे अनाज नहीं डाल पाएगा?

उस बूढ़े व्यक्ति ने मुझे अपने माता-पिता की उस पीढ़ी की याद दिला दी, जिसकी मैं सदस्या हूँ। मेरी पीढ़ी के कई लोगों ने अपने बचपन में संघर्ष किया है और वे 'स्व-निर्मित' हैं। हमारी पीढ़ी ऐसे माता-पिता की है जो मध्यमवर्गीय परिवारों में उस समय बड़े हुए जब भारत आर्थिक रूप से बहुत सफल नहीं था। कार्यबल में कदम रखते ही वे समृद्धि की लहर पर सवार होने लगे। उनमें से अधिकांश लोग अपने बच्चों की सभी इच्छाओं को पूरा करने की दिशा में लग गए और उन्हें वह आराम देने का प्रयास करने लगे..... जिससे स्वाभाविक रूप से वे खुद वंचित रहे।

कई लोगों ने उस लड़के की कहानी सुनी होगी जिसने तितली को कोकून से काटकर बाहर निकालने में मदद की थी क्योंकि तितली को संघर्ष करते देखकर वह बहुत चिंतित था। उसकी मदद करने के परिणामस्वरूप, तितली सूजे हुए शरीर और सिकुड़े हुए पंखों के साथ निकली और उड़ने की कोशिश करने लगी किंतु उड़ने में असमर्थ रही और जीवन भर रेंगती रही। तरल पदार्थ को पंखों तक पहुंचाने व पंखों को उड़ने के लिए पर्याप्त मजबूत बनाने के लिए कोकून से बाहर निकलने का संघर्ष आवश्यक था। छोटे लड़के ने तितली की मदद करके उसे जीवन भर के लिए आश्रित व अपाहिज बना दिया।

हममें से कई माता-पिता अपने बच्चों को संघर्ष से बचाने की पूरी कोशिश करते हैं। परिणामस्वरूप, बच्चे खुद को अपने सीमित शारीरिक या मानसिक आराम क्षेत्र से परे धकेलने और यहां तक कि सरल कार्य करने में भी अनिच्छुक हो जाते हैं।

जिंदगी ऐसी नहीं है। संभावना यह है कि हमारे सबसे व्यस्त और महत्वपूर्ण कार्य अवधि के समय हमें कई क्षेत्रों में ध्यान देने की आवश्यकता होगी। हममें से अधिकांश लोग उस समय को याद करते होंगे जब हम कई दिशाओं में फैले हुए अत्यावश्यक और महत्वपूर्ण कार्य एक साथ करते थे। जब हम एक चीज़ का ध्यान रखते हैं तो बाकी सभी चीज़ों का ध्यान रखने के लिए कोई देवदूत नहीं आता। परीक्षा के लिए पढ़ाई के दौरान अपने बच्चों को कुछ काम करने और अपनी जरूरतों का स्वतंत्र रूप से ख्याल रखने से वे बेहतर रूप से तैयार होंगे और उन्हें प्राथमिकता और बहु-कार्य सीखने में मदद मिलेगी।

भारत में आर्थिक रूप से संपन्न अधिकतर माता-पिता यही सोचते हैं कि उनके बच्चों को घर का काम नहीं करना चाहिए। अंशकालिक सहायता आमतौर पर मध्यमवर्गीय परिवारों में भी पाई जाती है। हम में से कितने लोगों ने अपनी कार स्वयं धोई है या अपना बाथरूम साफ किया है? हममें से कितने लोग अपने बच्चों से ऐसी अपेक्षा करते हैं? घर का काम करना हमें व्यावहारिक और विनम्र बनाता है। यह हमें हकदार के बजाय कृतज्ञ बनाता है। ये गुण वयस्कता में पारस्परिक संबंध बनाने में बहुत मदद करते हैं।

हम अपने बच्चों को सोच के संघर्ष से भी बचाते हैं। हम सभी जानते हैं कि हमें बच्चों को उनके स्वयं के उत्तर खोजने में मदद करनी चाहिए, लेकिन अक्सर हम इसे उन्हें एक थाली में परोस कर दे देते हैं क्योंकि यह हमारे लिए आसान होता है या क्योंकि वे इसे बहुत अधिक महत्व देते हैं। हम बचपन में, जब भी कोई अपरिचित शब्द देखते थे तो उन्हें शब्दकोश का सहारा लेकर ढूंढते थे। मेरा बेटा बस अपनी किताब देखता है और बिना खुद कुछ ढूंढे कठिन शब्द का मतलब पूछ लेता है हम उस बूढ़े आदमी से कितने अलग हैं जो पक्षियों को दाना खिलाता था?

और फिर हमें आश्चर्य होता है कि बच्चों की यह पीढ़ी कोई पहल क्यों नहीं करती और इतनी आसानी से हार क्यों मान लेती है। क्यों वे इतनी सारी चीजों के हकदार महसूस करते हैं और जब उन्हें वह नहीं मिलती तो वे नखरे क्यों दिखाते हैं।

हम यह महसूस करने में विफल रहते हैं कि यह पहाड़ की चढ़ाई ही है जो हमें केवल शिखर पर पहुंचने की तुलना में विजेता बनाती है। जैसा कि जर्मन दार्शनिक फ्रेडरिक नीत्शे ने कहा था, "जो चीज़ मुझे नहीं मारेगी, वह मुझे और मजबूत बनाएगी।" हमें अपने बच्चों को संघर्ष करने के लिए तैयार करना होगा ताकि वे मजबूत बनें और जब विपरीत परिस्थिति आएगी, तो उन्हें बचाने के लिए हमारी जरूरत नहीं पड़ेगी। ❒

इंदिरा सागर पंप भंडारण योजना तथा इसके समीपवर्ती दर्शनीय स्थल-महाकालेश्वर और ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग

रतन कुमार दास, समूह वरिष्ठ प्रबंधक (भूविज्ञान)
अभियांत्रिकी एवं भूतकनीकी विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

एनएचपीसी लिमिटेड 1975 में अपनी स्थापना के बाद से ही भारत की विभिन्न नदी घाटियों में पनबिजली क्षमता विकसित करने के लिए सरकारी क्षेत्र की बड़ी हिस्सेदारी के रूप में उभरा है। जल विद्युत परियोजनाएं राष्ट्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में कई लाभों के साथ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह पर्यावरणीय अनुकूल, प्रदूषण रहित हैं, अक्षय जल संसाधनों, कम संचालन व रखरखाव, भंडारण आधार का उपयोग करना जो सिंचाई, बाढ़ नियंत्रण, पेयजल आपूर्ति, नेविगेशन, निर्माण और पर्यटन के लिए भी उपयोगी है। स्वच्छ जल विद्युत की आवश्यकता और मांग को पूरा करने के लिए विभिन्न क्षमताओं वाली नदी घाटी परियोजनाओं के विकास में एनएचपीसी भारत के उत्तर एवं उत्तर-पूर्वी पहाड़ी इलाकों जैसे जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश इत्यादि में कार्यरत है। वर्तमान में, एनएचपीसी की कुल संस्थापित क्षमता 7144.20 मेगावाट है, जिसमें संयुक्त उद्यम द्वारा 1593 मेगावाट शामिल है।

वर्ष 2021 में संपन्न 26वां संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन जिसे आमतौर पर कॉप 26 के रूप में जाना जाता है जिसमें जलवायु परिवर्तन से संबंधित मापदंडों के अंतर्गत भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत से उत्सर्जन में कमी के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए लगभग 175 गीगावाट क्षमता हासिल करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। नवीकरणीय ऊर्जा में पंप भंडारण योजनाओं का विस्तार वर्तमान, परिस्थितियों में विशेषताओं के कारण, इसके प्रसार पर विशेष ध्यान दे रही हैं। भंडारण योजना की विशेषताएं इस प्रकार हैं :

- भंडारण योजना की विशेषताएं
- ग्रिड बैलेंसिंग
- पीक डिमांड को पूरा करना
- ब्लैक स्टार्ट, ग्रिड सहायक सेवाएं
- रैंप अप और रैंप डाउन
- एनर्जी आर्बिट्रेज, स्पिनिंग रिजर्व, रिएक्टिव सपोर्ट
- सिस्टम परिचालन लागत कम करना
- अधिक उत्पादन को समायोजित करने के लिए तेजी से ऊपर और नीचे रैंप करना
- ट्रांसमिशन लाइनों के उन्नयन को स्थगित करना
- ट्रांसमिशन कंजेशन में कमी
- एक राज्य से उत्पन्न नवीकरणीय ऊर्जा को दूसरे राज्य में संग्रहित किया जाना

इंदिरासागर पंप भंडारण योजना (640 मेगावाट)

इंदिरासागर पंप भंडारण योजना, इंदिरासागर पावर स्टेशन, पुनासा के पास मध्य प्रदेश में खंडवा शहर से लगभग 60 किलोमीटर और इंदौर शहर से 120 किलोमीटर दूर स्थित है। निकटतम रेलवे स्टेशन खंडवा है, जो पुनासा से लगभग 55 किमी दूर है और निकटतम हवाई अड्डा देवी अहिल्या बाई होलकर इंदौर में है, जो पावर स्टेशन से लगभग 120 किमी दूर है। इंदिरासागर पंप भंडारण योजना से क्षेत्र में ढांचागत विकास गतिविधियों के लिए सभी आवश्यक सुविधाएं (सड़क, रेल, हवाई नेटवर्क, टेलीफोन और बिजली आपूर्ति) उपलब्ध हैं।

इंदिरासागर पंप भंडारण योजना, इंदिरासागर पावर स्टेशन (1000 मे.वा.) के पास ऑन-रिवर पंप भंडारण योजना की परिकल्पना की गई है जो इंदिरासागर पावर स्टेशन (1000 मे.वा.) और ओंकारेश्वर पावर स्टेशन (520 मे.वा.) के जलाशयों के मध्य जल के अंतर-स्थानांतरण द्वारा तैयार किया जाएगा। इंदिरासागर पंप भंडारण योजना में इंदिरासागर बाँध का जलाशय ऊपरी जलाशय होगा और ओंकारेश्वर पावर स्टेशन का जलाशय निचला जलाशय होगा।

भूवैज्ञानिक तौर पर इंदिरासागर पंप भंडारण योजना ऊपरी विंध्य सुपर समूह (भांडेर समूह) में स्थित है, जिसमें मजबूत, भूरे रंग के कठोर क्वार्ट्ज एरेनाइट्स (क्वार्टजाइट), रेत के पत्थरों के साथ बैंगनी रंग के छोटे सिल्ट स्टोन पत्थरों का अंतःस्थापित अनुक्रम है।

भारत के भूकंपीय क्षेत्र मानचित्र के अनुसार, यह क्षेत्र भूकंपीय क्षेत्र III (आईएस कोड 1893 (भाग I): 2016) में अवस्थित है।

इंदिरासागर पंप भंडारण योजना के प्रमुख घटक

इंदिरासागर पंप भंडारण योजना (640 मे. वा.) के प्रमुख घटक इस प्रकार हैंः

- इनलेट वियर, 100 मीटर लंबा, 20 मीटर चौड़ा, ट्रेपेज़ॉइडल आकार का लगभग 119 मीटर लंबा, कंक्रीट लाइनेड इनलेट चैनल की लंबाई, चौड़ाई 100 मीटर से 36 मीटर तक।
- ट्रेपेजॉइडल, कंक्रीट लाइन्ड, 36 मीटर (नीचे की चौड़ाई) x 43.5 मीटर (ऊंचाई), लगभग 521 मीटर लंबा वाला हेड रेस चैनल।
- इनटेक 192 मीटर x 25 मीटर (चौड़ाई) x 48.5 मीटर (ऊंचाई)।
- इनटेक संख्या और आकार (गेट खोलना) 8 संख्या, 6.75 मीटर (चौड़ाई) x 8.1 मीटर (ऊंचाई)।
- 6.00 मीटर व्यास के 8 अंडर ग्राउंड वृत्ताकार, स्टील लाइंड, प्रेशर शाफ्ट/ पेनस्टॉक जिनकी लंबाई 258 मीटर से 376 मीटर तक होती है।
- अर्ध भूमिगत पावर हाउस, 275 मीटर (लंबाई) x 27 मीटर (चौड़ाई) x 55.4 मीटर (ऊंचाई) ।
- 8 नंबर, 8.1 मीटर व्यास, 181 मीटर (लगभग) से 251 मीटर (लगभग) टीआरटी और 192 मीटर लंबा (लगभग) टीआरटी आउटलेट वियर।

इस परियोजना के समीप कई दर्शनीय स्थल भी हैं। इन दर्शनीय स्थलों में ज्योतिर्लिंग की महत्ता सबसे अधिक है और इसके अलावा इस क्षेत्र को दो और ज्योतिर्लिंगों के समीप होने का सौभाग्य प्राप्त है। ज्योतिर्लिंग वे स्थान कहलाते हैं जहां पर भगवान शिव स्वंय प्रकट हुए थे एवं ज्योति रूप में स्थापित हैं। महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग इंदौर से 55 कि.मी. और ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग इंदिरासागर पावर स्टेशन, पुनासा से 55 कि.मी. की दूरी पर अवस्थित हैं।

महाकालेश्वर मंदिर

उज्जैन में सन् 1107 से 1728 ई. तक यवनों का शासन था और इनके शासनकाल में अवंति की लगभग 4500 वर्षों में स्थापित हिंदुओं की प्राचीन धार्मिक परंपराएं लगभग नष्ट हो चुकी थी। लेकिन 1690 ई. में मराठों ने मालवा क्षेत्र में आक्रमण किया और 1728 को मराठा शासकों ने मालवा क्षेत्र में अपना अधिपत्य स्थापित कर लिया। इसके बाद उज्जैन का खोया हुआ गौरव पुनः लौटा और 1731 से 1809 ई. तक यह नगरी मालवा की राजधानी बनी रही। मराठों के शासनकाल में यहां दो महत्त्वपूर्ण घटनाएं घटीं - पहला, महाकालेश्वर मंदिर का पुनर्निर्माण और ज्योतिर्लिंग की पुनःप्रतिष्ठा तथा सिंहस्थ पर्व स्नान की स्थापना। आगे चलकर राजा भोज ने इस मंदिर का विस्तार कराया। महाकालेश्वर, जिसे महाकाल के रूप में भी जाना जाता है। यह मध्य प्रदेश राज्य के उज्जैन नगर में स्थित, महाकालेश्वर भगवान का प्रमुख मंदिर है। स्वयंभू, भव्य और दक्षिणमुखी होने के कारण महाकालेश्वर महादेव की अत्यंत पुण्यदायी महत्ता है। ऐसी मान्यता है कि इसके दर्शन मात्र से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक महाकालेश्वर का शिवलिंग स्वयंभू (अपने आप प्रकट हुआ) स्वयं के भीतर से शक्ति को प्राप्त करने के लिए माना जाता है। महाकालेश्वर की मूर्ति दक्षिणमुखी है। महाकाल मंदिर के ऊपर गर्भ गृह में ओंकारेश्वर शिव की मूर्ति प्रतिष्ठित है। गर्भगृह के पश्चिम, उत्तर और पूर्व में गणेश, पार्वती एवं कार्तिकेय के चित्र स्थापित हैं और दक्षिण में नंदी की प्रतिमा है। तीसरी मंजिल पर नागचंद्रेश्वर की मूर्ति केवल नागपंचमी के दिन दर्शन के लिए खुली होती है। भगवान शिव का एकमात्र दक्षिणमुखी ज्योतिर्लिंग, महाकालेश्वर मंदिर शहर का मुख्य आकर्षण है। तीर्थयात्री और पर्यटक इस प्रतिष्ठित मंदिर में आशीर्वाद लेने के लिए दूर-दूर से आते हैं। महाकाल लोक गलियारा इस दिव्य मंदिर में प्रवेश द्वार है।

महाकाल लोक गलियारा

महाकाल लोक गलियारे की यात्रा राजसी नंदी द्वार और पिनाकी

ज्योतिर्लिंग के साक्षात स्वरूप के दर्शन

नंदी द्वार

द्वार से शुरू होती है। इन दोनों प्रवेश द्वार का नाम भगवान शिव से उनके गहरे संबंध के कारण पौराणिक कथा से लिया गया है। नंदी द्वार का नाम भगवान शिव के पवित्र बैल साथी के नाम पर रखा गया है, जो उनके सबसे प्रबल उपासक भी हैं, जबकि पिनाकी का नाम भगवान शिव के लिए भगवान विश्वकर्मा द्वारा बनाए गए पूजनीय धनुष के नाम पर रखा गया है।

पिनाकी द्वार

किंवदंती है कि भगवान शिव ने इस दिव्य धनुष का उपयोग असुरों के तीन शहरों- तारकाक्ष, विद्युन्माली और कमलाक्ष को नष्ट करने के लिए किया था और बाद में उन्हें त्रिपुरारी के रूप में जाना जाने लगा।

गलियारे के साथ भ्रमण करते हुए श्रद्धालु 108 अलंकृत बलुआ पत्थर के स्तंभों से मंत्रमुग्ध होते हैं, जिनमें से प्रत्येक को दिव्य 'त्रिशूल' डिजाइन से सजाया गया है और भगवान शिव की विभिन्न 'मुद्राओं' से उकेरा गया है। महाकाल लोक गलियारा एक जीवित कैनवास है, जो 192 मूर्तियों, 53 भित्ति चित्रों और 108 स्तंभों से सुसज्जित है, सभी धर्मग्रंथों से कहानियां सुनाते हैं और भक्तों और कला प्रेमियों के लिए एक सुंदर दृश्यावली प्रस्तुत करते हैं।

सूर्य के डूबने के साथ संध्या के समय, महाकाल लोक गलियारा एक दिव्य दृश्य में बदल जाता है। शाम की रोशनी, त्रिशूल से सजे स्तंभों और दिव्य भित्ति चित्रों पर एक हल्की चमक बिखेरते हुए, एक अलौकिक माहौल उत्पन्न करती है। प्रकाश का खेल आध्यात्मिक आभा को बढ़ाता है, जो भक्तों और पर्यटकों के लिए एक शांत वातावरण प्रदान करता है।

महाकाल लोक गलियारा एक पवित्र कैनवास के रूप में सामने आता है, जो कला, आध्यात्मिकता और प्राकृतिक सुंदरता का मिश्रण है। भव्य प्रवेश द्वारों से लेकर दिव्य मूर्तियों तक, मनभावन रुद्र सागर झील से लेकर महाकालेश्वर मंदिर तक जाने वाली मनोरम यात्रा तक, इस गलियारे का हर पहलू आगंतुकों को एक ऐसी दुनिया में आमंत्रित करता है जहां पवित्र और कलात्मक अभिसरण होता है।

ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग मध्य प्रदेश के इंदौर शहर से लगभग 78 कि.मी. की दूरी पर नर्मदा नदी के किनारे स्थित है। यह इंदिरासागर पावर स्टेशन से लगभग 55 कि.मी. दूर स्थित है। यह एकमात्र मंदिर है जो नर्मदा नदी के उत्तर में स्थित है। यहां पर भगवान शिव नदी के दोनो तट पर स्थित हैं। महादेव को यहां पर ममलेश्वर व अमलेश्वर के रूप में पूजा जाता है।

ओंकारेश्वर भगवान शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंग में चतुर्थ है। ओमकार का उच्चारण सर्वप्रथम सृष्टिकर्ता ब्रह्मा के मुख से हुआ था। वेद पाठ का प्रारंभ भी ॐ के बिना नहीं होता है। उसी ओमकार स्वरुप के ज्योतिर्लिंग श्री ओंकारेश्वर है, अर्थात यहां भगवान शिव ओमकार स्वरुप में प्रकट हुए हैं। मान्यता है कि सूर्योदय से पहले नर्मदा नदी में स्नान कर ॐ के आकार के बने इस प्रणव ज्योतिर्लिंग के दर्शन और परिक्रमा करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

पुराणों में स्कन्द पुराण, शिव पुराण व वायु पुराण में ओंकारेश्वर क्षेत्र की महिमा का उल्लेख है। ओंकारेश्वर में कुल 68 तीर्थ हैं। दिव्य रूप में यहां पर 108 प्रभावशाली शिवलिंग हैं। 84 योजन का विस्तार करने वाली माँ नर्मदा का विराट स्वरुप है। ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग के बारे में ऐसा भी कहा जाता है कि भगवान शिव प्रतिदिन तीनो लोकों का भ्रमण करने के पश्चात यहां आकर विश्राम करते हैं। यहां प्रतिदिन भगवान शिव की विशेष शयन व्यवस्था एवं आरती की जाती है तथा शयन दर्शन होते हैं। मान्यता यह भी है कि इस मंदिर में महादेव माता पार्वती के साथ चौसर खेलते हैं। यही कारण है कि रात्रि के समय यहां पर चौपड़ बिछाई जाती है और आश्चर्यजनक तरीके से जिस मंदिर के भीतर रात के समय परिंदा भी पर नहीं मार पाता है, उसमें सुबह चौसर और उसके पासे कुछ इस तरह से बिखरे मिलते हैं जैसे रात्रि के समय उसे किसी ने खेला हो।

ओंकारेश्वर मंदिर का विहंगम दृश्य

हालांकि ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर में भगवान शिव की प्रातः, मध्याह्न और संध्या को तीन प्रहरों की आरती होती है। लेकिन ओंकारेश्वर मंदिर की भस्म आरती विश्व प्रसिद्ध है।

महाकालेश्वर और ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग, 12 ज्योतिर्लिंग में से हैं और इनके दर्शन मात्र से ही जीवन में अद्वितीय आनंद की अनुभूति होती हैं और महादेव का आशीर्वाद प्राप्त होते हैं। ❒

मध्यस्थता: न्यायिक प्रणाली - न्यायशास्त्र के लिए सहायक संरचना

मीनाक्षी मित्तल, उप प्रबंधक (विधि)
वाणिज्यिक विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

भारत में, मध्यस्थता (मेडिएशन) एक प्रभावी वैकल्पिक विवाद समाधान (एडीआर) पद्धति के रूप में प्रमुखता प्राप्त कर रही है। मध्यस्थता भारतीय न्यायशास्त्र में हमेशा अंतर्निहित थी, संसद ने पहली बार मध्यस्थता को सुव्यवस्थित करने और वैकल्पिक विवाद समाधान की प्रक्रिया के रूप में मध्यस्थता को संहिताबद्ध करके इसकी बढ़ती प्रासंगिकता को वैध बनाने का प्रयास किया है। 14 सितंबर 2023 को मध्यस्थता अधिनियम, 2023 अस्तित्व में आया।

मध्यस्थता अधिनियम में 11 अध्याय, 65 धाराएं और 10 अनुसूचियां शामिल हैं। अधिनियम का मुख्य उद्देश्य है-

- मध्यस्थता को बढ़ावा देना और सुविधा प्रदान करना;
- संस्थागत मध्यस्थता को बढ़ावा देना;
- मध्यस्थता निपटान समझौतों को लागू करना;
- एक नियामक संस्था की स्थापना करना;
- सामुदायिक मध्यस्थता को प्रोत्साहित करना;
- ऑनलाइन मध्यस्थता को एक स्वीकार्य और लागत प्रभावी तरीका बनाना।

अधिनियम के प्रमुख प्रावधान

भारत में अदालतें अक्सर पार्टियों को लंबी और महंगी मुकदमेबाजी करने से पहले मध्यस्थता पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। कई अदालतों ने प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए समर्पित मध्यस्थता केंद्र और प्रशिक्षित मध्यस्थताओं के पैनल स्थापित किए हैं। भारत में विभिन्न संस्थाएं और संगठन मध्यस्थता सेवाएं प्रदान करते हैं। इनमें राज्य प्रायोजित मध्यस्थता केंद्र, अदालतों में मध्यस्थता केंद्र, साथ ही कानूनी पेशेवरों और संगठनों द्वारा स्थापित निजी मध्यस्थता केंद्र शामिल हैं।

मध्यस्थता प्रक्रिया में आमतौर पर निम्नलिखित चरण शामिल होते हैं:

पहल: पक्ष अदालत के आदेश से या आपसी सहमति से स्वेच्छा से मध्यस्थता के लिए सहमत होते हैं।

मध्यस्थ (मेडिएटर) की नियुक्ति: प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए एक तटस्थ और निष्पक्ष मध्यस्थ की नियुक्ति की जाती है। अधिनियम के तहत, पार्टियां मध्यस्थता के साथ-साथ मध्यस्थ नियुक्त करने की प्रक्रिया पर निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र हैं।

उद्घाटन सत्र (ओपेनिंग सेशन) : पार्टियां अपने विचार और उद्देश्य प्रस्तुत करती हैं और मध्यस्थ बुनियादी नियमों और गोपनीय पहलूओं की रूपरेखा तैयार करता है।

बातचीत और चर्चा: मध्यस्थ मुद्दों की पहचान करने, हितों की खोज करने और समाधान के लिए विकल्प तैयार करने में पार्टियों की सहायता करता है।

समझौता: यदि पक्ष पारस्परिक रूप से स्वीकार्य समझौते पर पहुंचते हैं, तो इसे अक्सर कानूनी परामर्शदाता की सहायता से औपचारिक रूप दिया जाता है और हस्ताक्षर किया जाता है।

समापन: मध्यस्थता प्रक्रिया समाप्त होती है और समझौता लागू होता है।

मध्यस्थता कई लाभ प्रदान करती है, जिनमें शामिल हैं:

समय और लागत दक्षता: मध्यस्थता के माध्यम से विवादों का समाधान पारंपरिक मुकदमेबाजी की तुलना में अक्सर तेज और

अधिक लागत प्रभावी होता है।

रिश्तों का संरक्षण: मध्यस्थता सहयोगात्मक समस्या-समाधान पर केंद्रित है, जो पार्टियों के बीच संबंधों को संरक्षित करने में मदद कर सकता है।

लचीलापन: अधिनियम मध्यस्थ को सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908, या भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 के प्रावधानों से बाध्य नहीं करता है। अदालती फैसलों की तुलना में पार्टियों का प्रक्रिया और परिणाम पर अधिक नियंत्रण होता है। वे अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं और हितों को पूरा करने के लिए चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग ले सकते हैं, तत्पश्चात समाधान प्रस्तावित कर सकते हैं और समझौते तैयार कर सकते हैं। अदालती फैसलों में अक्सर इस लचीलेपन की कमी होती है।

गोपनीयता: भारत में मध्यस्थता की कार्यवाही आमतौर पर गोपनीय होती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि मध्यस्थता के दौरान साझा की गई चर्चा, प्रस्ताव और दस्तावेजों का बाद की कानूनी कार्यवाही में खुलासा नहीं किया जाता है। यह गोपनीयता खुले संप्रेषण को बढ़ावा देती है और पार्टियों को सार्वजनिक जांच के डर के बिना रचनात्मक समाधान तलाशने के लिए प्रोत्साहित करती है।

विशिष्ट मध्यस्थ: भारत में विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षित और अनुभवी मध्यस्थताओं की संख्या में वृद्धि देखी गई है। ये मध्यस्थ वाणिज्यिक, पारिवारिक, श्रम और सामुदायिक विवादों जैसे क्षेत्रों में प्रभावी संचार और विवादों के समाधान की सुविधा के लिए विशेष ज्ञान और कौशल लाते हैं।

अधिनियम ने सामुदायिक मध्यस्थता की अवधारणा पेश की है जिसके तहत किसी भी इलाके के निवासियों के बीच शांति, सद्भाव और विवाद के पक्षों की पूर्व आपसी सहमति से शांति को प्रभावित करने वाले किसी भी विवाद को मध्यस्थता के माध्यम से सुलझाया जा सकता है।

मध्यस्थता अधिनियम विवादित पक्षों के बीच आर्थिक, सांस्कृतिक, और कानूनी बाधाओं को दूर करने के लिए एक प्रगतिशील कदम है, जो उन्हें विवादों को त्वरित, स्वैच्छिक और प्रभावी तरीके से हल करने के लिए प्रोत्साहित करता है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने कहा था 'मुकदमेबाजी को हतोत्साहित करें। जब भी संभव हो अपने पड़ोसियों को समझौता करने के लिए मनाएं। उन्हें बताएं कि कैसे नाममात्र का विजेता अक्सर वास्तविक में फीस, खर्चे और समय की बर्बादी में हारा हुआ होता है। एक शांतिदूत के रूप में वकील के पास एक अच्छा इंसान बनने का बेहतर अवसर है।' ❐

परिहास

भिखारी– भाई एक रुपया दे दो, तीन दिन से भूखा हूं।
राहगीर– तीन दिन से भूखा है तो एक रुपए का क्या करेगा?
भिखारी– वजन देखना है कि कितना घटा!

बॉस ने मीटिंग में चुटकुला सुनाया,
बॉस के चुटकुले पर पूरी टीम हंसने लगी, लेकिन पप्पू नहीं हंसा।
बॉस– तुम्हें मेरा चुटकुला समझ में नहीं आया क्या?
पप्पू– नहीं सर, मेरा दूसरी कंपनी में सेलेक्शन हो गया है।

डॉक्टर– कैसे हो? शराब पीना बंद किया या नहीं?
मरीज– जी डॉक्टर साहब, बिल्कुल छोड़ दिया है, बस कोई ज्यादा रिक्वेस्ट करता है तो पी लेता हूं।
डॉक्टर– बहुत बढ़िया... और यह तुम्हारे साथ कौन भाई साहब हैं?
मरीज– जी इनको रिक्वेस्ट करने के लिए रखा हुआ है।

टीचर– संस्कृत भाषा में पत्नी को क्या कहते हैं?
पप्पू– गुरुजी... संस्कृत तो छोड़िए, किसी भी भाषा में पत्नी को कुछ नहीं कह सकते...

एक कंजूस को बिजली का करंट लग गया।
बीवी– आप ठीक तो है ना?
कंजूस– फालतू की बात छोड़ मीटर देखकर बता यूनिट कितना बढ़ा।

–साभार

ग्लोबल वार्मिंग

ब्रज किशोर सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (विद्युत)
डिजाइन (ई एंड एम) विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

ग्लोबल वार्मिंग के कारण प्रभाव व समाधान : ग्लोबल वार्मिंग आज के परिवेश में बहुत ही सामान्य सा और बार-बार सुनने वाला शब्द लगता है, लेकिन यह सिर्फ शब्द नहीं बल्कि पूरी धरती के लिए अति महत्वपूर्ण विषय है। इस विषय पर बोलना और परिचर्चा सब करना चाहते हैं किंतु इस संबंध में कोई विशेष ध्यान नहीं देना चाहता।

जिस तरह प्राकृतिक आपदा कभी भी, अचानक आती है और जब भी आती है, भारी जन-धन की हानि देकर जाती है। जैसे– सुनामी, भूकंप, अतिवृष्टि, भीषण गर्मी आदि। उसी तरह यह ग्लोबल वार्मिंग भी गंभीर विषय है जिस पर पृथ्वी के सभी सजीव प्राणियों का जीवन भी आधारित हो सकता है।

आज हम ग्लोबल वार्मिंग की समस्या देख तो रहे है परंतु उसे निरंतर नजरअंदाज करते आ रहे हैं। इसमें कोई दो राय नहीं हैं कि आगामी कुछ वर्षो मे ग्लोबल वार्मिंग का असर और भी अधिक व प्रत्यक्ष रूप से दिखने लगेगा।

ग्लोबल वार्मिंग क्या है?

ग्लोबल वार्मिंग को सामान्य भाषा मे, भूमंडलीय तापमान में वृद्धि कहा जाता है। माना जाता है कि पृथ्वी पर ऑक्सीजन की मात्रा ज्यादा होनी चाहिए परंतु बढ़ते प्रदूषण के साथ धरती पर कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा बढ़ रही है। जिसके चलते ओजोन पर्त में एक छिद्र हो चुका है। वहीं से पैराबैंगनी किरणें सीधे पृथ्वी पर आती हैं, जिसका असर ग्रीन हाउस पर पड़ रहा है। ग्रीन हाउस के असंतुलन के कारण ही ग्लोबल वार्मिंग हो रही है। अत्यधिक गर्मी बढ़ने लगी है, परिणामस्वरूप उत्तरी ध्रुव और अंटार्कटिका में बर्फ पिघल रही है। बर्फ पिघलने के साथ जल स्तर में बढ़ोत्तरी हो रही है। रेगिस्तान में बढ़ती गर्मी के साथ रेगिस्तान यानि मरूभूमि का क्षेत्रफल बढ़ रहा है।

ग्रीन हाउस क्या है?

यह पृथ्वी के वातावरण में मौजूद सभी प्रकार की गैसों से बना एक ऐसा आवरण है जो पृथ्वी पर सुरक्षा परत की तरह काम करता है। इसके असंतुलित होते ही ग्लोबल वार्मिंग जैसी भीषण समस्या सामने आती है।

ग्लोबल वार्मिंग क्यों हो रही है?

ग्लोबल वार्मिंग का सबसे बड़ा कारण प्रदूषण है। आज के समय में यह हर जगह और हर क्षेत्र में बढ़ रहा है, जिससे कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा बढ़ रही है।

आधुनिकीकरण के कारण, पेड़ो की कटाई, शहरीकरण में बढ़ोत्तरी, बिल्डिंग, कारखाना, कंक्रीट के जंगलों का निर्माण कर खुली और ताजी हवा या आक्सीजन के स्रोत कम अथवा खत्म किए जा रहे हैं। अपनी सुविधा के लिए नदियों के प्रवाह की दिशा बदली जा रही है जिससे उस नदी का प्रवाह कम होते-होते, कुछ समय में वह नदी स्वतः ही लुप्त हो जाती है।

उपर्युक्त के अतिरिक्त और भी कई कारण हैं। जिससे विश्व में तापमान बढ़ रहा है। पृथ्वी पर हर चीज़ का एक चक्र चलता है। हर चीज़ एक दूसरे से, कही न कही, किसी न किसी रूप में जुडी रहती है। एक चीज़ के हिलते ही पृथ्वी का पूरा चक्र हिल जाता है।

जिसके कारण भारी हानि का सामना करना पड़ता है।

ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव

ग्लोबल वार्मिंग भी प्राकृतिक आपदा के समान ही एक ऐसी आपदा है जिसका प्रभाव धीरे-धीरे किंतु बहुत गहरा होता है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है कि दूसरी आपदाओं की भरपाई तो वर्षों के दौरान हो सकती है लेकिन ग्लोबल वार्मिंग से हो रहे नुकसान की भरपाई मनुष्य अपनी अंतिम सांस तक नहीं कर सकता। जैसे–

- ग्लोबल वार्मिंग के कारण कई पशु-पक्षी व जीव-जंतुओं की प्रजाति विलुप्त हो चुकी है।
- जिन क्षेत्रों में बारह महीनों बर्फ की चादर ढकी रहती थी, वहां बर्फ पिघलने लगी है जिससे जल स्तर में वृद्धि होने लगी है।
- भीषण गर्मी के कारण रेगिस्तान का विस्तार होने लगा है। जिससे आने वाले वर्षों में और अधिक गर्मी बढ़ने की संभावना है।
- पृथ्वी पर मौसम के असंतुलन के कारण, बेमौसम बारिश, सूखा, बाढ़, अत्यधिक गर्मी अथवा ठंड पड़ने लगी है। इस असंतुलन का सबसे अधिक असर कृषि फसलों पर पड़ रहा है। परिणामस्वरूप खाद्य पदार्थों की सामग्री की दरें बढ़ रही हैं।
- ग्लोबल वार्मिंग से पर्यावरण पर पड़े प्रभाव की वजह से लगभग हर व्यक्ति किसी न किसी बीमारी से ग्रस्त है। शुद्ध आक्सीजन न मिलने के कारण व्यक्ति घुटन की जिंदगी जीने लगा है।

ग्लोबल वार्मिंग के निराकरण

- ग्लोबल वार्मिंग के लिए आवश्यक नारा है, "पर्यावरण बचाओ, पृथ्वी बचेगी।" प्रत्येक व्यक्ति इसे अपना दायित्व मानते हुए यदि अपने जीवन में छोटे-छोटे बदलाव करे तो इस समस्या को सुलझाया जा सकता है।
- मौसम के अनुसार, अधिक से अधिक पेड़ लगाएं। ग्लोबल वार्मिंग को दूर करने में पेड़ ही सबसे बड़ा हथियार हैं।
- किसी भी प्रकार की यात्रा के लिए निजी कार/ दुपहिया के स्थान पर सार्वजनिक परिवहन व साधनों का उपयोग करें।
- बिजली से चलने वाले साधनों की अपेक्षा, सौर ऊर्जा अथवा नवीकरणीय ऊर्जा वाले साधनों का उपयोग करें।
- जल का सदुपयोग करें। प्राचीन व प्राकृतिक जल संसाधनों का नवीनीकरण किया जाए।
- आधुनिक चीजों के उपयोग को कम कर घरेलू व देशी चीजों का उपयोग अधिक करें। ❐

लघु कथा

दान से पुण्य

एक लकड़हारा था। वह जंगल से लकड़ियां काटकर और गांव के बाजार में बेचकर सिर्फ इतना ही कमा पाता था कि थोड़े-बहुत खाने की व्यवस्था कर सके। उसका जीवन बहुत परेशानियों से चल रहा था।

एक दिन लकड़हारे के गांव में एक विद्वान संत पहुंचे। संत के दर्शन करने और उनके प्रवचन सुनने के लिए लोग दूर-दूर से गांव पहुंच रहे थे। गरीब लकड़हारा भी संत से मिलने पहुंच गया। मौका मिलते ही लकड़हारे ने अपनी परेशानियां संत को बता दीं। उसने संत से कहा कि आप भगवान से पूछिए कि मेरे जीवन में इतनी परेशानियां क्यों हैं? संत ने उससे कहा कि ठीक है भगवान से प्रार्थना करूंगा।

कुछ दिन बाद लकड़हारा संत के पास फिर से पहुंचा। संत ने उससे कहा कि भाई तुम्हारी किस्मत में सिर्फ पांच बोरी अनाज ही है। इसीलिए भगवान तुम्हें थोड़ा-थोड़ा अन्न दे रहा है, ताकि तुम्हें जीवनभर खाना मिलता रहे। संत की बात सुनकर लकड़हारा अपने घर लौट आया। कुछ दिन बाद वह फिर से संत के पास पहुंचा और बोला कि गुरुजी आप भगवान से कहो कि मुझे मेरी किस्मत का सारा अनाज एक साथ दे दे। कम से कम एक दिन मैं भरपेट भोजन करना चाहता हूँ। संत ने कहा कि ठीक है मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करूंगा।

अगले दिन गरीब लकड़हारे के घर पांच बोरी अनाज पहुंच गई। उसने सोचा कि संत ने मेरे लिए प्रार्थना की है, इसीलिए भगवान ने मुझे इतना अनाज दे दिया है। उसने बहुत सारा खाना बनाया, खुद खाया और बाकी गांव के गरीब लोगों को बांट दिया। सभी ने उसे दुआएं दीं। अगले दिन उसके घर फिर से पांच बोरी अनाज आ गया। उसने फिर ऐसा ही किया, खुद खाया और दूसरों को भी खिलाया।

काफी दिनों तक ऐसा ही चलता रहा। फिर एक दिन वह संत के पास पहुंचा और पूरी बात बता दी। संत ने उससे कहा कि भाई तुमने अपनी किस्मत का अनाज दूसरों को खिला दिया तो तुम्हारे इस नेक काम से भगवान बहुत प्रसन्न हैं। इसीलिए वे तुम्हें अन्य जरूरतमंद लोगों की किस्मत का अनाज भी दे रहे हैं ताकि तुम उन्हें भरपेट भोजन करा सको।

संत की बात गरीब व्यक्ति को समझ आ गई। इसके बाद उसने दूसरों को खाना खिलाने का सिलसिला जारी रखा।

सीख– जो लोग दूसरों के दुख दूर करने के बारे में सोचते हैं, उनकी मदद भगवान भी करते हैं। दान करने से हमारा जीवन भी बदल सकता है।

एक नया जीवन

बहुत दिनों के बाद
शायद दशकों बाद
मैंने आज देखा प्रकृति को
भगवान की अनुपम कृति को
वाह! वाह! वाह!

सो न सका था, रात भर
पसीने से तर-ब-तर
मेहरारू की खटपट
पास होने के लिए बच्चों का टेंशन
ऐसे में नींद भी इंतजार कराती रही
सारी रात .... हां सारी रात
पर रूठी महबूबा की तरह
नहीं आई सारी रात.... हां सारी रात

कल तो सोमवार है
फाइलों की भरमार है
दफ्तर में उपर से नए-नए कानून
नाक में दम कर रखा है
जीना हराम है बाबूओं का
बस चले तो वालंटरी ले लूं
लेकिन सुगनी की शादी, संतोष की पढ़ाई
पत्नी की फरमाईश
और सबसे बढ़कर..... सिटी में रहने की ख़्वाहिश

पर इसमें है क्या जिंदगी?

जैसे बटन दबाया..... रोबोट शुरू
विचारों के रेलमपेल में
भौतिकता के मकड़जाल में
भरभराती सीढ़ियों की तरह
गिरता-पड़ता-कराहता...... आदमी आज
क्या रह गया है आदमी?
गिराकर, रौंदकर
कुचल कर आगे बढ़ने की चाह
आगे बंद पड़ी राह
फिर क्या करें
आखिर टेंशन तो होगी न?

तभी गोरैया चहचहायी
कौवे की काँव-काँव
मैना की चूं-चूं ने खींचा मुझे
एक बार फिर प्रकृति की ओर
इन तिलस्मी विचारों को छोड़
मैंने देखा... चोंच में चोंच सटाए मैना को
पंख खुजलाती गोरैया को
चोंच साफ करते कौवे को
इधर-उधर कूदकती-फूदकती तमाम चिड़ियों को
रंग-बिरंगे नवजात फूलों को
उनसे लिपटती-चिपटती मनभावन तितलियों को

मैं खोने ही वाला था

प्रकृति का होने ही वाला था
तभी बाथरूम के नल से
टपकते पाने की आवाज सुनी मैंने
टीप! टीप! टप! टप!........
क्या लय? क्या ताल?
मानो एक सुखद संगीत
ना जाने क्यों आज गुस्सा नहीं आया
और दिनों की तरह बालकनी में बैठे-बैठे
लगा जैसे कि मैंने पा लिया हो
नया जीवन
प्रकृति के इन साथियों के साथ
जो खो गया था दशकों पहले
भविष्य के सुनहरे सपनों में
कुछ बनना है...

बड़ा! बहुत बड़ा!
और उसे पूरा करते-करते
क्या-क्या खोया आज चला मुझे पता
प्रकृति के सानिध्य में आकर जैसे पा लिया हो
एक नया जीवन!
हल्का! बहुत हल्का!
लगा चहचहाते पक्षियों के साथ
हो रहा है बेताब उड़ने को
सारे बंधन से मुक्त हो
मेरा यह नया जीवन!

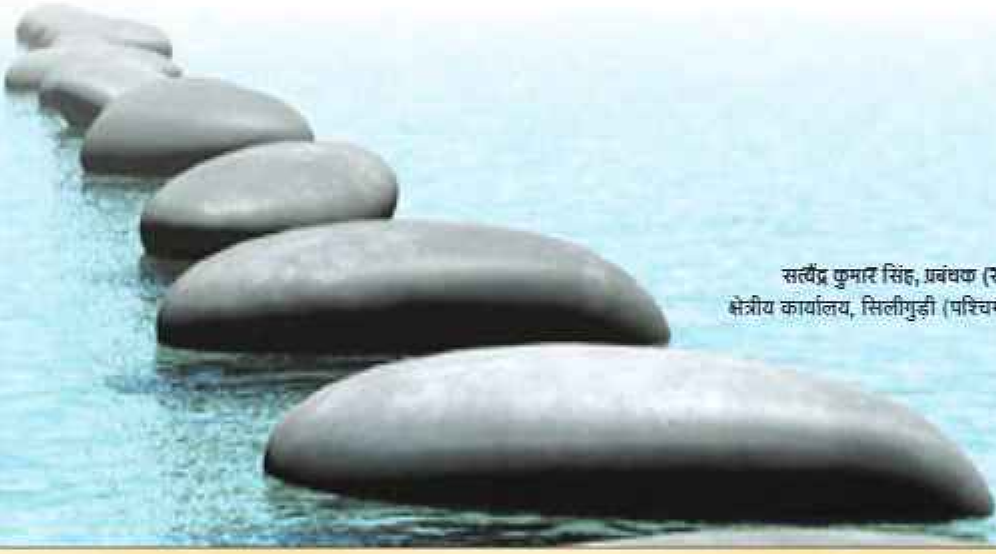

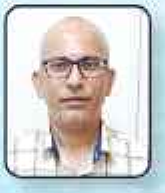

सत्येंद्र कुमार सिंह, प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, सिलीगुड़ी (पश्चिम बंगाल)

भ्रष्टाचार का काला सूरज

शोषण गरीबी भूखमरी का फैला काला साया है,
भ्रष्टाचार का काला सूरज आसमान पर छाया है।

लालच से अंधा हो बैठा कुर्सी का पाकर अधिकार,
मानवीयता शून्य बना वह करता रहता भ्रष्टाचार।
मजबूर बना कर शोषण करता, कुर्सी का वह पहरेदार,
भूखो का भोजन खा बैठा, भ्रष्ट हुआ वह कोटेदार।
सुरसा के चौड़े मुख से भला कहां कोई बच पाया है,
भ्रष्टाचार का काला सूरज आसमान पर छाया है।

मांगों का सिन्दूर दब गया फाइलों के अंबार में,
विधवाओं का पेंशन खा लिया काले भ्रष्टाचार ने।
खुद को जिंदा साबित करते-करते मर गए बूढ़े बाबा,
कोर्ट कचहरी फिर भी न माने कागज के दरकार में।
मंत्री से लेकर संतरी ने, मिल ये जाल फैलाया है,
भ्रष्टाचार का काला सूरज आसमान पर छाया है।

शहर गांव की सड़क खा गया काले दिल का ठेकेदार,
अस्पताल की दवा खा गया रोती रही प्रजा बीमार।
मंहगाई की चोट दी उसने फैला कर काला बाजार,
रेलगाड़ी का टिकट खा गया दलालों का वह मक्कार।
अर्दली, बाबू, चपरासी, साहब ने गंध मचाया है,
भ्रष्टाचार का काला सूरज आसमान पर छाया है।

विकट समस्या बन बैठी है मचा हुआ है हाहाकार,
दीमक सा खोखला कर दिया, शासन तंत्र हुआ लाचार।
रामराज कैसे लाएंगे, कैसे मिले सबका अधिकार,
कहो करूं क्या जतन कि जड़ से मिट जाए यह भ्रष्टाचार।
भारत के नव निर्माण का उचित समय अब आया है,
भ्रष्टाचार का काला सूरज आसमान पर छाया है।

सुन लो माता, सुन लो बहनों, तुम्ही बनो अब चौकीदार,
तुम्हें ही बनना होगा अब इस साफ सफाई का आधार।
अपने घर से बाहर फेंको कचरे के संग भ्रष्टाचार,
घर में नैतिकता की शिक्षा देकर स्वप्न करो साकार।
आज प्रतिज्ञा ले लो मिल सब यही उपाय सुझाया है,
भ्रष्टाचार का काला सूरज आसमान पर छाया है।।

अरुण कुमार, प्रबंधक (सिविल)
आर्बिट्रेशन सेल, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

ईमानदार का परिचय

सतर्क जागरूक जीवन शैली, छवि उसकी न हो सकती मैली,
घर दफ्तर में साख है उसकी, संस्कारों में जान है उसकी।

मात-पिता के स्वास्थ्य का ध्यान, सुनिश्चित करे पत्नी का सम्मान,
बच्चों को दे संस्कार महान, पाता है सबसे सम्मान।

कर्तव्य निभाता घर बाहर के
जीवन की गुणवत्ता दमके,
आकर्षित करता उसका स्वभाव,
उसका सब पर पड़े प्रभाव।

सभी भरोसा कर लें उस पर
समाज की नींव उसी के दम पर,
दृष्टिकोण में है नैतिकता
साथ मिल जाता उसको सबका।

अच्छी सच्ची विकसित नियत,
प्रभाव डालती उसकी शख्सियत,
झूठ फरेब से दूर है कोसों,
समयनिष्ठ है सत्यनिष्ठ वो।

महत्व जानता सच्चाई की,
ईमानदारी है आदत उसकी,
समाज में वो सम्मान है पाता
औरों में भी साहस जगाता।

छोटे छोटे कार्य वो करता,
मिसाल विशाल बनाता,
अपनी आदत व्यवहार से,
प्रेरणा सब में जगाता।

बेहतर निर्णय, न्याय वो करता,
सक्षम वो न किसी से डरता,
राष्ट्र के प्रति कर्तव्य निभाता,
प्रेरित कर विश्वास जगाता ।

लालच आलस्य से कोसों दूर,
सकारात्मकता जीवन में भरपूर,
कठिन काम उसका हो जाता,
परिवार में आदर पाता ।

पारदर्शिता का रखता वो ध्यान,
चाहे जो हो जाए परिणाम,
जिम्मेदारी से करता काम,
योग्यता पर न करता अभिमान।

ऐसा व्यक्तित्व जो बन जाए,
ईमानदार व्यक्ति वो कहलाए,
सदाचार तुम भी अपनाओ,
ईमानदार स्वतः कहलाओ।

(अंकिता अग्रवाल, उप प्रबंधक (वित्त)
दुलहस्ती पावर स्टेशन, किश्तवाड़ (जम्मू व कश्मीर)

स्थायी स्तंभ

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन

पुरुषोत्तम दास टंडन का हिंदी भाषा की प्रगति और विकास में उनका अप्रतिम योगदान है। हिंदी को भारत की राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करवाने में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान था।

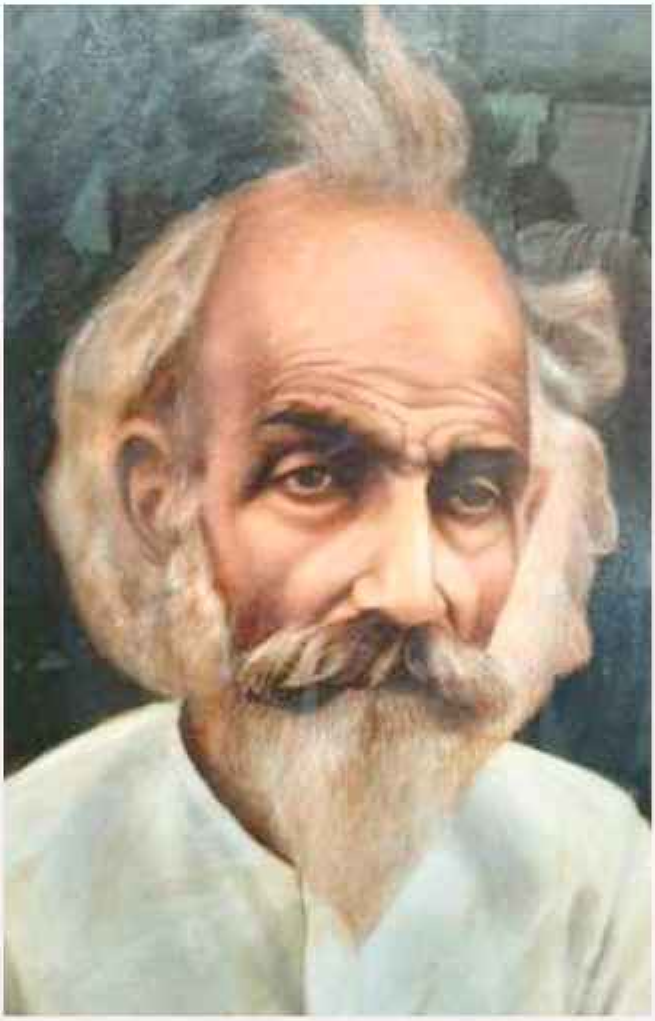

उनका जन्म 1 अगस्त, 1882 को इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) के मीरगंज मुहल्ले में एक सम्पन्न खत्री परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री शालिग राम टंडन था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय सिटी एंग्लो वर्नाक्यूलर विद्यालय में हुई। आगे की पढ़ाई के लिए उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के म्योर सेण्ट्रल कॉलेज में प्रवेश लिया किंतु अपने क्रांतिकारी कार्यकलापों के कारण उन्हें 1901 में वहाँ से निष्कासित कर दिया गया। कई कठिनाइयों को पार करते हुए उन्होंने 1904 में बी.ए. किया, उसके बाद सन 1906 में एल.एल.बी की उपाधि प्राप्त करने के बाद वकालत प्रारंभ की। पढ़ाई जारी रखते हुए उन्होंने इतिहास में स्नात्कोत्तर उपाधि भी प्राप्त की।

वर्ष 1905 में उन्होंने बंगभंग आन्दोलन से प्रभावित होकर स्वदेशी का व्रत धारण किया, विदेशी वस्तुओं का पूर्ण बहिष्कार कर दिया। वर्ष 1910 में प्रयाग हिंदी साहित्य सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष मालवीय जी ने टंडन जी को सम्मेलन का महामंत्री नियुक्त किया। टंडन जी ने वर्ष 1908 में जब वकालत शुरू की तब ही वे 'अभ्युदय' का सम्पादन करने लगे थे। पं. बालकृष्ण भट्ट ने अनुरोध पर 'प्रदीप' में लिखने लगे थे तथा अपनी रोचक और ओजस्वी लेखनी से सबको प्रभावित किया। यही समय था जब उनकी प्रसिद्ध रचना "बन्दर सभा महाकाव्य" प्रकाशित हुई। टंडन जी ने ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज में हिंदी के लेक्चरर के रूप में कार्य किया उस समय अटल बिहारी वाजपेई विक्टोरिया कॉलेज के छात्र हुआ करते थे।

राजर्षि में बाल्यकाल से ही हिंदी के प्रति अनुराग था। इस प्रेम को बालकृष्ण भट्ट और मदन मोहन मालवीय जी ने प्रौढ़ता प्रदान करने की। टंडन जी ने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी विद्यापीठ, प्रयाग की स्थापना की। इस पीठ की स्थापना का उद्देश्य हिंदी शिक्षा का प्रसार और अंग्रेजी के वर्चस्व को समाप्त करना था। पीठ हिंदी की अनेक परीक्षाएं कराती थी। इस पीठ से दक्षिण में भी हिंदी का प्रचार-प्रसार हुआ। पीठ के इस कार्य का प्रभाव महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में भी पड़ा, अनेक महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में हिंदी के पाठ्यक्रम को मान्यता मिली। वे जानते थे कि सम्पूर्ण भारत में हिंदी के प्रसार के लिए अहिंदी भाषियों का सहयोग अपेक्षित है।

वे हिंदी को देश की आजादी के पहले आजादी प्राप्त करने का साधन मानते रहे और आजादी मिलने के बाद आजादी को बनाए रखने का। टंडन जी का राजनीति में प्रवेश हिंदी प्रेम के कारण ही हुआ। 19 फरवरी 1951 को मुजफ्फरनगर 'सुहृद संघ' के 17वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर उन्होंने अपने भाषण में इस बात को स्वीकार भी किया था। उनके ही आत्मबल के परिणामस्वरूप साहित्य सम्मेलन की विशाल इमारत खड़ी हुई थी और उनकी ही चेष्टाओं से हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकृति मिली।

स्वतंत्रता के बाद देश की संविधान सभा बनी। टंडन जी उसके सदस्य चुने गए । संविधान सभा में, टंडन जी के भाषण एवं हिंदी के पक्ष में प्रस्तुत अकाट्य दलीलों से प्रभावित हो पूरे सदन ने एक स्वर से हिंदी को राजभाषा बनाना स्वीकार किया। जब संविधान सभा में राजभाषा संबंधी प्रश्न उठाया गया तो उस समय एक विचित्र स्थिति थी। महात्मा गाँधी तो हिन्दुस्तानी के समर्थक थे ही, पंडित नेहरू और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद तथा अन्य अनेक नेता भी हिन्दुस्तानी के पक्षधर थे, पर टंडन जी हारे नहीं, झुके नहीं। परिणामतः विजय भी उनकी हुई। 11 से 14 दिसंबर, 1949 को गरमागरम बहस के बाद हिंदी और हिन्दुस्तानी को लेकर कांग्रेस में मतदान हुआ, हिंदी को 62 और हिन्दुस्तानी को 32 मत मिले। अन्ततः हिंदी राजभाषा और देवनागरी राजलिपि घोषित हुई। हिंदी को राष्ट्रभाषा और 'वन्देमातरम्' को राष्ट्रगीत स्वीकृत कराने के लिए टंडन जी ने अपने सहयोगियों के साथ एक और अभियान चलाया था। उन्होंने करोड़ों लोगों के हस्ताक्षर और समर्थन पत्र भी एकत्र किए थे। यहां यह उल्लेख कर देना भी प्रासंगिक है कि टंडन जी ने नागरी अंकों को संविधान में मान्यता दिलाने के लिए भरसक कोशिश की थी।

पुरुषोत्तम दास टंडन अत्यंत मेधावी और बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। पुरुषोत्तमदास टंडन के बहु आयामी और प्रतिभाशाली व्यक्तित्व को देखकर उन्हें 'राजर्षि' की उपाधि से विभूषित किया गया। उनका कार्यक्षेत्र मुख्यतः तीन भागों में बंटा हुआ है- स्वतंत्रता संग्राम, साहित्य और समाज। टंडन जी एक उच्चकोटि के रचनाकार थे। उनकी रचनाओं में तत्कालीन इतिहास की खोज की जा सकती है। साहित्यकार के रूप में टंडन जी निबंधकार, कवि और पत्रकार के रूप में दिखलाई पड़ते हैं।

रचनाएं

काव्य रचनाओं में 'बन्दर सभा महाकाव्य', 'कुटीर का पुष्प' और 'स्वतंत्रता' अपना ऐतिहासिक महत्व रखती हैं। इन कविताओं में राष्ट्रीयता और देशभक्ति की प्रमुखता है। 'बन्दर सभा महाकाव्य' में आल्हा शैली में अंग्रेजों की नीतियों का भंडाफोड़ किया है।

उनके निबंध हिंदी भाषा और साहित्य, धर्म और संस्कृति तथा अन्य विविध क्षेत्रों से सम्बंधित हैं।

- भाषा और साहित्य संबंधी निबंधों में- कविता, दर्शन और साहित्य, हिंदी राष्ट्रभाषा क्यों, मातृभाषा की महत्ता, भाषा का सवाल, गौरवशाली हिंदी, हिंदी की शक्ति, कवि और दार्शनिक आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।
- धर्म और संस्कृति संबंधी निबंधों में- भारतीय संस्कृति और कुम्भ मेला, भारतीय संस्कृति संदेश, तथा
- अन्य निबंधों में लोक कल्याणकारी राज्य, धन और उसका उपयोग, स्वामी विवेकानन्द और सरदार वल्लभ भाई पटेल आदि अति महत्वपूर्ण हैं।

सम्मान

1961 में उन्हें भारतवर्ष का सर्वोच्च राजकीय सम्मान भारत रत्न प्रदान किया गया। उनकी स्मृति को अक्षुण बनाए रखने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने उनके नाम पर उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की है। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ उनकी स्मृति में चार लाख रुपए का 'राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन सम्मान' प्रदान करता है।

1 जुलाई 1962 को 80 वर्ष की आयु में वे पंचतत्व में विलीन हुए।

हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय-हृदय से बातचीत करता है और हिंदी हृदय की भाषा है।

-महात्मा गांधी

कानून का सम्मान किया जाना चाहिए ताकि हमारे लोकतंत्र की बुनियादी संरचना बरकरार रहे और हमारा लोकतंत्र भी मजबूत बने।

-लाल बहादुर शास्त्री

भाषा का महत्व

मनोज गुप्ता, वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक
ईएमएस विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

दिल्ली से कोलकता पोस्टिंग के उपरांत लगभग पिछले पांच वर्षो से हम कोलकता की भव्य दुर्गा पूजा का आनंद लेते रहे थे। इस बार पत्नी सुप्रिया जी व दोनों बच्चों के विशेष आग्रह पर नवरात्रों के दौरान दक्षिण भारत दर्शन की प्रबल इच्छा ने मुझे भी कार्यालय से छुट्टी लेने को विवश कर दिया। प्लान के अनुसार लगभग एक माह पहले हमने त्रिवेन्द्रम के लिए ट्रेन में बुकिंग करा ली। दक्षिण भारत की सुखद यात्रा की कल्पना व इन सब के बीच सुप्रिया जी के बड़े भाई साहब की तरफ से त्रिवेन्द्रम आने का निमंत्रण, जो हमें निरंतर प्राप्त हो रहा था। दरअसल, उन्हीं दिनों भाई साहब के विदेश में कार्यरत पुत्र को भी भारत आना था। दशहरे के दिन, उनके पुत्रों में से एक पुत्र की सगाई त्रिवेन्द्रम में ही होनी थी। सुप्रिया जी एवं बच्चे बेहद खुश थे, घूमने के साथ-साथ अपने सभी नजदीकी रिश्तेदारों से भी मिलने का विशेष मौका था। अभी जाने में एक महिना शेष था। रोज रात को कार्यालय से आने के बाद हम सभी की बैठक होती थी। श्रीमती जी व बच्चों के अनुसार दक्षिण स्वर्ग की सूची में कुमारकम-बैक वाटर्स, मुन्नार, वाटर पार्क, केवलम बीच, कन्याकुमारी, पौन मुडी विक्रम सारा भाई अंतरिक्ष केंद्र और न जाने कौन-कौन से स्थान समाहित थे। मैं इनकी खुशी से खुश था।

इस तरह समय निकलता गया महिने बाद निश्चित तिथि पर हमने हावड़ा से ट्रेन पकड़ी, पूरे दो दिनों की लंबी यात्रा के चरण में अब तक ट्रेन विभिन्न स्टेशनों से होती हुई लगभग डेढ़ दिन की यात्रा तय कर चुकी थी। बाहर का अद्भुत नजारा नजर आने लगा था, दोनों तरफ काजू एवं नारियल के पेड़ एवं हरियाली ही हरियाली-आंखो को इन नजारों को देख विश्वास ही नही हो रहा था। हम केरल में प्रवेश कर चुके थे। ट्रेन में बैठे-बैठे दोनों बच्चें अब परेशान से होने लगे थे साथ ही यात्रा की थकावट उन पर साफ दिख रही थी। हमारे सामने की सीट पर एक दक्षिण भारतीय पिता व 5 वर्षीय पुत्र हमारे साथ त्रिवेन्द्रम तक सहयात्री थे। बच्चें हम उम्र थे परंतु थोड़े बहुत औपचारिकता के बाद हमें समझ में आया कि उनकी भाषा कन्नड़ थी और हम हिंदी भाषी, अतः एक दूसरे की भाषा से अनभिज्ञता के कारण आपस में बेफिक्र होना तो दूर थोड़ी बहुत भी बातचीत नही हो पा रही थी। सफर कटता जा रहा था। इसी दौरान ट्रेन एक छोटे से स्टेशन पर रुकी वह बच्चा बार-बार अपनी भाषा में अपने पापा से किसी बात की जिद्द करता हुआ उनकी उंगली पकड़ कर बाहर की ओर खीचने की कोशिश कर रहा था। मुझे ऐसा लगा पिता बच्चे को लगातार कुछ समझाने की कोशिश कर रहा था। अंत्योगत्वा बच्चे के जिद्द के आगे उन्हें झुकना पड़ा वे जल्दी-जल्दी उठ कर बच्चे के साथ बाहर की तरफ बढ़े। इस बीच हम आपस में बातों में मशगुल हो गए। हमें उन सज्जन की अनुपस्थिति का ख्याल ही नही रहा। तभी कुछ मिनटों बाद वह बच्चा दौड़ते हुए हमारे पास आया व अपने शब्दों में बेहद घबराया सा कुछ बतलाने की कोशिश करता रहा।

भाषा भिन्नता के कारण हमें कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वो कहना क्या चाह रहा है। परंतु इतना जरुर आभास हुआ कि कुछ गलत हुआ है, मैं तत्परता से उठा वह मेरी उंगली पकड़ कर बाहर की ओर ले जाने लगा। दरवाजे की ओर इशारा करते हुए कुछ बोलता रहा। मुझे उसके पूरे संवाद में सिर्फ दो शब्द पापा व चिप्स ही समझ में आए। मुझे समझते देर न लगी, बच्चे के पिता चिप्स लेने स्टेशन पर उतरे होंगे और ट्रेन चल पड़ी होगी। छोटे स्टेशन के कारण ट्रेन वहां कम समय रुकी थी और जब तक वो वापस आते ट्रेन रफ्तार पकड़ चुकी होगी। यह स्थिति जबतक हमारी समझ में आती गाड़ी स्टेशन से काफी आगे निकल चुकी थी। वह बच्चा लगातार रोए जा रहा था। मेरे प्यार-दुलार, ढाढ़स की भाषा उसके

समझ से परे थी। वह बच्चा हिंदी से बिल्कुल अनभिज्ञ था और हम उसकी भाषा से। सफर के दौरान उसके पिता से थोड़ी बहुत अंग्रेजी में बातें की हुई थी पर वो भी नाममात्र की। खैर मुझे इतना तो समझ में आ ही गया था कि सिवाय इस समय इंतजार के अलावा और कोई चारा नहीं था। बच्चे का रो-रो कर बुरा हाल था। सुप्रिया जी उसे गोद में लिए अपनत्व देने की लगातार कोशिश करती रही थी। मैने उस दिन सोचा-काश इस यात्रा पर आने से पहले दक्षिण भारतीय भाषा का कुछ ज्ञान प्राप्त कर लिया होता। काश, कालेज के दिनों में हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं को भी सीख लिया होता। तभी मेरी तंद्रा टूटी मुझे ध्यान आया वो बच्चा थोड़ी देर पहले मोबाइल से गेम खेल रहा था उसके तुरंत बाद किसी के फोन आने पर वह खुश होकर बातें भी कर रहा था। मैंने चारों तरफ उसकी सीट पर नजर दौड़ाई शायद मोबाइल यहीं कहीं पड़ा हो। ईश्वर की महिमा मोबाइल उस बच्चे की पैंट की जेब में था। मैने मोबाइल लेकर अंतिम डायल नंबर दोहराया। उधर से किसी महिला की आवाज थी। मैंने अंग्रेजी में उनसे पूछा आपकी थोड़ी देर पहले इस नंबर से किससे बातें हुई थी। उस महिला ने बताया उनके पति व बेटा हावड़ा से त्रिवेन्द्रम आ रहे हैं। मैंने उनसे बच्चे का नाम पूछा जिसकी पुष्टि बच्चे से हुई। मैंने अंग्रेजी में ही उन्हें वस्तु स्थिति से अवगत कराया, वो लगभग चीख पड़ी। मैंने ढाढ़स दिया वो निश्चिंत रहें। उन्हें बोगी नंबर वगैरह से अवगत कराया। मैंने कहा आपके पति का भी फोन आएगा, कृपया उन्हे भी बतला देवें कि बच्चा सुरक्षित है। हां, मै आपसे निवेदन जरुर करुंगा आप जब स्टेशन आएं तो अपना आई कार्ड के साथ बच्चे व पिता का फोटो साथ में जरुर लाएं। इसी बीच मोबाइल पर बच्चे के पिता का भी कॉल आया। मैंने अंग्रेजी का सहारा लेते हुए उनसे बातें की, वो बच्चे की सुरक्षा के लिए बेहद घबराए हुए थे। उन्होंने गाड़ी त्रिवेन्द्रम पहुंचने पर पत्नी को बच्चे को सौपने की बात कहीं।

मेरे गन्तव्य स्थान पर पहुंचने के पहले, महिला वहां स्टेशन पर उपस्थित थी। बच्चा उन्हें ट्रेन से देख कर ही खुश हो गया। हमने एहतियात बरतते हुए ट्रेन से नीचे उतरकर फोटो आदि से मिलान कराया और आई कार्ड वगैरह देखकर रेलवे पुलिस की मदद से उन्हें बच्चे को सौंपा और उनसे विदा ली। सुप्रिया जी के बड़े भाई साहब हमें लेने स्टेशन आए थे। हमने भी उनके साथ घर की ओर रुख किया।

मुझे भाषाई ताकत व मोबाइल दोनों की शक्तियों पर इस सफर ने सोचने को मजबूर कर दिया कि काश पूरे भारतवर्ष में किसी भी एक भारतीय भाषा से सभी परिचित होते, तो शायद इस तरह की समस्या से किसी का भी कभी सामना ना होता जैसा कि भाषा की अनभिज्ञता के कारण उस सज्जन व बच्चे के साथ और हमारे साथ हुआ था। ❐

जगत के कुचले हुए पथ पर भला कैसे चलूं मैं?

किसी के निर्देश पर चलना नहीं स्वीकार मुझको,
नहीं है पद चिह्न का आधार भी दरकार मुझको,
ले निराला मार्ग उस पर सींच जल कांटे उगाता,
और उनको रौंदता हर कदम मैं आगे बढ़ाता।

शूल से है प्यार मुझको, फूल पर कैसे चलूं मैं?

बांध बाती में हृदय की आग चुप जलता रहे जो,
और तम से हारकर चुपचाप सिर धुनता रहे जो,
जगत को उस दीप का सीमित निबल जीवन सुहाता,
यह धधकता रूप मेरा विश्व में भय ही जगाता।

प्रलय की ज्वाला लिए हूं, दीप बन कैसे जलूं मैं?

जग दिखाता है मुझे रे राह मंदिर और मठ की,
एक प्रतिमा में जहां विश्वास की हर सांस अटकी,
चाहता हूँ भावना की भेंट मैं कर दूं अभी तो,
सोच लू पाषान में भी प्राण जागेंगे कभी तो,

पर स्वयं भगवान हूँ, इस सत्य को कैसे छलूं मैं?

-हरिशंकर परसाई

रिपोर्ट

निगम मुख्यालय में हिंदी पखवाड़ा -2024 का आयोजन

निगम मुख्यालय में 14 से 29 सितंबर, 2024 तक हिंदी पखवाड़े का भव्य आयोजन किया गया। इस दौरान कार्यालय के वातावरण को 'राजभाषामय' बनाने के लिए विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं और गतिविधियों का आयोजन किया गया।

गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार, हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन 14 सितंबर, 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित हिंदी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान किया गया। इस कार्यक्रम में निदेशक (कार्मिक), कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन), महाप्रबंधक (मानव संसाधन) एवं प्रभारी (राजभाषा) और राजभाषा संवर्ग तथा राजभाषा कार्यान्वयन कार्य से जुड़े अधिकारियों ने भाग लिया।

हिंदी पखवाड़े के अवसर पर निगम के कार्मिकों को हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय की ओर से एक संदेश भी जारी किया गया।

हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत, दिनांक 19.09.2024 को हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन निदेशक (वित्त), निदेशक(कार्मिक) व निदेशक (परियोजनाएं) महोदय के कर-कमलों से किया गया। इस प्रदर्शनी में 06 प्रतिष्ठित प्रकाशकों ने नवीनतम हिंदी पुस्तकों का प्रदर्शन किया। पुस्तक प्रदर्शनी के उपरांत, निगम मुख्यालय में पदस्थ महाप्रबंधकों एवं इससे उच्च स्तर के अधिकारियों के लिए ऑनलाइन राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई।

इसके अतिरिक्त निगम मुख्यालय में पदस्थ सभी स्तर के कार्मिकों के लिए हिंदी नोटिंग ड्राफ्टिंग, हिंदी प्रश्नोत्तरी व अनुवाद, हिंदी सुलेख व श्रुतलेख, कंठस्थ दोहों, चौपाइयों व श्लोकों का वाचन, हिंदी वाद-विवाद व हिंदी काव्य पाठ आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता में कवि दीपक गुप्ता को निर्णायक मंडल के सदस्य के तौर पर आमंत्रित किया गया था।

कार्मिकों के अतिरिक्त परिवार के सदस्यों में भी हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से, 13 सितंबर 2024 को बच्चों एवं महिलाओं के लिए भी हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें महिलाओं और बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

पखवाड़े के अंतर्गत आयोजित 07 हिंदी प्रतियोगिताओं में लगभग 400 प्रतिभागियों ने पूरे उत्साह के साथ प्रतिभागिता की। ❐

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिये आवश्यक है।

– महात्मा गांधी

भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी।

- रवीन्द्रनाथ ठाकुर

हिंदी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है।

- माखनलाल चतुर्वेदी

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

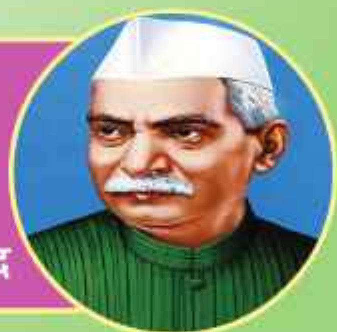

ITU WTSA
NEW DELHI 2024

एन एच पी सी
NHPC
एक नवरत्न कंपनी

स्वहित एवं राष्ट्रहित में ऊर्जा बचाएं / Save Energy for Benefit of Self and Nation
बिजली से संबंधित शिकायतों के लिए 1912 डायल करें / Dial 1912 for Complaints on Electricity
CIN: L40101HR1975GOI032564

हरित ऊर्जा में निहित शक्ति

www.nhpcindia.com @nhpcltd @NHPCIndiaLimited nhpclimited NHPC Limited NHPC Limited

Printed at : Educational Stores, Ghaziabad-201009 (UP)